Digitized by eGangotri

चिन्गारियां

[क्रान्तिकारी कहानियां]

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

डाक्टर सत्यपाल

राजपाल एण्ड सन्ज़
अनारकली — लाहौर

Rajeev

मूल्य दो रुपया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विषय-सूची

सं०	विषय	पृष्ठ
१.	इकलौता बेटा	५
२.	औनरेरी मजिस्ट्रेट	१५
३.	वीर देवी	२७
४.	देशसेवा की भेंट	४०
५.	निरपराधी का खून	६१
६.	मां, क्या हम डाकू हैं ?	७४
७.	खिलाफ़त का बली	८४
८.	नरकेसरी और वीर पत्नी	१०८
९.	अन्धा भिखारी	११६
१०.	वीर आत्मत्यागी	१२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इकलौता बेटा

१

पेशावर नगर में लाला रामचन्द्र एक प्रसिद्ध वकील हैं। अपने पेशे में आपने अच्छा नाम पैदा किया है। बहुत दिनों से वहीं बसते हैं। देश के विषय में तो कम ही अनुराग रखते हैं। पेशावर में इन विषयों में हस्तक्षेप करना कोई सुगम बात नहीं। सरहद्दी क़ानून, आज्ञायें और वहां का बलात्कार तो प्रसिद्ध ही है। इस लिये कोई बड़ा हौसले वाला माई का लाल ही आग में कूदने का साहस कर सकता है। लालाजी तो बस रुपया कमाने के प्रेमी हैं। सारा दिन कचहरी में मग्न और रात को आधी रात तक काग़ज़ात और क़ानूनी पुस्तकों के स्वाध्याय में लीन रहते हैं। उनकी बला से कोई मरे, कोई जिये। उन्हें तो बस काम से काम है। चालीस वर्ष की आयु में आपके घर एक पुत्र सौ सौ मिन्नतों, सौ सौ प्रार्थनाओं के पश्चात् उत्पन्न हुआ। कोई खानकाह नहीं, कोई धर्मशाला नहीं, कोई पीर साधु नहीं कि जिसके सामने उनकी पत्नी ने माथा न रगड़ा हो कि किसी प्रकार सन्तान हो जाय। उपवास, व्रत, नियम बराबर करते। कभी दरिद्रों को खाना खिलाया जा रहा है, कभी सन्त साधुओं के निमन्त्रण में रुपया लुटाया जा रहा है; कभी रमल फेंकने वालों और ज्योतिषियों का घर भरा जा रहा है। मार्ग में जाते हुए फ़क़ीर तक से सन्तान का प्रश्न किया जा रहा है। मनुष्य भी कितना मूढ़ है। मनुष्यों से उन कार्य्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की इच्छा रखता है जिन्हें भगवान् ने अपने हाथ में रखा है। यदि ये पीर या साधु महात्मा, लोगों को पुत्र दे सकते तो फिर भगवान् को कोई क्यों पूछता ? किन्तु आदमी ने पेट के लिये सब ढंग बनाये हैं। कोई कहता है कि मेरी बात में प्रभाव है कि बस कहते ही काम बन जायेगा; कोई कहता है कि मेरे बचन में इतना जादू है कि मेरे मुँह से बात निकली कि लड़का उत्पन्न हो जायेगा। कितनी मूर्खता है कि अपने धर्म का भरोसा नहीं। आन की आन में भस्म का ढेर बन जाने वाला मनुष्य कितना अभिमान प्रकट करता है। अस्तु, ये सब काम होते रहे, परन्तु जब तक भगवान् की इच्छा न हो सब काम व्यर्थ हैं। अन्त में भगवान् को उनकी प्रार्थनाओं पर दया आ गई या यों कहिये कि उनके पुण्य कर्म्मों का प्रभाव हुआ कि उनके घर पुत्र उत्पन्न हो गया। बहुत खुशियां मनाई गईं, रंगरलियां उड़ाई गईं, निमन्त्रण और प्रीतिभोजनों का कोई हिसाब न रहा। वही लाला रामचन्द्र जो जातीय काम के लिये दो चार पैसे देने के इच्छुक न थे इस समय हज़ारों को बड़ी उदारता से ख़र्च कर रहे हैं। बहुतों का घर भर दिया। खूब शान शौकत से यह खुशी मनाई गई।

२

बच्चे की शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया गया। लड़का बड़ा होनहार था, इस लिये विद्या-उपार्जन में ध्यान देता रहा और सब प्रकार से उन्नति करता गया। एन्ट्रेंस फर्स्ट डिवीज़न में पास किया, और एफ़० ए० में भी अच्छे नम्बर प्राप्त किये। अभी दो चार ही दिन हुए हैं कि बी० ए० की परीक्षा देकर घर आया है। लड़के की मां विवाह के लिए आग्रह करती थी इसलिए परीक्षा से दो मास पूर्व विवाह हो चुका है। माता पिता भी कितने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रूर हैं। लड़का बी० ए० की परीक्षा की तय्यारी कर रहा है परीक्षा सिर पर आ उपस्थित हुई है। एक एक क्षण बहुमूल्य है, परन्तु बस इसी घड़ी विवाह होना चाहिये। माता पिताओं को इस बात का तो विचार ही नहीं कि लड़कों के भविष्य जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा! उनकी तो बस यह खुशी है कि वह अपने देखते देखते लड़के के गले में यह जंजीर डाल दें। यह दासता की बेड़ी लगभग प्रत्येक बच्चे के गले में माता पिता डाले बिना चैन नहीं लेते। लड़के ने बहुत विरोध किया, पत्र लिखे, मिन्नत खुशामद की कि यदि और कुछ नहीं तो कम से कम परीक्षा के समाप्त हो चुकने तक विवाह मुल्तवी कर दिया जाय, परन्तु वहां कौन सुनता है। इस महीने में मुहूर्त्त है, इसके पीछे तो कुछ देर तक विवाह हो ही नहीं सकता। अन्त में विवश हो पढ़ाई में विघ्न करके कालिज छोड़कर बेचारा पहुंचा कि विवाह कर आये। ऐसे विवाहों ने कितना विनाश किया है इसका अनुमान करना भी कठिन है। कितने ही नौजवानों के जीवन नष्ट हो चुके हैं। माता पिता यद्यपि स्वयं इसी प्रकार के कष्टों से गुज़रते हैं परन्तु फिर भी उन्हें अपनी सन्तान पर दया नहीं आती। विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ। कई प्रकार के बाजे, आतिशबाज़ियां, खेल आदि हुये। बड़ा शानदार जुलूस था। लाला रामचन्द्र का पेशावर में अच्छा प्रभाव होने के कारण ब्राह्मणों की संख्या अधिक होने के अतिरिक्त बड़े बड़े आदमी बरात में सम्मिलित थे। लड़की वाले भी प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने भी खूब शान से विवाह का सब प्रबन्ध किया था। बड़ी तय्यारियां थीं। बरात के आराम के लिये सब प्रकार का सामान उपस्थित था। खूब मान प्रतिष्ठा, आवभगत की गई। दहेज में कन्या को बहुत कुछ दिया। सब ओर से वाह वाह होती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थी। विवाह सर्वथा निर्विघ्न समाप्त हुआ। लड़का बाल्य बधू को लेकर घर आया।

लड़के की मां ने सब शकुन मनाकर लड़की को घर में अत्यन्त स्नेह से प्रविष्ट किया। सब स्त्रियां बधाई देने आईं। आज लड़के की मां के दिल की प्रसन्नता का क्या ठिकाना है। बड़ी आयु में सन्तान हुई, एक ही एक पुत्र और फिर उसकी शादी पर यदि मां प्रसन्न न हो तो और कब प्रसन्न होगी!

३

लड़का परीक्षा देकर घर आया है। मां ने कहा--बेटा! अपने ससुराल जाओ। जबसे तुम्हारा विवाह हुआ है तुम्हें वहां जाने का अवकाश भी नहीं मिला। कई बार उनके निमन्त्रणपत्र आ चुके हैं। वहां मेरी ओरसे यह कह देना कि बहूको भेज दें। मेरी यह अभिलाषा है कि अब जब कि तुम हमारे पास हो, वह भी कुछ दिन यहां रह जाय। प्रत्युत उसे यह भी कह देना कि मैंने यह प्रण किया है कि जोड़े को अर्थात् तुम्हें और तुम्हारी स्त्रीको श्रीदरबार साहिब अमृतसरमें स्नानके लिये ले जाऊंगी और वहां यथाशक्ति अरदास कराऊंगी। मैं भी श्रीदरबार साहबके चरणोंमें उपस्थित होना चाहती हूं। इसलिए हम तीनों इकट्ठे चलेंगे। जितने दिन तुम वहां रहोगे मैं यहां सफ़रके लिये सामान आदि इकट्ठा करूंगी। अमृतसरके बाद हम और स्थानों-पर भी तीर्थयात्रा के लिये जायंगे। दो-तीन महीने ज़रा भ्रमण कर आयें, तुम्हारा दिल भी बहल जायगा और मेरी मनोकामना भी पूरी होगी। एक दो दिन घर रहकर लड़का अपने ससुराल गया। ससुराल जाना भी एक परीक्षा पास करना है। सब प्रकारकी तय्यारियां की गईं कि जिससे यही पता चले कि लड़का बड़ा सुयोग्य, धनाढ्य और बुद्धिमान है। माताकी बारबार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह शिक्षा थी कि वहां इस प्रकार रहना कि मानों तुम एक राजकुमार हो। हमारे नवयुवक को अप्रिय तो प्रतीत होता था परन्तु यह रीति भी है। अति उत्तम वस्त्र सिलवाये गये और नरेन्द्रनाथ ससुराल पहुंचे। वहां उनके स्वागत की बड़ी तैयारियां थीं। उनका आदर खूब किया गया। उनके आगमनमन को उनके लिए सुखदायक बनानेके लिये कोई उपाय न छोड़ा गया। वाह! वाह! विवाहके पीछे प्रथम बार सुसराल आना तो विशेष अवसर ही समझा जाता है। दो-तीन दिन ठहरने के पीछे नरेन्द्र ने अपनी माता का संदेश दिया। पहले तो उन्हों ने रीति के अनुसार अस्वीकार किया और पण्डित जी से पूछकर एक शुभ घड़ी उनके विदा होने के लिए निश्चित की गई। नरेन्द्रनाथ अपनी धर्मपत्नी को लेकर अपने घर पहुंच गए। हमारे विवाह भी क्या खूब होते हैं? इतनी यात्रा की परन्तु पति-पत्नी ने एक बात तक नहीं की। नरेन्द्रनाथ तो अपनी पत्नी को पहचान भी नहीं सकता। बहुत से कपड़ों में ढकी हुई किसी भी वस्तु को वह अपनी पत्नी कह सकता है। आर्य जाति के रीतिरिवाज यहांतक बिगड़ गये हैं कि जिसके साथ सारी आयु व्यतीत करनी है, इतनी इजाज़त नहीं कि उसका मुख भी देखा जा सके या उसके साथ बात भी की जा सके। इस से बढ़ कर विवाह की और क्या दुर्दशा हो सकती है? इस से बढ़कर और क्या उपहास किया जा सकता है?

४

नरेन्द्रनाथ अपनी धर्मपत्नी के सहित घर पहुंच गया। मां ने अपने कथनानुसार सब तय्यारी की थी। लाला रामचन्द्र कचहरी से घर आए तो नरेन्द्र की मांने बात छेड़ दी कि उसका विचार है कि वह नरेन्द्र और उसकी पत्नी सहित श्रीदर्बार साहब-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के दर्शन करें और अन्य तीर्थस्थानों की भी यात्रा करें। यहां रहते रहते चित्त भी ज़रा उकता गया है और बड़ी बात यह है कि मैंने प्रण किया है कि नरेन्द्र के विवाह के बाद दोनों को श्रीदरबार साहब की सेवा में उपस्थित करूंगी इसलिए आप आज्ञा दें कि हम विदा हो जावें। लाला रामचन्द्र ने सब उचित प्रबन्ध कर दिया और एक दो नौकर साथ लेकर ये सब अमृतसर की ओर रवाना हो गए। एक दो जगह मार्ग में रहकर सैर करते हुए अन्त में दस अप्रैल को अमृतसर पहुंचे। गाड़ी स्टेशन पर पहुंची कि इन्हें बड़ा कोलाहल सुनाई दिया। नरेन्द्र की मां बहुत घबराई; पर नरेन्द्र ने हिम्मत बन्धाई कि चिंता न करो। अभी पता लग जाता है मामला क्या है? जब ये पुलपर पहुंचे तो आश्चर्य से घबरा गए। एक ओर सहस्रों पुरुष खड़े जयकार बोल रहे हैं और दूसरी ओर पुलिस, फ़ौज, और मजिस्ट्रेट आदि खड़े हैं। एक विचित्र दृश्य था। नरेन्द्र के पूछने पर पता लगा कि आज इस शहर से दो देश-सेवकों को देश-निकाला दे दिया गया है और लोग उनके छुटकारे की अभिलाषा कर रहे हैं। सरकार की ओर से उनके निवेदन का यह उत्तर मिला कि कई निरपराध व्यक्ति गोलियों का शिकार बना दिये गये।

नरेन्द्र की मां बहुत घबरा गई। हे परमेश्वर! हम किस बुरी घड़ी यहां पहुंचे! यह क्या! आये तो थे हम दर्शन करने पर यहां क्या अन्धेर मचा हुआ है! नरेन्द्र से उसने कहा कि चलो वापिस चले चलें। इन अवस्थाओं में अमृतसर में ठहरना उचित नहीं। नरेन्द्र ने बहुत समझाया परन्तु मां आग्रह करती रही। अंत में नरेन्द्र भी उद्यत हो गया कि वापिस चला जाय। परन्तु जब फ़िर स्टेशन पर कठिनाई से पहुंचे तो वहां जाकर पता लगा कि यात्रियों का अंदर आना और बाहर जाना सर्वथा बंद है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहरे लगे हुए हैं। लाचार वापिस लौटे और अपने एक निकटतम सम्बंधी के घर ठहरे।

५

अमृतसर की उन दिनों की दशा का चित्र खींचने की लेखनी में सामर्थ्य नहीं। लोग कितने भयभीत थे! सब लोग दुबक कर घर बैठ गये थे। बाज़ार उजड़े हुए थे। शहर जङ्गल से अधिक मूक बना हुआ था। सर्वथा भय का राज्य विराजमान् था। यह बेचारे भी घर से बाहर न निकलते थे। रह रह कर खेद से हाथ मलते थे कि हे भगवन्! हमारी कर्मगति हम को कहां ले आई! हमें यदि पता होता कि यह अवस्था इस शहर की है तो कभी घर से बाहर पांव न धरते। अब क्या करें? इधर हम कष्ट में हैं, उधर लाला जी घबराते होंगे। तार बंद, डाक बंद, किस तरह खबर पहुंचाई जाय? इधर नाक में दम यों आ गया कि नलों में पानी बंद, बिजली का प्रकाश बंद। एक २ मिनट गुज़ारना दूभर हो गया, पर हो क्या सकता था? दोनों ओर विपत्ति थी। ज्यों त्यों करके २, ३ दिन काटे कि वैशाखी की पवित्र ऊषा उदय हुई। सूर्य्य भगवान् तनिक साहस से उदय हुये। उदासीनता और शोक कुछ दूर होने आरम्भ हुये। प्रत्येक हिंदू का उस दिन नया बर्ष आरम्भ होता है। नरेन्द्रने मां से कहा कि मां! आज तो अवश्य श्रीदर्बार साहब चलेंगे। वैशाखी के शुभ दिन स्नान करने से और भी पुण्य प्राप्त होगा। मां ने कहा,. बेटा! कहां जाओगे? पग पगपर पोलिसका सिपाही है। शहर में चलनेका कोई ठिकाना है? अपना नियम, व्रत, यहीं पूरा कर लो। यदि वाह गुरु को हमें अपने चरणों में बुलाना हुआ तो अच्छी अवस्थायें हो जायंगी। नरेन्द्रका जवानीका जोश भला कब उसे इस प्रकारकी सलाह माननेको उद्यत कर सकता था? नरेन्द्रने कहा, नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मां ! अब इतनी दूरसे आये हैं, सम्वत के आरम्भ का दिवस ! आज स्नान के लिये अवश्य चलना चाहिये। मां मान गई और उद्यत हो गई कि स्नान के लिये चलो चलें। सारा परिवार श्री दरबार साहब की सेवा में उपस्थित हुआ। खूब स्नान किया भगवान् का स्मरण किया। अपनी अवस्थानुसार और श्रद्धा के अनुकूल मांजीने अरदास कराया। मन अति प्रसन्न हुआ कि अंतमें अभिलाषा पूरी हुई। जो कर्तव्य अपनी ओर था वह पूरा हुआ और जो ऋण था, चुका दिया गया। नरेन्द्र ने सलाह दी कि अब घर वापिस जाना उचित नहीं। यहीं विश्राम करना चाहिये। और वहीं खाने पीने का सामान वह ले आया। सब ने अच्छी तरह खाया और विश्राम के लिये वहीं बैठ रहे। सायङ्काल ४ बजे नरेन्द्र को पता लगा कि समीप ही 'जलयांवाले बाग' में एक सर्वसाधारण जलसा होगा जिसमें अमृतसर के सर्दार लाला कन्हैयालाल वकील अपने विचार वर्त्तमान अवस्था पर प्रकट करेंगे। नरेन्द्र ने अपनी मां से कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं ज़रा वहां हो आऊं। देखूं तो सही वहां क्या होता है ? मां ने कहा कि मत जाओ मेरा दिल धड़कता है। न जाने वहां क्या विपत्ति उठ खड़ी हो ? यहीं बैठे रहो। नरेन्द्र ने कहा—मां ! डरो नहीं। वहां क्या होगा ? ज़रा मैं भी व्याख्यान सुन आऊँगा। अभी अभी तो मैं वापिस आऊँगा। इसमें घबराने की कौन सी बात है ? नरेन्द्र ने बहुत समझाया परन्तु मां बराबर हठ करती रही कि न जाओ मुझे डर लगता है।

मां ने नरेन्द्र का कोट पकड़ लिया कि तुम्हें नहीं जाने दूंगी और नरेन्द्र की धर्मपत्नी को कहा कि तुम्हीं समझाओ मेरा कहा नहीं मानता, शायद तुम्हारा कहा मान जाय। देवी ने लज्जा से सिर झुका लिया और आँख के इशारे से नरेन्द्र को जता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिया कि उसको भी यही कामना है कि नरेन्द्र जलयां वाले बाग में न जाय। किन्तु दैव बड़ा विलक्षण है। वही नरेन्द्र जो माता की आज्ञा आजतक सर्वथा पालन करता रहा था आज हठी बन गया। वही धर्मपत्नी जिसकी बातपर शायद यह प्राणतक दे देता उसका कहना भी उसे आज स्वीकार नहीं था। कोई गुप्त शक्ति खींचकर नरेन्द्र को जलयांवाले बाग ले ही गई। मां मुँह तकती ही रही। बेटा आंचल छुड़ा के हाथ से निकल ही गया।

नरेन्द्र जलयांवाले बाग में पहुँच गया। क्या देखता है कि बड़ा भारी समारोह है। आदमी ही आदमी दिखाई देते हैं। उनकी आंखें उस ओर लगी हुई हैं कि कब कन्हैयालाल आते हैं? उस निर्दोष को क्या पता कि लाला कन्हैयालाल का नाम तो एक बहाना है कि जिस के द्वारा एक भारी जन समूह इकट्ठा करने का उद्देश्य है। कार्यवाही आरम्भ हो गई परन्तु लाला कन्हैयालाल नहीं पहुँचे। अभी थोड़ी ही कार्यवाही हुई थी कि यकायक सेना आ पहुंची और उन्होंने बिना किसी सूचना के गोलियों की बौछार शुरू कर दी। लोग बुरी तरह भागे। बाहर जाने का कोई द्वार नहीं। बहुतों का दम घुट गया और एक बड़ी संख्या तो गोलियों का शिकार हो गई। नरेन्द्र जहां बैठा था वहां बहुत गड़बड़ हो जाने के कारण वह अपनी जगह से उठा कि कहीं दूसरी जगह जाय। अभी उठ ही रहा था कि एक गोली सीने में लगी, दिल की गति एक क्षण में बन्द हो गयी। धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा, बोलती चिड़िया उड़ गई और मिट्टी का ढेर छोड़ गई। दिल की दिल ही में रह गई और बेचारा नरेन्द्र जिसे मृत्यु खींचकर यहां लाई थी, क्षणभर में ही दूसरे लोक का यात्री हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६

नरेन्द्र की मां और पत्नी इस प्रतीक्षा में हैं कि अभी नरेन्द्र वापिस आता है और घर चलते हैं। दर्बार साहब में इतनी खबर मशहूर हो गई कि जलयांवाला बाग में गोली चल गई, और सहस्रों का खून हो गया है। घोर विपत्ति छा गयी, नरेन्द्र की मां ने जब सुना तो उसका कलेजा दहल गया। वह घबरा गई, न मालूम क्यों उसे यह निश्चय हो गया कि नरेन्द्र अब जीवित नहीं लौटेगा। नरेन्द्र की मां ने नरेन्द्र की पत्नी से कहा कि चलो बाग में चलें, वहां चलकर पता लगावें कि नरेन्द्र पर क्या बीती है?

७

नरेन्द्र की मां और पत्नी एक तो अपरिचित, दूसरे स्त्री जाती, तीसरे घबराहट के कारण से पैर मन-मन का हुआ भटकती भटकती बाग में पहुँचीं। वहां क्या पता लग सकता है! धरती खून से तर थी। मुर्दों के ढेर के ढेर लगे हुए थे। घायल एक ओर तड़प रहे थे कुछ लोग 'पानी' 'पानी' पुकार रहे थे। खोज आरम्भ की, अभी दो-चार ही पग आगे बढ़ी थीं कि नरेन्द्र की मां पुकार उठी, "ओह! मैं लुट गयी, मेरी सारी आयु की कमाई बरबाद हो गई। मेरा इकलौता पुत्र पला-पलाया विवाहित मौत के घाट उतार दिया गया। हाय मेरे खोटे भाग्य कि मैं उसे पेशावर से यहां लाई। मैं अब क्या करूँ? किस के आगे फ़र्याद करूँ? मुझसे अब यह दुःख सहा न जावेगा। नरेन्द्र! प्यारे नरेन्द्र!! जागो। ज़रा एक मिनिट के लिये आँख तो खोलो। देखो! तुम्हें जगाते जगाते मैं पगली हुई जाती हूँ। ऐसे ही क्या तुम सोये हो कि उठते ही नहीं? नहीं, नहीं, सोये नहीं बल्कि रूठ गये हो। अच्छा बेटा जो कहोगे मैं ले दूंगी। लो अब अधिक न तड़पाओ। उठो! अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मां का कहना मानो। चलो घर चलें, देर हो गई। मां कभी चूमती है कभी सिर को प्यार करती है, कभी सीने पर हाथ रखकर हृदय की गति की परीक्षा करती है। विक्षिप्त हो गई है। जिसे वह चूमती है वह तो अब एक मिट्टी का ढेला है। नरेन्द्र तो घर छोड़ कर कहीं और जगह चला गया है। अब नरेन्द्र की मां सिर पटका करे, नरेन्द्र अब यहां कहां है। डायर की गोली उसे पथिक बना गई, उसे परदेश ले गई। नरेन्द्र की पत्नी लो देखते ही मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। नरेन्द्र की मां ने जब उसे मूर्च्छा की अवस्था में देखा तो एक ओर पुत्रकी इस अचानक मृत्यु-का धक्का, उधर उसकी यह हालत देखो बस साहस छोड़ दिया, धड़ाम से धरती पर गिर पड़ी। न जाने कितने समय तक वहां इस अवस्था में वे दोनों पड़ी रहीं। उनका नौकर जो साथ था कुछ मनुष्यों को साथ लेकर आया, उन दोनों को उठवाया और नरेन्द्र की लाश को अलग करके घर ले गया। जिस किसी ने सुना कलेजा थाम कर रह गया। मां का इकलौता बच्चा, विवाह हुए अभी कुछ मास ही हुए और यों बिना कारण बिना अपराध मार दिया जाये। शोक, यह अंग्रेज़ी राज्य का न्याय है! यों निरीह और बेबस अबलाओं का कलेजा टुकड़े टुकड़े कर देना! क्या यही न्याय है, जिस पर सदा अंग्रेज़ अभिमान किया करते हैं?

८

अगले दिन प्रातःकाल नरेन्द्र के शव को मरघट में लेजा कर रख दिया गया। माता और धर्मपत्नी के रुदन विलाप सुने नहीं जाते। पत्थर से पत्थर दिल वाले पुरुष का भी कलेजा मुँह को आता है। तार बन्द होने के कारण नरेन्द्र के पिता को अभी सूचना-तक नहीं गई। जब लाश को चिता पर रख दिया गया, तो नरेन्द्र-की धर्मपत्नी ने चाहा कि वह साथ ही सती हो जायें। जीकर अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्या करूंगी ? पतिदेवता जहां गये हैं वहां ही मैं भी जाऊंगी। सीताजी राम के साथ और द्रोपदी युधिष्ठिर के साथ वन को गई थीं, मैं यहां नहीं रहना चाहती। मुझे आज्ञा दो कि मैं साथ ही भस्म हो जाऊं। यह कहा, और चिता की ओर दौड़ी। कूदने को उद्यत ही थी कि लोगों ने हाथ पकड़ लिया। बेटी, ऐसा न करो, सन्तोष करो, आत्महत्या पाप है, महापाप है। धैर्य धरो। दुःख निस्सन्देह असह्य है, धक्का अवश्य गहरा लगा है पर अपने प्राण इस प्रकार गंवाना शास्त्रों की आज्ञा के विरुद्ध है। यह संसार भी क्या विचित्र वस्तु है। उसे, जिसे नरम नरम गदेलों पर सुला के बड़ा किया था, जिसके ज़रा बीमार हो जाने पर घर-बार का भोजन करना असंभव हो जाता था, आज उसी लाड़ले दुलारे पर मन मन के, भारी लकड़ी के तोंदे रख कर उसे जला कर राख कर दिया जाता है।

६

सरहद ही में एक गांव में नरेन्द्र की ससुराल थी। नरेन्द्र के श्वसुर बड़े अमीर आदमी थे। किसी वस्तु की कमी न थी। पर नरेन्द्र की मृत्यु ने उनका सुख हराम कर दिया। एक ही लड़की सारी जायदाद थी। चाव से उसका विवाह किया था। वह बेचारी विधवा हो गई। जीवन का क्या स्वाद है। लड़की के पिता ने बहुतेरा समझाया कि शोक न करो। जो कुछ होना था हो गया। अब सन्तोष के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं। परन्तु देवीके हृदयपर इन बातोंका प्रभाव ही क्या ? चिन्ताने उसे घुला दिया। पति की इस प्रकार की अचानक मृत्यु का घाव घातक सिद्ध हुआ। अभी बेचारी ने विवाह के जीवन को देखा भी क्या था। पतिदेव को अभी तो आंख भर देखा भी नहीं था कि यह वियोग और विपत्ति परमात्मा की ओर से उपस्थित हुई। बस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसी चिन्ता में रात-दिन दीपक की ज्योति की तरह अपने जी को जलाती रही। खाना पीना सब छूट गया। सारा सारा दिन चारपाई पर पड़े पत्थर की तरह निश्चेष्ट गुज़र जाता था। मां लाख समझाती, पिता लाख उपदेश देते, परन्तु किसी भी उपदेशक की बात यहां प्रभाव न करती थी। स्वास्थ्य बिगड़ गया। हल्का ज्वर आना आरम्भ हो गया। अब तो यह अवस्था हो गई कि चारपाई पर से उठना कठिन हो गया। माता पिता ने बहुत प्रयत्न किया, बड़े बड़े डाक्टर और वैद्य चिकित्सा के लिये बुलाये, पर सब व्यर्थ है। प्रेम का मारा भला इन रसायनों से कब अच्छा हो सकता। इस बेचारी का रक्षक तो नरेन्द्र ही है। कोई नरेन्द्र को अब बुला दे तो इस मृतक शवमें प्राण आ जाये। परन्तु यह किस प्रकार संभव हो सकता है? अन्त में पांच महीनों से अधिक रोगी रह कर बेचारी देवी ने अपने प्राण छोड़ दिये। मरने से कुछ मिनट पूर्व देवी ने अपनी मां से इतना कहा कि एक पतिव्रता देवी के समान मैंने अपना जीवन व्यतीत किया है। मैंने पति का कुछ भी सुख नहीं देखा। मैंने पति के साथ बात भी नहीं की परन्तु एक हिन्दू देवी की तरह अपने धर्म का पालन करती हुई इस संसार को छोड़ती हूं। मेरा विचार तो यही था कि मैं उनके साथ सती होती पर लोगों ने रोक दिया। अब भी मैं अपने विचारों में सती हो रही हूँ। यदि मेरा धर्म सच्चा है तो मुझे अवश्य उनके दर्शन होंगे। जिस सरकार ने मेरा सुख मुझसे छीना उसके लिये क्या कहूं। जिस गवर्नमेन्ट ने मुझे विनष्ट किया उस का बुरा चाहना उचित नहीं। मैं क्यों किसी का बुरा चाहूं? वह दैव अपने आप सबको उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कार और दण्ड देगा। भगवान् से मेरी प्रार्थना है कि मेरा मेल पति के साथ अगले जन्म में हो जिससे अगला जीवन सुख से गुज़रे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लाला रामचन्द्र को जब पता लगा कि उनका इकलौता बेटा यों सरकारकी कृपासे मार डाला गया तो उनके दिल पर गहरी चोट लगी। वही लाला रामचन्द्र जो दूसरों की विपद में कभी सहानुभूति नहीं दिखाते थे, आज उनकी दशा ही और है। अब उनके विचारों में विचित्र परिवर्त्तन हो गया है। पुत्र की असमय और आकस्मिक मृत्यु ने लाला जी के जीवन में आश्चर्य जनक पलटा दे दिया है। लाला साहब ने वकालत त्याग दी है। ऐसी सरकार की अदालतों में न्याय प्राप्त करने के लिये जाना कि जो भोले भाले निरपराध मनुष्यों को यों कत्ल कर डाले, योग्य नहीं। बड़ी बड़ी चालाकियों से रुपया कमाया था। कई अनजानों को अपने जाल में फंसाकर धन इकट्ठा किया था। यह सब किस काम आवेगा। मनुष्य अन्तकाल से कितना बेपरवाह है। लाला रामचन्द्र ने प्रण कर लिया है कि अब वह वकालत तो सर्वथा न करेंगे। और भी किसी तरह सरकार से सहयोग नहीं करेंगे। देश संबंधी बातों में जो उदासीनता पहले वह दिखाया करते थे अब वह अवस्था नहीं रही। अब आप बड़े जोश से देश और जाति के विषय में विचार करने में प्रतिदिन खूब आनन्द लेते हैं। सच तो यह है कि लड़के की मृत्यु ने उनकी आंखें खोल दी हैं। अब उन्हें अच्छी तरह से पता लग गया है कि हिन्दुस्तानियों की उनके अपने देश में क्या प्रतिष्ठा है। आगे तो धन में मस्त इन्हें दीनों की दुर्दशा का पता था ही नहीं। अब यह दीनों की सहायता करते हैं। इन्हें जहां पता मिलता है कि अत्याचार हो रहा है वहीं पहुंचकर यह अपना सारा बल उस अत्याचार को दूर करने में लगाते हैं। उन्हें न अब जेल का भय है न फांसी का डर है। उनका अब यह सिद्धान्त है कि जियेंगे तो देश के लिये और मरेंगे तो भी देश के लिये !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ऑनरेरी मजिस्ट्रेट

गुजरांवाले के एक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मृत्यु-शय्या पर पड़े कराह रहे हैं। बातचीत ज़रा कठिनता से कर सकते हैं परन्तु जो कुछ कहते हैं उसमें अस्पष्टता नहीं है। उन्हें अब विश्वास आ गया है कि उनकी जीवात्मा इस पंच-भौतिक देह से दुखी हो गई है। अपने नवयुवक पुत्र को जो बालिग़ हो चुका है पास बुलाकर उपदेश कर रहे हैं और बहुत सी बातों के वर्णन करने के बाद उन्होंने अपने पुत्र से अत्यन्त हृदय-विदारक शब्दों में इस प्रकार कहा—

प्यारे पुत्र ! तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाकर मैं अब संसार से विदा होता हूँ। मेरे वंश की लाज अब तुम्हारे हाथ में है। देखना ! इस वंश को बट्टा न लग जाय। बीस बरस मैंने ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी की है। तुम्हें विदित ही है कि मैंने कितना प्रभाव पैदा किया था। दर्बार में मेरी प्रतिष्ठा, कचहरी में मेरा मान, गांव में मेरा रोबदाब; जहां मैं जाता था लोग मुझ से डरते थे और अफ़सर मेरी इज्ज़त करते थे। यह सब कुछ था, परन्तु शोक ! इस समय मेरा दिल बैठा जा रहा है। कोई भयङ्कर वस्तु मेरा कलेजा निकाल रही है। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि खुदा के फ़रिश्ते अपनी दया से मुझे वञ्चित कर रहे हैं। प्रबल पञ्जे में जकड़ा हुआ हूं। जो कहीं मुझे गुमान भी होता तो मैं अपने धर्म को इस प्रकार सस्ते दामों पर न बेच देता। जो योग्यता मुझे अपने देश को उन्नत करने में लगानी चाहिए थी उसे मैंने अपनी मातृभूमि को दुःख पहुंचाने में लगाया। सारी की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सारी जीवन-पुस्तक उन काले दागों और धब्बों से भरी हुई है जो मैंने स्वार्थपरता और अविचार के कारण उपहार के तौर पर प्राप्त किए हैं। ज़मीन, मकान, दौलत, ख़िताब, प्रतिष्ठा, रोबदाब, यही वस्तुएं मेरी आंखों में महामूल्य पदार्थ थीं जिनकी प्राप्ति के लिए मैं इतना तत्पर रहता था कि इनके जोश में ईश्वर को भी भूल गया।

२

औनरेरी मजिस्ट्रेट को अपने जीवन की पड़ताल ने इतना दुःखी कर दिया कि आखों से आंसू जारी हो गए, सांस और तेज़ हो गया; उनका पुत्र घबराया कि कहीं ये अन्तिम सांस ही न हों किन्तु कुछ इलाज के बाद तबीयत को ज़रा आराम हुआ। सांस भी ज़रा ठीक हुआ और चेहरा भी पहिले से अच्छा हो गया। औनरेरी मजिस्ट्रेट ने फिर ज़ोर देकर बातचीत का सिलसिला आरम्भ करना चाहा परन्तु उसके पुत्र ने इशारे से बन्द किया और कहा कि वह ज़रा शान्ति से लेटे रहें। सम्भव है कि जोश, जीवन का जल्दी अन्त कर दे। बेटे की सलाह पिता को सर्वथा स्वीकार न थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उनके हृदय में आग दबी है जिसे वह दबाए नहीं रख सकते और इसलिए वह चाहते हैं कि बातचीत जारी रखें। अपने बेटे की सलाह की परवा न करते हुए उन्होंने दिल का बुख़ार इस तरह निकालना शुरू किया —

बेटा! मरना तो है ही, दो घड़ी पहिले क्या और दो घड़ी पीछे क्या? मैं तो यह चाहता हूं कि मेरे प्राण जल्दी निकल जायं। परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि मैं तब तक न मर सकूंगा जब तक कि मैं तुम्हें वह सब कुछ सुना न लूं जो इस समय व्याकुल कर रहा है। इसलिए जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ सुनो—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हां! परन्तु एक बात करो, पास में जो बूढ़ी सईदा बेगम रहती हैं उन्हें ज़रा बुलवा लो, मैं उनसे अवश्य मिलना चाहता हूँ।

३

लड़के ने सईदा बेगम को बुलवाने के लिए आदमी भेज दिया और अपने पूज्य पिता के पास बैठ गया। पिता ने कहा कि मैं क्या क्या कहूँ जो जो देश और जाति के विरुद्ध मैंने किया है। मैं जब साहब से मिलने के लिए जाता था, घंटों प्रतीक्षा के बाद जो कहीं डिप्टी कमिश्नर की कृपा होती थी तो मैं समझता था कि मानों स्वर्ग ही प्राप्त हो गया है। हाथ जोड़कर मैं साहब के सामने खड़ा रहता था। साहब—"वैल! क्या खबर है? कहिए शहर का क्या हाल है? पोलिटिकल लहर किस हद तक पहुंच चुकी है? लोगों की इस सरकार के बारे में क्या राय है? क्या लोग सचमुच स्वराज्य चाहते हैं?" मैं उत्तर देता था कि राजनैतिक हलचल तो कुछ विद्रोहियों की मनगढ़न्त हलचल है। आप इसको अगर चाहें तो पलभर में कुचल सकते हैं। भला सरकार का मुक़ाबिला! यह उनमें सामर्थ्य कहां? आप हमारे मुकुटमणि हैं। बस, इस प्रकार की बातें किया करता था और अपने देश और जाति के लाभ के ठीक विरुद्ध बातें किया करता था। हथेली पर जान रखकर लड़नेवाले देशभक्तों की निन्दा करना ही मेरा एक मात्र काम था। मेरा कलेजा मुँह को आता है जब मुझे 'मार्शल-ला' के दिनों के अपने किये हुए कर्म याद आते हैं। मुझे अब पता लग रहा है कि जो कुछ मैंने उन दिनों में किया मैं उसके लिए कभी क्षमा नहीं किया जाऊँगा। एक साधारण ख़िताब की लालसा से मैंने क्या क्या नहीं किया? लोगों को मरवाया, अपमानित किया, उनकी जायदादों को बरबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करवाया, झूठे गवाह तैयार किए, निरपराध मनुष्यों को जेल पहुंचवाया। ये बातें हो ही रही थीं कि बी सईदा बेगम के पहुंचनेकी खबर नौकर ने दी। मजिस्ट्रेट साहब ने हुक्म दिया कि उन्हें कमरे में लाया जावे क्योंकि वे उनके साथ कुछ आवश्यक बातचीत करना चाहते हैं।

४

बी सईदा बेगम पधारीं। उनकी करुण दशा देखकर कलेजा मुँह को आता है। कुछ वृद्ध और दुर्बल हो गई हैं। शरीरपर फटे पुराने कपड़े, अत्यन्त मैले कुचैले पहिने हुये थीं। रो रोकर आंखों की शक्ति भी कम हो गई है। सच है! ऐसी दशा क्यों न हो!—बेचारी का इकलौता बेटा फांसीपर चढ़ा दिया गया है। बड़ी कठिनाइयों से उसको जीविका कमाने योग्य किया था। चार पैसे लाने के योग्य हुआ था। गुज़ारा खूब मज़े से चलता था पन्तु अत्याचारियोंने बेचारी के लाल का छीन लिया। उसे फांसीपर चढ़ा दिया और उसकी गोद को सदा के लिये उजाड़ दिया। अब इसका न कोई रक्षक है और न कोई सहारा।

सईदा बेगम घर से बाहर बहुत कम निकलती हैं। मजिस्ट्रेट साहब के बुलावे से इस बेगम को आश्चर्य तो ज़रूर हुआ परन्तु वह लिहाज़ के मारे चली आई। दिल में तो उसे इस बात का ध्यान अवश्य था कि मजिस्ट्रेट साहब को मेरे साथ क्या काम हो सकता है! परन्तु केवल दुनियांदारी के विचार से उसने निषेध करना उचित नहीं समझा। जब बी साहिबा कमरे में घुसीं तो मजिस्ट्रेट साहब ने इशारा किया कि उनको अपनी चारपाई के समीप बिठाया जाय। जब वह समीप आकर बैठ गई तो मजिस्ट्रेट साहब दो चार मिनिट के लिए बिलकुल चुप हो गए। सब जगह शान्ति छा गई। तबीयत ज़रा संभली तो आपने उस बेगम को यों सम्बोधन किया:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"प्यारी बहिन! मेरे अनुचित कार्यों ने मुझे इस योग्य ता नहीं रखा कि मैं आप से सम्बोधन करने की ढिठाई कर सकूँ। मेरा कर्मपत्र इतना काला है कि वहां प्रकाश का एक किरण भी नहीं पहुंची परन्तु मैं क्या करूँ? एक ऐसा बोझ मुझे दबा रहा है—मेरा विश्वास है कि जब तक मैं अपने अपराधों का प्रायश्चित्त न कर लूँ तब तक मेरे प्राण न निकल सकेंगे मैं जानता हूं कि तुम्हारे दिल में मेरे लिए आगे भी कोई प्रतिष्ठा नहीं है लेकिन मेरी बात सुनते ही तुम मुझसे घृणा करने लग जाओगी, तुम मेरे मुंहपर थूकोगी। लेकिन यह भी मैं सह नहीं सकता कि यह रहस्य मेरे साथ ही चला जाय। लो सुनो—"तुम्हारे पुत्र का घालक मैं ही हूँ।"

सईदा बेगम यह सुनते ही मूर्च्छित हो गई। होश में लाने से बेचारी ज़रा संभली और उसने कहा कि हैं! हजूर! यह आप क्या कह रहे हैं? मेरा बेटा तो फाँसीपर लटका दिया गया था आप उसके घातक कैसे हैं? मेरे बेटे की घातक तो यह सरकार है कि जिसने बिलकुल झूठी गवाही के आधारपर मेरे लाल को मुझ से सदा के लिए पृथक् कर दिया। मजिस्ट्रेट ने कहा कि यद्यपि यह ठीक है कि सरकारने तुम्हारे बच्चे को फांसी पर लटकाया परन्तु हाय शोक! कि मैं ही यह दुष्कर्मी हूँ कि जिसके कारण से वह फांसीपर लटकाया गया।

घटना इस प्रकार है:—जब एक अंग्रेज़ को कत्ल कर डालने के अभियोग में सरकार को अपराधियों की आवश्यकता पड़ी तो उसने निरपराध व्यक्तियों को जिनके साथ पुलिस की शत्रुता थी, या जो अपनी देशभक्ति के कारण से ज़रा प्रसिद्ध थे, पकड़ लिया और उनपर यह अभियोग लगा दिया। मेरा विश्वास है कि वे सारे बेचारे निरपराध थे। घटना के समय तो किसी को पहिचान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करने का साहस न था। बाद में बनावटी गवाह खड़ेकर उनपर इतना भयङ्कर अपराध लगा दिया गया। ज़िले के हाकिम ने मुझे कहा कि मुकद्दमे में प्रमाण नहीं मिलते, तुम कुछ प्रबन्ध करो। हम जानते हैं कि मुकद्दमा झूठा है लेकिन हम चाहते हैं कि एक अंग्रेज़ के बदले में हिन्दुस्तानियों को फांसीपर चढ़ा दिया जाय। घटना के समय का तो कोई गवाह है नहीं और न्यायालय को विश्वास दिलाने को कोई प्रबन्ध होना चाहिए। मैंने कहा:—साहिब! यह कौन सी बात है! यह तो मेरे बायें हाथ का काम है! आप इस प्रकार की जितनी भी सेवा चाहें मुझ से ले लें। मैं हर समय तैयार हूँ।"—साहब बहुत प्रसन्न हुए।

५

मैं जब घर पहुंचा तो इस उधेड़बुन में लग गया कि किस तरह साहब बहादुर की इच्छा पूर्ण की जाय और उसकी प्रसन्नता प्राप्त की जाय? मैं सीधा जेल में पहुंचा कि ज़रा अपराध लगाए हुए अभियुक्तों को तो देखूं। जेलखाने में उनकी अवस्था देखकर मेरा शरीर कांप उठा। कितने निर्दोष व्यक्ति बिना कारण जेल के अन्दर बंद हैं। उन्हें भांति भांति के कष्ट दिये जा रहे हैं। अभियुक्तों में मुझे तुम्हारा पुत्र दिखाई पड़ा। मेरी उसके साथ जान पहिचान तो थी ही उसने मुझे सलाम किया और मैं उसके पास चला गया। मैंने कहा, हुसैन! तुम यहां कहां! उसकी आंखें डबडबा गईं। कहने लगा कि पुलिस की शरारत मेरे यहां आने का कारण है। मुझे भी ऐसे भयङ्कर अपराध में अपराधी बना लिया गया है कि मैं हैरान हूँ। उसने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसे छुड़वा लाऊं। उसका अत्यन्त विनीत ढंग में मुझ से प्रार्थना करना उसकी भोली सूरत, उसकी आंसुओं से तर आंखें, सारे का सारा दृश्य इस समय मेरी आंखों के सामने फिर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तोबा ! मैंने उसके साथ कितना अत्याचार किया ! उसने मुझसे आश्रय मांगा और मैंने उसे आग में झोंक दिया। उसने मेरी सहायता चाही और मैंने उसे मौत के मुंह में ढकेल दिया।

मैंने प्रत्यक्ष में उसके साथ गहरी सहानुभूति दिखाई और कहा, बेटा ! घबराओ नहीं और जिस तरह मैं चाहूँ उस तरह करो। तुम्हारा लड़का तुरन्त सहमत हो गया।

दारोगा-जेल से पूछकर मैं उसको एक अलग कमरे में लेगया। मैंने उस से कहा, "बेटा ! तुम केवल एक ही उपाय से छूट सकते हो कि तुम अपने अपराध को स्वीकार कर लो।" वह भौचक रह गया। मैं अपराध स्वीकार क्या करूं ? मैंने तो अपराध किया ही नहीं। मैं तो अपराध से उसी प्रकार निर्दोष हूं जितना कि एक नवजात बच्चा। मैंने उससे कहा कि तुम जानते हो कि सरकार इस समय कितने अत्याचार करने पर तुली बैठी है ? यहां सच और झूठका अब कोई भेद नहीं है। जो आगे आया उसे ही पीस डालने का निर्णय इस सरकार ने कर लिया है। तुम यदि अपनी जान बचाना चाहते हो तो जिस तरह मैं तुम्हें समझाऊं वैसे तुम करो। इसी में तुम्हारी भलाई है। लड़का अभी छोटी आयु का और अनुभवशून्य था, मेरा कहा मान गया।

वहां से उठकर मैं सीधा पुलिसके उच्च अधिकारी के पास गया और उसको शुभ संवाद दिया कि लो ! अब काम बन गया। मैंने एक आदमी को तय्यार कर लिया है कि जिस तरह तुम चाहोगे अपराध को स्वीकार कर लेगा और अपने साथियों के नाम भी जो तुम चाहोगे बता देगा। इससे अधिक दृढ़ प्रमाण और क्या मिल सकता है ? पुलिस का अफ़सर खुशी से फूल उठा। उसने मेरा अत्यन्त जोश से धन्यवाद किया और मुझे एक बयान की नक़ल दी और इच्छा प्रगट की कि यह बयान मैं उस अभियुक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को याद करवा दूं जिससे कि उस का बयान आजही मजिस्ट्रेट के सामने लेखबद्ध हो जाय। उसे अभयदान दिलाया जाय। हमारी खोज पूरी हो और हम अभियोगका चालान कर दें। बस, अबतो अभियोग बिलकुल सिद्ध ही है।

६

मैं उस बयान की नक़ल लेकर फिर हुसैन के पास पहुंचा और उसे वह सारी मन गढ़न्त बनावटी कहानी याद कराई। मैं देखता था कि वह भूठ बोलने से कुछ घबराता था और उसका शरीर कांपता था। मेरे रोबदाब से और अपने प्राणों के मोह से उसने ननुनच तो नहीं की परन्तु मैं यह कह सकता हूँ कि ईश्वर-का भय उसको कई बार ऐसा धोखे का काम करने से पृथक् रखता था। परन्तु फिर शैतान का हरा बाग़ उसको धर्म्म की पुकार की तरफ़ से बे परवा कर देता था। ख़ैर, येनकेन प्रकारेण उसने बयान याद कर लिया। उसे मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित करके इसका बयान लेखबद्ध करा लिया गया। उसने सब दोष स्वीकार कर लिया और और भी कई निरपराध पुरुषों को व्यर्थ में जकड़ दिया। मैं मन ही मन में कहता था कि यह क्या अंधेर हो रहा है? मजिस्ट्रेट भी धर्म से हाथ धोये बैठे थे। मेरे सामने पुलिस का अफ़सर जो लिखता गया मजिस्ट्रेट वही लिखता गया और तुम्हारे पुत्र के उसपर हस्ताक्षर कराये गये। मजिस्ट्रेट ने प्रत्यक्ष झूठा बयान लिखा। जहां हुसैन भूल जाता था वहां पुलिस का अफ़सर उसे बताता जाता था। अस्तु, उस को विश्वास दिलाया गया कि उसे मुक्त कर दिया जायगा। हुसैन ने अपनी जान खरीदी परन्तु बड़े महंगे दामों में।

७

मुकद्दमा तैयार हो गया, न्यायालय में पेश हो गया।

15211
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अदालत में उन दिनों जो न्याय होता था उसका तो कहना ही क्या ? स्वयं ही अपराध लगाने वाला, स्वयं ही गवाह, स्वयं ही न्यायाधीश, अभिप्राय यह कि न्यायालय एक तमाशे का स्थान बना हुआ था जहां सैकड़ों की स्वतन्त्रता आयु भर के लिये नष्ट की जाती थी और दर्जनों के कत्ल की आज्ञा दी जाती थी। अभियोग उपस्थित हुआ, गवाहों ने जी भर कर अपना धर्म नष्ट किया। अभियोग सिद्ध कर दिया गया। सब अभियुक्तों को फांसी का दण्ड मिल गया। तुम्हारे पुत्र को भी फांसी की आज्ञा मिली। मैं वहां न्यायालय में उपस्थित था। वह सुनते ही मैं अवाक् रह गया। बस, यह क्या ! सरकार ने यह मेरे साथ धोखा किया। मुझे तो कहा था कि उस को मुक्त कर दिया जायगा। हाय ! यह क्या हुआ ! मैंने तो अभियोग को सिद्ध करने के लिये यह दाव खेला था। मुझे सर्वथा पता न था कि इसका यह परिणाम होगा--मैं तुरन्त पुलिस के उच्च अधिकारी के पास गया। यह तुम ने क्या कर दिया है ? उसने अत्यन्त उपेक्षा से उत्तर दिया कि खां साहिब ! क्या तुम यह विचार करते हो कि हम एक घातक को मुक्त कर दें ? वह स्वयं कहता है कि मैंने अंग्रेज़ को कत्ल किया है। अब यह किस प्रकार सम्भव है कि हम उसे मुक्त कर दें ? हमने तो यह लालच केवल इसलिए दिया था कि हमारा अभियोग सिद्ध हो जाय। मैंने उस अंग्रेज़ अधिकारी से कहा कि तुमने मुझे स्पष्ट धोखा दिया है। मैं जानता हूँ कि वह बिलकुल निरपाध है। याद रखो कि ऐसे निरपराध आदमी को फांसी पर चढ़ाने से तुम नष्ट हो जाओगे। अंग्रेज़ ने अत्यन्त अभिमान के ढंग में कहा कि स्त्रियों की बातें स्त्रियों के सामने करो। हम नहीं जानते कि यह निरपराध है वा नहीं। हमारी दृष्टि में हरएक हिन्दुस्तानी अपराधी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि तुम अधिक बात करोगे तो तुम्हारे अधिकार छीन लिये जायँगे। हुसैन ने मेरी ओर देखा और उसकी एक नज़र से ही मानों मैं आधा मुर्दा हो गया। हे ईश्वर! हे भगवान्! यह मैंने क्या कर दिया।

८

सईदा, जानो तुम्हारे पुत्र का घातक मैं हूँ। मेरे स्वार्थ ने मुझे ऐसा बुरा काम करने पर उद्यत किया। यह खून मेरी गर्दनपर है। इस पाप का प्रायश्चित्त मैं क्या कर सकता हूं। हाय! शोक, मेरा प्रायश्चित्त भी स्वीकार न होगा। मरने से पहिले मैं तुम से क्षमा चाहता हूँ—तुम मुझे क्षमा करो। मैं जानता हूँ कि मेरा अपराध क्षमा के योग्य नहीं परन्तु तोभी तुम मुझे क्षमा करो। मैंने जो तुम्हारी संपत्ति को लुटा दिया है उसके लिये मुझे क्षमा करो।

सईदा बेगम का दिल भर आया। वह आश्चर्य से अवाक रह गई। उसे सारे भेद का पता लग गया। उस के घाव हरे हो गये। उस को भारी धक्का लगा। उत्तर में केवल इतना कह सकी कि यद्यपि आपने मुझे कौड़ियों के भाव बिकवा दिया है परन्तु मैं समझती हूँ कि आपने जो कुछ कहा यह सब मेरी ही कर्मगति के वश हुआ इस लिए मैं तुम्हें क्षमा करती हूं। मेरा बेटा तो अब वापिस आ नहीं सकता परन्तु अब आप पर क्रोध करना व्यर्थ है। मेरे भाग्यों में ऐसा ही लिखा था। यह सुन कर मजिस्ट्रेट साहब को संतोष हुआ। उन्हों ने एक लम्बा सांस लिया और वह अंतिम सांस था। बस, इस संसार से चल बसे।

९

आज डिप्टी कमिश्नर की मुलाकात का दिन है। हमारे आनरेरी मजिस्ट्रेट साहबको परलोक सिधारे आज एक मास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बीत चुका है। उनका सुपुत्र डिप्टी कीमश्नरसे किसी आवश्यक कामके लिये मिलने आया है। मुलाक़ातमें डिप्टी कमिश्नर ने कहा—"वेल, तुम ऑनरेरी मजिस्ट्रेट क्यों नहीं बनना चाहते? तुम ने अपने पिता का स्थान लेने के लिये अभीतक प्रार्थनापत्र क्यों नहीं भेजा? हम आप को ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाना चाहते हैं परन्तु तुम्हारी ओर से कोई पत्र भी नहीं आया इस का क्या कारण है?"

नवयुवक ने बड़े साहस उत्तर से दिया कि साहब! मुझे इस ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी से क्षमा कीजिए। मैं धर्म बेचने के सौदे को नहीं करना चाहता। मेरी आंखों के सामने वह दृश्य उपस्थित है कि किस प्रकार मेरे पूज्य पिता मृत्यु शय्यापर शोक से हाथ मलते थे। मैं कभी भी मजिस्ट्रेट नहीं बनना चाहता।

मैं अपने देश और जाति की उन्नति के लिये अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तय्यार हूँ और कभी भी चुग़लखोरी, बेईमानी और विश्वासघात करने को तय्यार नहीं हूँ। साहब! वह ज़माना गया कि जब अच्छे आदमी भी सरकार के लिये धर्म की परवा नहीं किया करते थे। अब तो यह समय आ गया है कि संसार के अन्दर वही सम्मान के योग्य है जो देश और जातिपर न्योछावर होना जानता हो। आप की ऑनरेरी मजिस्ट्री को अब अच्छे लोग अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं और इस लिए मैंने उसको ज़रा भी परवा नहीं की। मैंने तो यह निर्णय कर लिया है कि जहां तक बन पड़ेगा देश और जाति के भलेके लिये प्रयत्न करूंगा और अपने पूज्य पिता के अपराधों का प्रायश्चित्त इस रूप में पूरा करूंगा कि देश को उन्नत बनानेके लिए अपने प्राण तक प्यारे न समझूंगा। जीवन का आनन्द भी क्या है यदि उसे देश के लिए बलिदान न किया? मैं हूं तो एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ोटा सा व्यक्ति परन्तु मेरा पक्का निश्चय है कि मैं अपना समय, पनी धन सम्पत्ति, अपना शरीर और अपना प्राण सब कुछ पनी मातृभूमि के स्वतंत्र करने में लगा दूंगा और भारतवर्ष में वराज्य संस्थापन कराने में पूर्ण प्रयत्न करूंगा।

डिप्टी कमिश्नर इस साहस के उत्तर को सुन कर चुप हो या और दिल ही दिल में सोचने लगा कि सच है, जब अत्या-ार एक सीमा से बढ़ जाते हैं तो फिर लोग स्वतंत्र होने पर ुल जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वीर देवी

लाला छज्जूमल एक प्रतिष्ठित उच्च घराने के खत्री हैं। आप की आयु तो ५० वर्ष के लगभग ही है परन्तु आकृति से अधिक दुर्बल प्रतीत होते हैं। आप को एक गहरा धक्का लगने से इतनी दुर्बलता हो गई है। एक ही आप की कन्या थी वह भी ठीक युवावस्था में परलोक सिधार गई। इस गम्भीर चोट ने लाला जी के दिल की दशा बदल दी। लाला जी अनुभव करने लग गये कि अन्त में संसार में स्थिरता किसी की नहीं। अब लाला छज्जू मल जी ने अपना यह ढंग बना लिया है कि कहीं धर्मचर्चा हो, कहीं जाति के गीत गाये जाते हों, आप वहां अवश्य उपस्थित होते हैं। जब से देश के अन्दर वर्त्तमान राजनीतिक आन्दोलन आरम्भ हुआ है अमृतसर में कोई ऐसा जलसा नहीं होता कि जिस में आप नहीं पधारते।

२

दस अप्रेल का दिन अमृतसर निवासियों को खूब स्मरण है। उस दिन पुलपर निहत्थे आदमियों पर गोली चली थी। लाला छज्जूमल ने अपनी आंखों से देखा कि एक सुन्दर नवजवान गोली खाकर धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा। लाला जी उसके समीप गये और उस को पानी आदि पूछा। उस वीर ने कहा, कि लाला जी मेरे बचने की तो अब कोई आशा नहीं। सामने मेरे जो भाई घायल हुए हैं उनकी सेवा शुश्रूषा अच्छी तरह कीजिये। शायद फिर जीवित हो जायँ। मुझे मेरी दशा पर छोड़ दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं अत्यन्त प्रसन्नता से यमराज का ग्रास बना जाता हैं। भगवान का मुझ पापीपर असीम उपकार है कि मेरा देह देशके काम आया। इससे उत्तम मृत्यु मरने की इच्छा किसे हो सकती है। नवयुवक ने अत्यन्त जोश से उच्च स्वर से एक बार "भारतमाता की जय," "बन्देमातरम्" का जयकार लगाया और बस ये इसके अन्तिम सांस थे। दम तोड़ दिया। लाला छज्जू मल ने जब यह घटना देखी तो आँखों में आंसु भर आये और परमात्मा से प्रार्थना की कि परमेश्वर सचमुच मृत्यु हो तो इसी प्रकार की। प्रति दिन लोग विविध प्रकार की बीमारियों से मरे जाते हैं परन्तु उस मृत्यु में क्या आनन्द है। प्रतिष्ठा के योग्य मृत्यु वही है जो जाति और देश के काम आवे। लाला छज्जू मल ने अन्य लोगों की सहायता से उस नौजवान को एक ओर किया और उसके अन्त्येष्टि संस्कार का प्रबन्ध किया।

३

अमृतसर में वह दिवस प्रलय के थे। लोग घबराये हुए थे। हर एक व्यक्ति सहमा हुआ था। सिरों पर वायुयान मंडला रहे हैं, भयंकर किंवदन्तियां फैली हुई हैं। बड़े बड़े साहसी पुरुष भी घरों के अन्दर दबक कर बैठे हैं। दुकानें बन्द, काम काज का नाम नहीं। परन्तु छज्जूमल बड़े साहस से सब मृतक अर्थियों के साथ जाते हैं। ज़खमियों की मरहम पट्टी का प्रबन्ध भी यथाशक्ति करते हैं। एक तो योंहीं उनके चित्त में वैराग्य पैदा हो चुका था, परन्तु जब से उस नौजवान की वीरता की मृत्यु को देखा है तब से तो साहस सौगुणा बढ़ गया है। अब वह अपना सारा समय देश सेवा के कार्य्यों में लगाते हैं।

४

बैशाखी का दिन बड़ा पवित्र दिन है। बैशाखी हिन्दुओं के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिये विशेषता रखती है, और अमृतसर में तो मण्डियों और श्रीदरबार साहब के कारण से खास रौनक़ होती है। दूर दूर से दर्शनों के लिये लोग पहुंचते हैं। परन्तु इस बार बाज़ार तो सुनसान पड़े हैं। सर्वथा जङ्गल का दृश्य बना हुआ है।

लाला छज्जूमल लगभग दिन के एक बजे एक मृतक की अर्थी के लिये अपना कर्त्तव्य समाप्त करने के बाद अभी घर पहुंचे हैं। कई दिन की लगातार दौड़धूप, गरमी तथा उपवास से स्वास्थ्य कुछ बिगड़ सा गया है। धर्मपत्नी को आज्ञा दी कि आज बैशाखी है, कुछ तो खाने में पहिले से विशेषता होनी चाहिये। देवी ने पकौड़े बनाने का प्रबन्ध किया। दिल के बहलाने के लिये स्वयं लालाजी भी साथ सम्मिलित हो गए। सब सामान तय्यार ही हुआ था कि नीचे से एक आदमी ने लाला साहब को पुकारा।

लाला साहब ने झरोखे में से देखा कि एक नौजवान उन्हें नीचे बुला रहा है। पूछने पर उसने कहा कि आप तो यहां बैठे हैं और शहर में तो शस्त्रधारी सिपाही तोपों और बन्दूकों सहित चक्कर लगा रहे हैं; न जाने क्या घटना हो जायगी ? लाला-जी ने तुरन्त सिर पर पगड़ी रखी और चलने को तय्यार हो गए। धर्मपत्नी ने कहा कि बड़े चाव से आप ने खाने का प्रबन्ध किया था अब आप चले जाते हैं। लालाजी ने उत्तर दिया कि देश और जाति के लिए लोग तो प्राण बलिदान कर रहे हैं तो मैं क्या इतने के भी योग्य नहीं हूं कि जाकर पता तो लगाऊँ कि क्या मामला है ? यह कहते हुए लालाजी सीढ़ियों से उतर गए। एक बाज़ार के बाद दूसरा बाज़ार और उसके बाद तीसरे में गए परन्तु उन्हें तो कोई शस्त्रधारी सिपाही दिखाई नहीं दिया। चक्कर लगाकर घर पहुंचे; बहुत थके मांदे, मुंह हाथ धोया और जो खाना तय्यार था उसे सामने लेकर बैठ गए। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खाए कौन ? चित्त इस प्रकार की प्रतिदिन की घटनायें देखकर अत्यन्त उदास हो चुका था। आज तो थकावट भी पहले से अधिक थी। दो चार ग्रास गले से उतरे होंगे कि जी भर गया। ठंडा पानी पीकर चारपाई पर लेट गए। कुछ थकावट, कुछ शोक मिलजुल कर अवस्था गिरी हुई तो थी ही लेटते ही आंख लग गई।

धर्मपत्नी जी पास बैठी पंखा झलती रहीं ताकि गर्मी के कारण नींद खुल न जाय।

५

कुछ मिनिट ही गुज़रे होंगे कि यकायक बाज़ार में ढिंढोरे की आवाज़ सुनाई दी। लाला छज्जूमल भी चौंक उठे और खिड़की में जा उपस्थित हुए। एक छोटा लड़का टीन के डब्बे को ज़ोर ज़ोर से पीट रहा है और यह घोषणा कर रहा है कि जलयांवाले में एक शानदार जलसा होगा जिसमें लाला कन्हैयालाल जी वकील व्याख्यान देंगे। लड़के ने देशवासियों से बड़े मार्मिक शब्दों में अपील की कि वे अवश्य वहाँ पहुंचें, लड़के के मुंह में यह शब्द किसी और के डाले हुए स्पष्ट प्रतीत होते थे। क्योंकि वाक्यों की रचना बतला रही थी कि लड़के को किसी ने सिखाया है। लाला छज्जूमल के दिल में उमंग पैदा हुई कि वहां अवश्य पहुंचना चहिये। सुनना चाहिये कि लाला कन्हैयालाल जी क्या कथन करते हैं।

कपड़े पहिन कर तय्यार हो गये और साथियों के साथ बात-चीत करते लालाजी जलयांवाले बाग में पहुंच गये।

बाग में एक भारी भीड़ इकट्ठी हुई है। सब लोग इसी विचार से आये हैं कि वृद्ध नेता लाला कन्हैयालाल जी के विचार सुनें। वहां जाकर उन्हें पता लगा कि यह तो एक धोखा था। यह तो

Sri Pratap Singh Library Srinagar
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी मित्रवेश में शत्रु की चालाकी थी। परन्तु जब आ गये हैं तो देखें तो सही होता क्या है। अब लौटकर क्या जाना है? एक दो ने यहांतक कहा कि इसमें कोई रहस्य न हो और कोई और आपत्ति आने वाली न हो। परन्तु सब ने इस विचार को व्यर्थ की कल्पना कह कर उनकी हँसी उड़ाई।

सायंकाल के ५॥ बजे हैं कुछ लोग हम में से उठ कर चल पड़े। आस पास के लोगों को संदेह अवश्य पैदा हुआ परन्तु हौसला किसी का कम नहीं हुआ। यकायक क्या देखते हैं कि धड़ाधड़ शस्त्रधारी सिपाही बाग में प्रगट हो गये। लोगों का माथा ठनका कि अवश्य दाल में काला है। परन्तु चुप बैठे देखते रहे। पलक झांपते ही गोलियां बरसनी शुरू हो गई। वह ठंढा हो गया, वह गिर पड़ा, वह धड़ाम से चित हो गया। कुछ मिनटों में ही महाप्रलय का दृश्य दिखाई देगा। किसकी लेखनी में सामर्थ्य है कि उस समय की दुर्घटना का चित्र खींच सके। कोई महान लेखक भी उस बीभत्स दृश्य को चित्रित करने में समर्थ न हो सकेगा।

लाला छज्जूमल अपने स्थान पर बैठे थे। पीछे से जो लोगों की भीड़ आयी तो इन्हें ढकेल कर कहीं से कहीं ले गई। उस अवस्था में भी यह लोगों को हौसला दे रहे थे कि यकायक एक गोली छाती में आ लगी। छाती पकड़ कर ज़मीन पर बैठ गये। बैठते ही प्राण निकल गये और ठंढे हो गये। मरते मरते केवल यह ध्वनि मुंह से निकली कि भारत माता की जय होगी और इस प्रकार निर्दोषों पर गोली चलाने का परिणाम मातृभूमि के लिये रसायन का कार्य करेगा।

६

इधर देवी जी घर में खाना पका रही हैं। बिना कारण ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुछ दिल बैठा साजा रहा है। लाख हौसला करती हैं परन्तु कोई अदृश्य शक्ति दिल को मसोस रही है। यद्यपि बाह्यदृष्टि से वे खाने की तय्यारी में लगी हैं परन्तु वस्तुतः हृदय पतिदेव की ओर लगा हुआ है। देवीजी के मन में संकल्प उठ रहे हैं कि हो न हो पतिदेव पर कुछ विपद अवश्य आई है। मेरा हृदय साक्षी दे रहा है कि मुझ पर कोई पहाड़ ही टूटने वाला है। हे परमेश्वर, यह क्या बात है? वेद के मन्त्र पढ़े, गीता का पाठ किया। आस पास वालों से दिल बहलाने का यत्न किया। पर सब व्यर्थ। विचारों की उधेड़बुन में ऐसी निमग्न हुईं कि चूल्हे पर रक्खी दाल की सुध न रही। वह जब जलने लगी और उसकी गन्ध नाक तक पहुंची तो पता लगा कि क्या हो रहा है। इतने में नीचे से आवाज़ आई। मां जी, मां जी, अनर्थ हो गया। क्या हुआ बेटा? मां जी, जलयांवाले बाग़ में बिना कारण निहत्थों पर गोली चल गई। ओह, मेरा सुहाग लुट गया, मेरा घर बरबाद हो गया। मैं कहीं की न रही। मेरा इस संसार में अब कौन सहारा है। मुझ अबला का आश्रय जाता रहा। हाय, मैं क्यों न मर गई। मां जी, आप ऐसा क्यों कह रही हैं? इसका क्या प्रमाण है कि लालाजी को गोली लगी है? बेटा, मेरा दिल गवाही दे रहा है कि प्राणनाथ अब जीवित घर लौटकर न आयेंगे।

देवीजी ने तुरन्त उलटे सीधे वस्त्र पहने और बाग़ को रवाना हो गईं। पर्देवाली स्त्री, घर से कहीं बाहर अधिक निकली नहीं। इस पर भी आंखों के आगे अंधेरा छाया हुआ। कोई सहायक भी नहीं। अकेली ही बाग़ की ओर रवाना हो गईं। रास्ता विदित नहीं। भटकती, गिरती, पड़ती हुई किसी न किसी तरह बेचारी वहां पहुंच गई।

वहां का भयानक दृश्य देखकर देवीजी तो क्या बड़े से बड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेर-दिल भी मूर्च्छित हो जाता। सैकड़ों मनुष्य जो पल भर पहिले कितने सुन्दर जवान थे अब धूल पर लोट रहे हैं। कहीं कोई पानी की पुकार कर रहा है। कहीं कोई स्त्री पुत्रों की याद में गिड़गिड़ा रहा है। कोई मारे दर्द के बेजान हुआ जा रहा है। किसी के अन्दर से खून पानी की तरह बह रहा है। कोई एक दूसरे पर गिर रहा है। ओह! परमेश्वर, वह समय किसी को देखना नसीब न हो। आदमी जवान, बूढ़े, बच्चे, कमज़ोर सब इन्हीं गोलियों के कारण बुरी अवस्था में तड़प रहे हैं। जो इस पंच भौतिक देह को छोड़ गये वह तो मौन हैं। आह कितने मौन हुए मैं। मनुष्य के जीवन का भी क्या ठिकाना है। अभी कुछ मिनट बीते तो प्रसन्नवदन बुलबुलें थीं। बोलतीं थीं, हंसती थीं, चह-कती थीं। अभी आन की आन में मृत्यु के नशे ने कितना मदमस्त कर दिया है। वही पत्नी कि जिसके लिये इतना प्यार था अब सिरहाने खड़ी रोरही है परन्तु कुछ असर नहीं। पिता अच्छा नहीं लगता। माताके लिये प्यार नहीं। बच्चोंकी भोलीभाली बातें नहीं भातीं। भगवानकी माया है।

देवीजीने अब पड़ताल शुरू की। आंखोंसे आंसू जारी हैं, हृदय शून्य है परन्तु खोज जारी है। ढूंढ़ते ढूंढ़ते लालाजी को पा ही लिया है। घुटने छाती के साथ लगे हुए सिर झुका हुआ एक कोने में लालाजी को पड़े पाया। ममता भी क्या वस्तु है! सामने दिखाई दे रहा है कि लालाजी परलोक सिधार गये परन्तु देवीजी को विश्वास नहीं आता। कभी छाती पर हाथ धरती है और कभी आंखें खोल कर देखती है। आस पांस खड़े हुए पुरुषों को पुकार पुकार कर पूछती हैं कि देखो तो सही कहीं कोई सांस बाकी तो नहीं है। मां जी, वह पदार्थ जिसकी तुम अभिलाषा करती हो अब न मिलेगा, डायर की गोली ने तुम्हारे पति को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुछ दिल बैठा साजा रहा है। लाख हौसला करती हैं परन्तु कोई अदृश्य शक्ति दिल को मसोस रही है। यद्यपि बाह्यदृष्टि से वे खाने की तय्यारी में लगी हैं परन्तु वस्तुतः हृदय पतिदेव की ओर लगा हुआ है। देवीजी के मन में संकल्प उठ रहे हैं कि हो न हो पतिदेव पर कुछ विपद अवश्य आई है। मेरा हृदय साक्षी दे रहा है कि मुझ पर कोई पहाड़ ही टूटने वाला है। हे परमेश्वर, यह क्या बात है ? वेद के मन्त्र पढ़े, गीता का पाठ किया। आस पास वालों से दिल बहलाने का यत्न किया। पर सब व्यर्थ। विचारों की उधेड़बुन में ऐसी निमग्न हुईं कि चूल्हे पर रक्खी दाल की सुध न रही। वह जब जलने लगी और उसकी गन्ध नाक तक पहुंची तो पता लगा कि क्या हो रहा है। इतने में नीचे से आवाज़ आई। मां जी, मां जी, अनर्थ हो गया। क्या हुआ बेटा ? मां जी, जलयांवाले बाग़ में बिना कारण निहत्थों पर गोली चल गई। ओह, मेरा सुहाग लुट गया, मेरा घर बरबाद हो गया। मैं कहीं की न रही। मेरा इस संसार में अब कौन सहारा है। मुझ अबला का आश्रय जाता रहा। हाय, मैं क्यों न मर गई। मां जी, आप ऐसा क्यों कह रही हैं ? इसका क्या प्रमाण है कि लालाजी को गोली लगी है ? बेटा, मेरा दिल गवाही दे रहा है कि प्राणनाथ अब जीवित घर लौटकर न आयेंगे।

देवीजी ने तुरन्त उलटे सीधे वस्त्र पहने और बाग़ को रवाना हो गईं। पर्देवाली स्त्री, घर से कहीं बाहर अधिक निकली नहीं। इस पर भी आंखों के आगे अंधेरा छाया हुआ। कोई सहायक भी नहीं। अकेली ही बाग़ की ओर रवाना हो गईं। रास्ता विदित नहीं। भटकती, गिरती, पड़ती हुई किसी न किसी तरह बेचारी वहा पहुंच गई।

वहां का भयानक दृश्य देखकर देवीजी तो क्या बड़े से बड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शेर-दिल भी मूर्च्छित हो जाता। सैकड़ों मनुष्य जो पल भर पहिले कितने सुन्दर जवान थे अब धूल पर लोट रहे हैं। कहीं कोई पानी की पुकार कर रहा है। कहीं कोई स्त्री पुत्रों की याद में गिड़गिड़ा रहा है। कोई मारे दर्द के बेजान हुआ जा रहा है। किसी के अन्दर से खून पानी की तरह बह रहा है। कोई एक दूसरे पर गिर रहा है। ओह! परमेश्वर, वह समय किसी को देखना नसीब न हो। आदमी जवान, बूढ़े, बच्चे, कमज़ोर सब उन्हीं गोलियों के कारण बुरी अवस्था में तड़प रहे हैं। जो इस पंच भौतिक देह को छोड़ गये वह तो मौन हैं। आह कितने मौन हुए हैं। मनुष्य के जीवन का भी क्या ठिकाना है। अभी कुछ मिनट बीते तो प्रसन्नवदन बुलबुलें थीं। बोलतीं थीं, हंसती थीं, चहकती थीं। अभी आन की आन में मृत्यु के नशे ने कितना मदमस्त कर दिया है। वही पत्नी कि जिसके लिये इतना प्यार था अब सिरहाने खड़ी रोरही है परन्तु कुछ असर नहीं। पिता अच्छा नहीं लगता। माताके लिये प्यार नहीं। बच्चोंकी भोलीभाली बातें नहीं भातीं। भगवानकी माया है।

देवीजीने अब पड़ताल शुरू की। आंखोंसे आंसू जारी हैं, हृदय शून्य है परन्तु खोज जारी है। ढूंढते ढूंढते लालाजी को पा ही लिया है। घुटने छाती के साथ लगे हुए सिर झुका हुआ एक कोने में लालाजी को पड़े पाया। ममता भी क्या वस्तु है! सामने दिखाई दे रहा है कि लालाजी परलोक सिधार गये परन्तु देवीजी को विश्वास नहीं आता। कभी छाती पर हाथ धरती है और कभी आंखें खोल कर देखती है। आस पास खड़े हुए पुरुषों को पुकार पुकार कर पूछती हैं कि देखो तो सही कहीं कोई सांस बाकी तो नहीं है। मां जी, वह पदार्थ जिसकी तुम अभिलाषा करती हो अब न मिलेगा, डायर की गोली ने तुम्हारे पति को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ठंडा कर दिया है। अब कोई वस्तु गर्म न कर सकेगी। जान गई हुई भी कभी लौट कर आई है? अब दुःख न करो जो होना था, हो गया।

जो होना था हो गया अब कुछ नहीं बन सकता। यह सोच देवीजी ने अपने दिल को ढाढस दिया। आंचल से आंसू पोंछे। अपने पति की आत्मा के लिये भगवान से प्रार्थना की और यह कहा कि भगवान को धन्यवाद है कि मेरा पति देश के लिये बलिदान हुआ है। मरना तो सब ही को है आज नहीं तो कल। परन्तु कैसी मृत्यु प्रतिष्ठा के योग्य है। मेरे पति की भगवान ने सुन ली। पति जी कहा करते थे कि हे परमेश्वर मृत्यु हो तो ऐसी जिसमें नाम रहे, जो देश और जाति के लिये हो। यद्यपि मैं अब जानती हूँ कि मेरा इस जगत् में कोई न रहा, सर्वथा निराश्रय हो गई। एक दुःख तो इनके आश्रय पर सह लिया था पर यह अन्तिम चोट तो बहुत गहरी में। परन्तु कोई बात नहीं। वही भगवान जिसने परीक्षा की अग्नि में डाला है कुन्दन बनाकर स्वयं निकालेगा। देशभक्ति कोई बच्चों का खेल तो नहीं है? जाति और देश के लिये प्यार कोई हर एक का काम तो नहीं है? प्राण न्योछावर करना तो इस पाठशाला का क ख है।

पतिदेवता को गोद में लिया और बैठ गई। आंसुओं की झड़ी लगी हुई है। एक हाथ से आंसुओं को पोंछ रही है और दूसरे हाथ से नाड़ी टटोल रही है। पास खड़े हुए एक दो आदमियों से प्रार्थना की वे कहीं से चारपाई लायें ताकि लाला जी को घर ले जावें। उन लोगों ने स्वीकार कर लिया। देवी जी अब इनकी प्रतीक्षा में बैठी हैं। परन्तु कोई न आया। घड़ियाल अपनी सूचना देता गया और सांसारिक भोग विलासों में फंसे हुए लोगों को स्मरण करता रहा कि यह संसार अनित्य है इसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी को स्थिर रहना नहीं। बीता समय फिर न लौटा, न लौटेगा, कुछ करना है तो कर ले। समय इसी प्रकार बीतता गया आठ बज गये। देवी की आशा टूट गई। अब कौन आवेगा। ढिंढोरा है कि आठ बजे सायंकाल के बाद जो बाहर निकलेगा गोली से मार दिया जावेगा। कौन माई का लाल इस समय साहस करेगा। देवी घोर चिन्ता में थी कि क्या किया जाये कोई न आया तो क्या होगा? इतने में इसने दो तीन आदमियों को लालटेन लिये हुए आते देखा, ज़रा हौसला बंधा कि शायद मेरी सहायता के लिये आ रहे हैं। इन लोगों ने एक एक का मुंह देखा और सोने तथा चांदी के आभूषण, घड़ी और अन्य मूल्यवाली वस्तुएं जो इन्होंने देखीं इनसे अपने जेब भरे। मां जी ने इन्हें पुकारा, लेकिन इन्हें काम से फ़ुरसत नहीं। बहुत बार पुकारे जाने पर वह समीप आये। मां जी ने कहा यदि चारपाई और दो आदमियों का प्रबन्ध हो जाये तो वह अपने पतिदेव को घर ले जायें। सारी रात यहां बैठे रहना अति कठिन है। इन पाषाण-हृदयों ने उत्तर दिया कि इस काम के लिये नहीं आये हैं हमको और काम जो इससे अधिक आवश्यक और लाभदायक है, करना है। देवी का साहस टूट गया। चकित है कि हे ईश्वर यह क्या चक्र है, मुरदों का ढेर लगा हुआ है। ज़ख़्मी कराह रहे हैं कोई ज़ोर ज़ोर से चीख रहा है। एक दो भैंसें गायें भी मारे दर्द के चिल्ला रही हैं। ख़ून का तालाब बना हुआ है। मैं अकेली स्त्री जाति न कोई अपना न बेगाना। अपने मृतक पति की लाश गोद में लिये कब तक बैठी रहूँगी? इतनी लम्बी भयानक रात कैसे बीतेगी? सच है विपत्ति कभी अकेले नहीं आती। साठ हजार बलाओं को लेकर आती है। यदि पतिदेवता से जुदा होना ही था तो कम से कम इस बला से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो छुटकारा मिलता। एक ठंडी सांस खींची और समीप था कि मूर्च्छित होकर गिर पड़े कि अपने दिल को संभाला और यह निर्णय किया कि चलो शहर में चलकर तलाश करें। शायद भगवान के नाम पर कोई मनुष्य दया करके इस काम के लिये तय्यार हो जाय।

रात अंधेरी है। आकाश बादलों से घिरा हुआ है। चन्द्रमा भी इस अत्याचार को देखने का सामर्थ्य न रखते हुए इधर उधर अपने मुंह छिपाता रहता है। बाजार तो दिन को भी सूने रहा करते थे। रात के समय तो कोई जीवजन्तु भी चलता फिरता दिखाई न पड़ता। जी कड़ा करके चल पड़ी। थोड़ी दूर ही गई थी कि एक मकान में धीमी सी रोशनी दिखाई दी। यह भी भाग्यों से; क्योंकि उन दिनों तो कोई चिराग भी न जलाता था कि कहीं कोई बिपत्ति न टूट पड़े। मकान के नीचे खड़ी हो गई। ऊपर से एक आदमी ने आवाज दी—कौन है माई, तू कौन है, और इस समय तू कहां अकेली बाज़ारों में फिर रही है। तुझे शायद पता नहीं है कि अमृतसर में अब डायरशाही का राज्य है। जो किसी सन्तरी सिपाहीने तुझे देख पाया तो गोली से उड़ा दी जायगी। माई ने कहा, भाई गोली से उड़ा दिये जाने की क्या चिंता है। अपना पृष्ठपोषक, अपना सहारा, अपना माल खजाना तो सारा गोली का शिकार हुआ। अपना सारा मालमता तो उड़ा चुकी हूं जो मैं अभागी भी गोली का निशाना बना दी जाऊं तो कोई चिन्ता नहीं। पर इस बात को जाने दो। मैं प्रार्थना करती हूं कि मेरे साथ दो आदमी कर दो। मेरे पति की लाश को उठा लायें मैं साथ कंधा दूंगी। मेरा दिल नहीं चाहता कि वे सारी रात वहां पड़े रहें। नौजवानने उत्तर दिया-माई कोई अक़्ल की बात करो। कौन इस समय तुम्हारे साथ जाय, यह असम्भव है। मेरा पिता ज़ख्मी पड़ा हुआ है। मैं इसकी सेवा शुश्रूषा में लगा हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हूँ। एक मिनट के लिये इनको छोड़ कर जाना मेरे लिये असम्भव है। चारपाई मेरे पास मौजूद नहीं। परन्तु मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि कि तुम्हारा यह प्रयत्न व्यर्थ है। कोई भी इस समय तुम्हारे साथ न जा सकेगा और न जायगा। तुम जाओ विश्राम करो, प्रातःकाल जो उचित होगा देखा जायगा।

माई इस उत्तर से निराश हुई। परन्तु उसने यह उचित समझा कि एक बार फिर प्रयत्न करें। माई फिर आगे बढ़ी। बाज़ार में एक वृद्ध चारपाईपर सोया पड़ा था। पांव की आहट से वह चौंक उठा और पुकारा कौन है? माई ने अपनी कथा सुनाई। वृद्ध को दया अवश्य उपजी परन्तु उसमें साहस न पड़ा कि वह ऐसे समय में माई की सहायता करे। इसके पास दो नौजवान सोये थे उसने उन्हें जगाया। माईजी ने इनकी लाख मिन्नत की, लाख खुशामद की, लाख लालच दिया पर किसी तरह वे न माने। माईजीने अपना आंचल फैलाकर कहा कि पुत्रो, मैं तुम से भीख मांगती हूँ। पतिदेवता चले गये मेरा कोई नहीं है, बेटा नहीं, बेटी नहीं, देवर नहीं, भाई नहीं। सर्वथा निस्सहाय हूँ, सर्वथा बेबस हूं। तुम अपनी माता जानकर दया करो। चलो मेरे साथ चलो। चलो मेरी सहायता करो। अबला की सहायता व्यर्थ नहीं जाती। जो और कुछ नहीं तो तुम्हारे लिये मङ्गल-प्रार्थना करूंगी। चलो ईश्वर के मार्ग में चलो। भगवान साक्षी है, उसकी दोहाई है। चलो देखो मैं कितनी लाचार हूँ, कितनी दुखिया हूं। दया करो, करुणा करो। तुम्हारी कठिनता वही भगवान घट-घट का वासी दूर करेगा कि जिसके नामपर मैं तुमसे भीख मांगती हूं। जो अनुनय विनय संभव थी, की गई परन्तु सब व्यर्थ। इन नौजवानों के दिल में हौसला न बन्धा। सच है इन दिनों कुछ बात ही ऐसी थी। अपने बेगाने हुए थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सम्बन्धी आंख चुराते थे। उपकारों से दबे हुए इस समय तोताचश्म बने हुए थे। खून सफ़ेद हो चुका था। भाई को भाईने छोड़ दिया था। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या है कि उन नौजवानों ने मां जी की प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया। माई अत्यन्त निराश हुई। उसे महान क्लेश हुआ। भारतमाता की आज यह दशा हो गई है कि दुखिया माता के कहनेपर नौजवानों ने इतना भी ध्यान न दिया। कभी वह भी समय था कि एक स्त्री के शब्द पर सिर कटवा लेते थे और कभी आज दिन है कि एक अबला की दुहाई को इस तिरस्कार से देखा जाता है कि साधारण से काम से भी अपनों बेगानों मित्र प्यारों ने निषेध किया। देवीने सोचा कि बस यही भय, साहसशून्यता हमारी पराधीनता का कारण है।

आंखों से आंसू टपक पड़े। शोक उमड़ आया। तबीयत अति उदास होगई। फिर वापिस लौटकर उसी बाग़ में आ पहुंची। पतिजी की लाश को गोद में ले लिया और सारी रात इसी तरह लिये बैठी रही। किसी का डर नहीं, किसी की चिन्ता नहीं अब और इससे अधिक क्या हानि पहुंच सकती है। मेरा और कौन है कि जिसके लिये मैं जीवित रहूं? मुझे अब किसका मुंह देखकर प्रसन्न होना है। मेरे लिये आनन्द और सुख के सारे द्वार बन्द हैं। गोली के डर से अपने पति की लाश का तिरस्कार कराऊं जानवर आकर लाशों की बेइज्जती करें और मैं घर में आराम करूं? यह कभी नहीं हो सकता। अन्त में रात का अन्धकार दूर हुआ और प्रातःकाल की उषा के दर्शन हुए। देवीजी प्रातः-कालतक हिली नहीं बिलकुल धैर्य्य और साहस से सारी रात गुज़ार दीं। प्रातःकाल लोगोंने आकर उनको उनके पति से अलग किया। देवी का सारा शरीर शिलावत् हो गया था। अर्धमृत हो गई थी। लोगोंने उनको संभाला। मुंह में पानी डाला,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुलाब छिड़का। होश में लाये। लालाजी का संस्कार यथोचित रीति से किया।

देवीजी की कहानी जिस जिसने सुनी यही कहा कि इस देवी ने अमृतसर की लाज रख ली है। अन्यथा अमृतसर के साधारण पुरुषोंने जिस डरपोकपने और कमसाहसी का सबूत दिया इससे अमृतसर लज्जित हैं।

८

देवीजी अब जातिसेवा में संलग्न हैं। जो कुछ बन सकता है जाति और देश के लिये करती रहती हैं। इनका सारा समय इन्हीं बातों में व्यय होता है। जलयांवाले बाग़ के फण्ड में आपने पांच सौ रुपये की राशि भी दान दी है।

धन्य है ऐसी देवी, ऐसी देवी को नमस्कार हो। ऐसी ही देवियोंके सहारेपर तो जातीय आंदोलन की नींव रक्खी जा रही है। जो देश इस गिरी हुई दशा में ऐसी देवियां उत्पन्न कर सकता है इसका भविष्य शानदार होने में किसे संदेह हो सकता हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"देशसेवाकी भेंट"

विशन देवी की आयु कोई ४० वर्ष की होगी परन्तु समयके थपेड़ोंने इसे नियत समय से बहुत पहले बूढ़ी बना दिया है। बाल सारे सफेद हो चुके हैं और चेहरेपर वलियां बहुत अधिकता से विद्यमान हैं। आकृति से कोई यह कह ही नहीं सकता कि यह ४० वर्ष की होगी। हर एक यही अनुमान करेगा कि यह ५०, ६०, के लगभग आयु की होगी। बेचारी का वेश भी अत्यन्त मैला कुचैला है फटे'पुराने कपड़ों से तन की दरिद्रता ढांप रही है। बेचारीमें इतना सामर्थ्य कहां कि अच्छा वेश शरीरपर धारण कर सके। इस बेचारी की आंखें रो रोकर और आपत्तियां झेल झेलकर बहुत खराब हो गयी हैं। अब तो इसका यह ढंग है कि दूसरों के घर में काम काज करने से जो फुर्सत मिलती है उसे चारपाईपर ही गुज़ारती है। किसी से बातचीत नहीं; बोलचाल नहीं; हंसी तो अब इसके होंठपर आती ही नहीं। कहीं विवाह हो, या शोक, यह अब शोकरहित है। दुनियां की बातें अब इसे ज़रा नहीं भातीं। अपने दिल ही दिल में विचारों की लहर में निमग्न रहती है। आस पास के लोग गवाह हैं कि दो साल से अधिक हो चुके हैं कि इसने किसी खुशी में हिस्सा नहीं लिया। दिमाग ठिकाने पर नहीं रहा। पिछले कुछ समय से तो स्वास्थ्यने भी जवाब दे दिया है। काम काज करने की भी हिम्मत नहीं रही। अत्यन्त चिंतित और उदास रहती है। परन्तु पेट की खातिर बाधित है कि दूसरों के घर जाकर उनका काम धन्धा करे। पेट भी क्या बला है!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके लिए मनुष्य को किन किन विपत्तियों का सामना नहीं करना पड़ता ? सच तो यह है कि विशनदेवी अब जीना भी नहीं चाहती परन्तु जान के साथ ममता इतनी है कि मरा भी नही जाता। पेट के लिये कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। एक दिन वर्षा हो रही थी, यह काम करके वापिस लौट रही थी सायं समय था, सर्दी कुछ ज्यादा थी, कपड़े तो इस के तनपर नाममात्र ही थे, दुःख सह सहकर दुर्बल तो यह हो ही चुकी थी, वर्षा और सर्दी ने अपना असर दिखाया। घर पहुंचते ही पहुंचते बीमार हो गई, कंपकंपी आई, बुखार चढ़ा, छाती में दर्द शुरू हो गया। दरिद्रता भी क्या विचित्र वस्तु है ? गरीबी भी दुनियां में क्या चीज है ? लाखों वाले दीन दुःखियों के कष्ट का क्या अनुमान कर सकते हैं ? आँख के इशारे पर सैकड़ों रुपये पानी की तरह बहा देने वाले क्या जानते हैं कि उन्हीं के नीचे परमात्मा की ऐसी सृष्टि बसती है कि जिन के पास खाने को रोटी का टुकड़ा नहीं और पहिनने को चिथड़ा नहीं है। जो बीमार हो जायं तन ढांपने के लिये रजाई नहीं है। दवाई के लिए दाम नहीं, सेवा के लिए परिचारक नहीं और जो मर जायँ तो लाश उठाने वाला कोई नहीं। तंग और अंधेरी कोठरियों में कि जहां सूर्य को प्रवेश करते डर मालूम होता है दरिद्र लोग अपने दिन काट रहे हैं। न गरमियों में सुखचैन, न सर्दियों में आराम है। भगवान की माया है कि कहीं तो इस प्रकार भोग और विलास और कहीं इस कदर दारिद्रय और कष्ट।

विशन देवी के पास एक फटा पुराना कम्बल तथा एक फटी सी रजाई है। इस ने तन को इन से ढाँपा परन्तु जब सर्दी फिर भी दूर न हुई तो चुप हो कर लेट रही। क्या कर सकती थी ? लोगों में एक दूसरे के लिए प्रेम कहां कि वे विपत्ति के समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी की कठिनता दूर कर दें और किसी को सहारा दें। किसे पुकारें ? दरिद्र सहायता कर नहीं सकता और अमीर की छाती में तो दिल के स्थान में पत्थर रखा है। विवश होकर दम रोक कर पड़ी रही। कुछ देर सर्दी लगी पर अन्त में सर्दीको स्वयं ही लज्जा आई और इसने बेचारी विशन देवीको छोड़ दिया किन्तु बुखार बहुत तेज हो गया, चित्त में घबराहट पैदा हो गई, यदि किसी अमीर आदमी को जरा भी तकलीफ पैदा होती है तो सैकड़ों आदमी सहायता के लिए आ उपस्थित होते हैं किन्तु शोक ! कि गरीबों का कोई सहायक नहीं। कोई नहीं कह सकता कि उनके साथ क्या गुज़रती है। इतना बुखार जो किसी अमीर को होता तो अब तक दर्जनों डाक्टर वैद्य इकट्ठे हो जाते और बीसियों इलाज बुखार के कम करने के लिए किये जाते। किन्तु बेचारी विशन देवी पड़ी है और कोई इतना नहीं करता कि उसे दो घूंट पानी पिला दे।

सारी रात विशन देवी इसी अवस्था में पड़ी रही। कभी मूर्च्छित हो जाती थी और कभी फिर होश में आजाती थी। छाती के दर्द के मारे बहुत लाचार थी। बड़े ज़ोर से स्थान को दबाती तो कुछ क्षण आराम सा हो जाता परन्तु दर्द में असल में कमी नहीं हुई। ज्यों त्यों करके रात काटी। दर्वाजे की आड़में से प्रकाश की झलक दिखाई दी। विशन देवी के दिल पर इस प्रकाश का कोई बहुत असर नहीं हुआ। चूंकि वह बेचारी जानती थी कि इसकी हालत में दिन रात में कोई लम्बा फर्क नहीं है वह अपने आप को बेकस जानती थी और सचमुच अपने आप को बिलकुल निरसहाय मानती थी। उसे यह विश्वास था कि दिन में भी उस की खबर लेने के लिए किसी को फुर्सत न थी।

अमृतसर में 'सर्वहितकारिणी सभा' के नौजवान बड़ा उत्तम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

काम कर रहे हैं। अपने सामर्थ्य से बढ़कर लोगों की विपत्ति दूर करने के लिये तय्यार रहते हैं। इनके अधीन एक अच्छा अस्पताल काम कर रहा है जिस में रोगियों को बिना मूल्य दवाई दी जाती है और दीन दुखियों के घर डाक्टर साहब बिना फीस जाते हैं। इस सभा के नौजवान स्वयं सेवक मुहल्लों में गश्त भी लगाते हैं कि यदि कोई ऐसा रोगी हो जिसका कोई पूछने वाला न हो तो उसकी सहायता करें। संसार में से सारी विपत्ति को दूर कर देना तो एक असम्भव बात है, सर्वशक्तिमान् भगवान् भी नहीं कर सकते या करना चाहते; परन्तु फिर भी ऐसे नौजवानों का काम पर्याप्त है कि यथाशक्ति पराई पीड़ा को निवृत्त करने का पूरा यत्न करते हैं।

इसी सभा का एक स्वयंसेवक आज इस मुहल्ले में अचानक पहुंचा। जब बिशन देवी जी के मकान के नीचे से गुजरा तो उसे किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। वहीं खड़ा हो गया ध्यान से सुना तो पता लगा कि एक देवी दर्द के मारे चिल्ला रही है। आसपास के लोगों से पूछा कि क्या बात है? उन सब ने अपनी अज्ञानता प्रगट की और कहा कि यहां एक ग़रीब सी विधवा औरत रहती है। लोगों के बर्त्तन साफ़ करके अपना पेट पालती और धर्म निबाहती है! हम को तो मालूम नहीं कि कब बीमारी हुई? भला इन धन्धों में कौन पड़े। अपने घर के काम काज से फुर्सत कहां कि लोग पड़ोसियों की और फिर गरीब निस्सहाय पड़ोसियों की खबर रखें। बीमार हो गई होगी आपको यदि ज्यादा उत्सुकता है तो ऊपर चढ़ जाइये। पता लगा लीजिये मामला क्या है नौजवान ने इनमें से कइयों को कहा कि वे उसके साथ चलें परन्तु कोई तय्यार नहीं हुआ। किसी ने कोई बहाना और किसी ने कोई बहाना बनाया। हर एक ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विवशता दिखलाई और क्षमा चाही। सच है गरीब के लिये किसे सहानुभूति हो सकती है? अमीरों की खुशामद तो लोग कर सकते हैं परन्तु गरीब की बांह पकड़ने वाले संसार में बहुत नहीं हैं। जब किसी ने साथ भी जाना स्वीकार न किया तो नौजवान ऊपर चढ़ गया। इसने जा कर देखा कि एक अत्यन्त अंधेरी और गन्दी कोठरी में एक टूटी सी चारपाई पर अत्यन्त मैले कपड़ों में ढकी हुई एक स्त्री लेटी हुई है। इस कोठरी में कहीं से न ताजी हवा आती है न प्रकाश प्रविष्ट हो सकता है। नौजवान चारपाई के पास गया और माई जी से पूछने लगा कि मामला क्या है। विशन देवी एक पर पुरुष को देख कर पहिले तो घबराई परन्तु सँभल गई और नौजवान से कहने लगी :--

"बेटा! तुम कौन हो, और यहां किस लिये आए हो? मैं तो तुम्हें यहां देखकर हैरान हो रही हूँ। यह कलियुग है। यहां कोई गरीब की नहीं सुनता। लोग अपने अपने आराम में इस हद तक डूबे हुए हैं कि इन्हें इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं कि इनके समीप क्या हो रहा है। अमीर के सामने गरीब एक बूंट पानी के लिये तड़पकर मर जाय तो भी अमीर के दिल में दया पैदा न हो। मैंने संसार बहुत देखा है, मैंने बहुत दुःख सहे हैं, मुझे बहुत घृणित अनुभव प्राप्त हो चुके हैं।

नौजवान ने जवाब दिया--माता! घबराइये नहीं। मैं एक स्वयं-सेवक हूँ और आपकी सेवा के लिए उपस्थित हुआ हूं। आप कृपा करके यह बतलाइये कि मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ? मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। केवल मनुष्य की सहानुभूति करना धर्म है। इस कारण मैं आपके दुःख में सहयोग देने के लिए सम्मिलित हुआ हूँ। निस्संकोच हुक्म दें यथाशक्ति आप की सहायता में कमी न होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवी जी को जरा ढाढ़स बंधा, चित्त कुछ शान्त हुआ, उठने का यत्न किया, परन्तु स्वयं-सेवक ने हाथ से लिटा दिया।

देवी ने कहा—मेरी छाती में तीव्र पीड़ा है। सारी रात मैं इसी दर्द के कारण बेचैन रही हूं। हाथों से दबा दबा कर कभी दो मिनट का समय भी मिल गया तो फिर दर्द का वही जोर। बुखार तो इस तरह चढ़ा है कि जैसे कोई तनूर तप रहा हो। शरीर जला जाता है। आग लगी हुई मालूम देती है। सिर चकराता है। जीभ सूखी है। तबीयत घबराती है। यदि हो सके तो आप किसी डाक्टर को बुलवा लाइये ताकि मेरे रोग की पहचान हो। आराम होना तो परमेश्वर के हाथ है। यदि मेरे दिन पूरे हो चुके हैं तो इनको बढ़ा देने का सामर्थ्य किसके हाथ में है। तथापि इलाज करना तो एक आवश्यक कर्त्तव्य है। नौजवान ने अत्यन्त प्रेम से देवी जी को थोड़ा सा जल पिलाया, कपड़ा आदि ठीक किया और डाक्टर साहब को साथ लाने के लिये चला गया।

देवी जी अकेले पड़े पड़े फिर विचारों के अथाह समुद्र में डुबकियां लेने लगीं। एक सहानुभूति दिखाने वाले नौजवान को देख कर जो दिल दूसरी ओर थोड़ी देर के लिये लग गया था फिर अपनी उसी उधेड़ बुन में संलग्न हो गया। कभी दुनियां की कठोरता, कभी अपनी विपदायें, कभी मृत्यु का ख्याल, अभिप्राय यह कि विचार-धारा में देवी पड़ी रहीं कि इतने में किसी ने आवाज दी और चौकन्ना कर दिया।

नौजवान डाक्टर सहित वहां पहुंच गया। डाक्टर साहब ने सब बातें सुनीं। फिर सारे शरीर का सावधानी से निरीक्षण किया। देखने और जांच पड़ताल करने के पश्चात् डाक्टर साहब की यह सम्मति स्थिर हुई कि रोगी को निमोनिया हो गया है। वर्षा, शीत और वस्त्रों की कमी ने मिल जुलकर देवी के फेफड़ों को पकड़ लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। देवी की हालत डाक्टर साहब की दृष्टि में भयङ्कर हो चुकी है, सारी रात न कोई दवा न पथ्य। रोग को शीघ्रता से बढ़ने का अवसर मिल गया है। फिर शरीर भी दुर्बल है। इसलिये अच्छा होने का अवसर कठिन ही है। परन्तु जब तक सांस तब तक आस। डाक्टर साहब ने तत्काल इलाज आरम्भ कर दिया। दो तीन परिचारक नियत कर दिये और अपने अच्छे वालण्टियरों को निगरानी और सेवाके लिये नियुक्त कर दिया। दो तीन अच्छे कम्बल तथा एक निमोनिया जैकट भी अस्पतालसे भिजवा दी। गर्म दूधके लिये हुक्म दे दिया। तात्पर्य यह कि जो कुछ मनुष्यकी शक्तिमें है वह सब कुछ कर दिया गया। हर प्रकारका आराम और समान पहुंचा दिया गया। डाक्टर साहबका तो मनशा यह था कि किसी प्रकार रोगिणी को अच्छे मकान में ले जाया जाय। परन्तु इसपर देवीजी सहमत नहीं हुईं।

देवीजीका इलाज शुरू हो गया। सेवा भी पूरी होने लगी। डाक्टर साहब दिन में तीन चार बार आकर देखते। वालण्टियर साहब भी पूरी कोशिश से सब आज्ञाओं का अक्षर अक्षर पालन करते। पर दैव के आगे पुरुषार्थकी क्या चलती है? जब भगवानका हुक्म यह हो कि उसे लाभ न हो तो योग्य से योग्य डाक्टर और वैद्य हारकर बैठ जाते हैं। दवाई अपना असर छोड़ बैठती है और कभी २ तो उलटा प्रभाव करती है। मृत्यु का प्रश्न भगवान् ने अपने हाथ में रखा है। मनुष्य की कोई भी चाल इसपर विजय नहीं पा सकी और न पा सकेगी। देवीजी की दशा बिगड़ती ही गई। बुखार का जोर भी वैसा ही रहा, छातीका दर्द भी वैसा ही स्थिर, दिमाग पर भी असर था। अर्थात् सब चिह्नों में कमी होने के स्थानमें बढ़ती ही होती गई और रोगिणी के अच्छी होने का विश्वास जाता रहा। आशा तो पहले ही कम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थी परन्तु दिन दिन और कम होती गई और यह स्पष्ट हो गया कि ऐसी अवस्था में देवीजी का मृत्युशय्या से उठ बैठना करामातसे कम न होगा।

एक दिन दो पहर के समय डाक्टर साहब जो देखने के लिये आये दवाई आदि दी और तसल्ली भी दी। परन्तु अब देवी को भी निश्चय हो गया है कि इसके दिन इस संसार में लगभग समाप्त हो चुके हैं। वह अब कोई दमकी मेहमान है। इसलिये आज जब डाक्टर साहब जाने लगे तो देवी ने इशारेसे बैठ जानेके लिये कहा और अपनी तबीयत को संभाल कर यों वर्तालाप आरंभ किया।

डाक्टर साहब मैं आप को बहुत ही कृतज्ञ हूँ कि आप ने मेरी जान बचानेके लिये बहुत ज़ोर लगाया। आपकी और इन नौजवानों की निःस्वार्थ सेवाका पूरे तौरपर धन्यवाद करने के लिमे मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं अत्यन्त खुश हूँ कि इस संसारको छोड़नेसे पहले मैं एक परम सुन्दर दृश्य देख चुकी हूं। आजतक जो कुछ मैंने देखा था इसका मेरे दिलपर यही प्रभाव था कि दुनियाँ सब स्वार्थ की है। लेकिन आप लोगों का त्याग देख कर दिल को प्रसन्नता प्राप्त हुई है। मैं अच्छी नहीं हो सकी यह मेरे भाग्य की बात है पर आप ने कोई कसर नहीं उठा रखी। इस लिये आप की जितनी बड़ाई की जाये उतनी ही थोड़ी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भगवान आप को इसका पुण्यफल अवश्य प्रदान करेंगे और मुझ अबला की प्रार्थना अवश्य आप के लिये उत्तम फल लायेगी। परन्तु मैं आज आप से अपनी आप बीती कहना चाहती हूं। सम्भव है कि आप को इतना समय मेरे पास बैठना अनुचित प्रतीत हो लेकिन आप की हार्दिक सहानुभूति ने मुझे हौसला दिया है कि मरने से पहले मैं अपनी रामकहानी आप के कर्णगोचर करूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं एक मध्यम दर्जे के घराने में पैदा हुई थी अभी छोटी ही थी कि पिता परलोक सिधार गये। कोई बहुत जायदाद तो थी ही नहीं, जो कुछ थोड़ी बहुत थी उसे चचा ने ज़बरदस्ती सम्भाल लिया। मेरी माता बेचारी स्त्री जाति किस के साथ लड़ती, किस के साथ झगड़ती। दो चार अड़ोस पड़ोस के लोगों से कहा सुना लेकिन उन सबों ने जवाब दिया—'कौन तुम्हारी खातिर आदमियों के साथ बैर डाले। तुम्हारा देवर बड़ा ज़बरदस्त आदमी है। इसके साथ शत्रुता पैदा करना कठिन बात है, खैर, मेरी मां रो धोकर चुप हो गई। मेरी मां दूसरों का काम धंधा करके पेट पालती और मेरे लिये रोटी कमाती। शनैः शनैः मैं भी इस योग्य हो गई कि काम काज कर सकूं। परन्तु मेरी मां ने ग़रीब होते हुए भी मुझे अत्यन्त लाड़ प्यार से पाला। अपनी जान पर उसने विपत्तियां सहीं लेकिन सदा मुझे अपनी रक्षा में रक्खा पर मैंने सहायता करना उचित समझा और घर का सारा बोझ अपने कंधों पर उठा लिया। बुरी भली तरह दिन गुज़रते गये। अन्त में इस योग्य हो गई कि मेरा विवाह कर दिया जाये। भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहां रह नौजवान लड़के या लड़की की शादी एक आवश्यक कर्त्तव्य समझा जाता है। माता पिता अपने आप को ऋणमुक्त नहीं समझते जब तक वह अपनी संतान के गले में जंजीर नहीं डाल देते। खैर, मेरी शादी भी हो गई। मेरे पतिदेवता एक दुकान पर मुनीम थे। परन्तु क्योंकि मैं अत्यन्त ग़रीब अवस्था में पली हुई थी इस लिये गुज़ारा चलाना मेरे लिये कोई कठिन बात न थी।

दिन खूब गुज़रते गये। परंतु जिस के भाग्य में अस्थिरता लिखी हो उसका कहां ठिकाना है? जन्मदिन से जिसके भाग्य में विपत्तियों का ढेर लिख दिया गया हो वह भला कब चैन ले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ले सकता हैं? मेरे तो भाग्य ही ऐसे गढ़ दिये गये थे कि मैं और आराम दोनों एक दूसरे से कोसों दूर हैं। मेरे लिये आराम और चैन तो बनाये ही नहीं गये, इसलिये मैं शिकायत क्या करूँ और किस से करूँ? यह सब कर्मों का खेल है। बबूल बोकर आम काटने की इच्छा व्यर्थ है। आग लगाकर चन्दन को आशा रखना मूर्खता है। मुझे तो कोई शिकायत नहीं लेकिन यह सत्य घटना है कि मेरा सारा जीवन विपत्तियों की एक शृङ्खलाबद्ध कहानी है।

सर्वशक्ति सम्पन्न परमेश्वर को हमारी वह भोलीभाली ग़रीबी की जीवनयात्रा भी पसंद न आई और मेरे सिर पर भगवान ने विपत्ति का पहाड़ ही ढकेल दिया। अभिप्राय यह कि मेरे पति को हैज़ा हुआ। यथाशक्ति दवादारू किया। जो कुछ बन पड़ा, उससे संकोच नहीं किया। लेकिन सब व्यर्थ। जिसकी आयु का धागा ही टूट चुका हो उसे बचाने वाला कौन है? कुछ घंटे बीमार रह कर मेरे पति महाराज स्वर्गलोक सिधारे।

मैं रह गई और मेरी गोद में एक खेलता बच्चा रह गया। मुस्कराते हुए बच्चे को क्या मालूम है कि वह अनाथ हो गया है, पिता का आश्रम दूर हो गया है। अज्ञानता भी क्या अमूल्य वस्तु है। इस हालत में लाख आपत्तियें आईं कोई चिन्ता ही नहीं। मैं रो रो कर बेहाल हो गई कोई घड़ी न गुज़रती थी कि मैं अपने पति की याद से पृथक् रहती। खाना पीना छोड़ दिया। सारा दिन शोक में डूबी हुई बेहोश बेसुध पड़ी रहती थी। नन्हे से बच्चे का भी ध्यान न था। भगवान के दरबार में यही पुकार थी कि मैंने ऐसे कौनसे पाप किये हैं जिनके बदले में इतनी कठोर सज़ा मेरे लिये दी गई। बचपन में पिता से और अब भरी जवानी में पति से वियोग हो गया। परंतु लकीर पीटने से क्या लाभ? कोई लाख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निवेदन करे, कोई लाख अपना सा खून आंखों के द्वारा बहा डाले, गये भी कभी आये हैं ? जिन्हों ने परलोक को मुँह मोड़ लिया वे फिर लौटने का नाम लेते हैं ? रो धो कर अन्त में चुप हो गई। दिल में लगी आग कुछ कुछ कम होनी आरम्भ हुई। कालकी मरहम का फाहा मेरे घाव को आहिस्ता आहिस्ता अच्छा करने लगा। मैंने अपना ध्यान अपने बच्चेमें लगा दिया। मैं इसकी भोली आकृति देख कर अपने शोक को भूला करती थी और इस आशा से कि बड़ा होकर यह मेरे काम आवेगा दिलको शान्ति दिया करती। पर बड़ी कठिनता यह थी कि अपना पेट कैसे भरूं। पल्ले जो पैसा था वह कुछ बीमारी में और कुछ अन्तिम संस्कार में ख़र्च कर दिया। अब तो यह दशा थी कि यदि प्रातःकाल का खाना है तो सायंकाल के खाने का कुछ ठिकाना नहीं। शहर का ख़र्च भी वेहिसाब होता है। मकान का किराया चाहिये और सौ सौ तरहके ऊपर के खर्चके लिये रुपया आवश्यक है। अन्तमें मैंने अपने दिलसे फैसला किया कि यह विपद जो सिर पर आन पड़ी है, हौसले से इसका मुक़ाबला करना चाहिये। मनुष्य पर ही इस प्रकार की परी त्रायें आया करती हैं। इनसे घबराना व्यर्थ है। मैंने दो चार घरोंमें बर्तन साफ़ करनेका काम अपने ज़िम्मे ले लिया। मैं इस सारी बीती घटना को दुहराना नहीं चाहती, न मैं उन घृणित अनुभवों को सामने रखने से कुछ लाभ समझती हूँ जो मुझे उन दिनों में जनसाधारण की ओर से हुए। बस इतना कह देना पर्याप्त है कि मनुष्यता का तामस भाव जितना मैंने उन दिनों देखा और जितने शोक जनक दृश्य मेरे सामने से गुज़रे परमेश्वर न करे कि कोई इतना अभागा हो कि वह इनको देखे। काम धन्धे से तो कोई डर नहीं परन्तु जिन अवस्थाओं में से मुझ नौजवान असहाय स्त्री को गुज़रना पड़ा इनके दोहराने से जीभ जलती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अस्तु दिन गुजरते गये । मैं प्रातः तथा सायं मजदूरी करती और जो दो चार पैसे कमा लाती उनसे अपना और अपने बच्चेका पेट पालती । गुज़ारा बड़ी कठिनता से होता । कठोर सिरतोड़ परिश्रम से कहीं दो समय रोटी प्राप्त होती । मैंने लड़के को स्कूलमें प्रविष्ट कराया । फ़ीस आदि के ख़र्च का एक बड़ा भार मेरे सिर पर हो गया, परन्तु यह बोझ मुझे अत्यन्त प्रिय था । मेरा जी यही चाहता था कि मेरा पुत्र उत्तम शिक्षा लाभ करे और शीघ्र इस योग्य हो जाय कि मेरे दुःखों को दूर करे । मेरी विपत्तियों का अन्त हो जाये । अपने बड़े पुत्र को बड़े ही लाड़ से पाला । अपने ऊपर सब दुःख सहे परन्तु बच्चे को ज़रा आंच नहीं आने दी । अच्छा कपड़ा, अच्छा खाना, अपनी स्थिति और साहस के अनुसार मैं संग्रह करती रही । लड़का भी एक देवता था, बड़ा ही हौसले वाला, कम बोलने वाला, मेधावी, परिश्रमी और सत्यवादी था । मैं उसे देख कर इस तरह खुश होती थी जिस तरह चकोर चांद को देखकर होता है । यदि किसी कारण से उसे स्कूल में देर हो जाती, तो मैं अधीर हो जाती, जो कहीं वह गली में अधिक रुक जाता तो मैं अधीर हो जाती, जो कहीं उसे कुछ दुख हो जाता तो मैं तड़प उठती, अर्थात् मैं इस की आकृति के दर्शन में इतनी निमग्न रहती थी कि मुझे गत सारे कष्ट भूल गये और मेरा दिल बड़ा संतुष्ट और चित्त बड़ा प्रसन्न रहता था । मुझे काम काज के कारण जो कष्ट होता था वह भी मुझे दूभर मालूम नहीं देता था ।

परमेश्वरकी हमपर कृपा रही । लड़का उन्नति करता गया । सन् १९१९ की रामनौमी के दिन इसको एक दुकान पर नौकर कराया । प्रथम प्रथम एकबारगी ही चालीस रुपये वेतन नियत हुआ । अमृतसर में वह रामनौमी न आती । इस रामनौमी की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शोभाने समय के शासकों को आश्चर्य दिला दिया। इस दिन रौनक भी भारी थी। सारे शहर पर बसन्त छा रही थी। एक एक दुकान दुलहिन की तरह सुसज्जित थी। बाजारों में इतनी भीड़ कि तिल फेंकने की जगह न थी। आदमी और औरतें हजारों की संख्या में घर से तमाशा देखने को निकली हुई थीं। हिन्दू मुसलिम मेल का एक क्रियात्मक स्वरूप था। मुसलिम भाइयों की सबीलों पर से हिन्दू बिना संकोच शर्बत, दूध व पानी पीते थे। मुसलिम और हिन्दू वालण्टियर एक भी पुलिस के सिपाही की सहायता बिना सारा प्रबन्ध अत्यन्त प्रसन्नता से कर रहे थे। जब से रामनौमी का जलूस अमृतसर से निकलना आरम्भ हुआ है तबसे कभी ऐसा रङ्ग पैदा नहीं हुआ था। बड़े बड़े वृद्ध यह कहते हुए सुनाई देते थे कि हमने ऐसा समय आगे कभी नहीं देखा। इतना जोश व खरोश, इतना प्रेम व मेल, इतनी रौनक कभी आगे हमारी दृष्टि से नहीं गुजरी। पर हर बात में भेद छिपा होता है, बस इतनी ही रौनक प्राणों के लिये संकट हो गई। तब से रामनौमी बन्द है। मैंने सुना है कि रामनौमी के प्रबन्ध कर्त्ताओं के साथ सरकार के कारिन्दों ने ऐसा अत्याचारी वर्ताव किया है कि अब वे लोग रामनौमी का नाम सुनकर कांपते हैं। बस, इस शान के बाद अन्त में यह परिणाम निकला कि भगवान राम की याद ही अमृतसर में अब नहीं मनाई जाती।

उस दिन तो मेरी प्रसन्नता की कोई हद नहीं रही क्योंकि इस दिन मेरे लड़के ने कमाना शुरू किया। इससे मेरे अपने विचार में मेरे भाग्य परिवर्तन का प्रबन्ध हुआ, दिल में यह इच्छा और साहस कि बस अब क्या है दिन कट गये। विपत्ति की अंधेरी रात का पहरा समाप्त हुआ। आराम की प्रातः निकलना चाहती है। अब काहे को किसी के वर्तन साफ़ करेंगे। बेटा कमायेगा,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वह भी खायेगा, मैं भी सुख पाऊंगी। मैं भी इसी खुशी में रामनौमी देखने चली गई! मेरी आंखों का तारा भी साथ था। हम बड़े खुश थे। शोभा हमारे मनों को लुभा गई। बहुत रात तक हम तमाशा देखते रहे और घर पहुंच कर सो गये। वह रात मैं सो नहीं सकी। मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी हर घड़ी मुझको यही ख्याल आता था कि धन्यवाद है कि मेरे दिन भी पलटे हैं। मैंने अपने सब पुराने दुःखों को अन्तिम नमस्कार कहा। प्रातःकाल हुआ। मेरा लड़का जागा। मैंने इसके लिये उत्तम खाना पकाया। उसे खिलाया और उसे दुकान की ओर रवाना किया। जब वह समय याद आता है तो कलेजा मुंह को आता है। मुझे पकड़ो मेरा दिल बैठा जाता है। मेरी जान निकली जाती है। ओह, भाग्यजली की वह अन्तिम रोटी थी कि इसके लड़के ने खाई। मुझे क्या पता था कि यह अन्तिम बिदा है जो मैं अपने पुत्र को कह रही हूं।

मेरा लड़का नियमानुसार दुकान पर उपस्थित हो गया। कामकाज में लग गया। कोई एक घंटे से कम ही गुजरा होगा कि शहर में शोर मच गया कि पकड़ लिया, पकड़ लिया। अमृतसर के दो सेवकों को पकड़ लिया। हड़ताल होनी चाहिए और सब लोगों को गोल बाग में जमा हो जाना चाहिये ताकि उन उपायों को सोचा जाय जिनसे इनको मुक्त कराया जा सके। आन की आन में सारे बाजारों में पूरी हड़ताल हो गई। कोई दुकान खुली न रही। मेरा लड़का भी खाली हो गया। घर लौटने की जगह वह भी गोलबाग की ओर रवाना हो गया। जो कहीं इस समय मुझे पता चलता तो मैं इसे घर में ले आती। पर उसकी मृत्यु उसे खींचे ले जा रही थी। अभी अल्हड़ नौजवान था। इन धन्धों से बिलकुल अपरिचित था। लेकिन रामनौमी के दृश्य ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके दिलपर गहरा प्रभाव किया था। इसलिये वह इस समुदाय के साथ रवाना हो गया।

जब वहां पहुंचा तो एक भारी समुदाय वहां इकट्ठा हो गया था। रास्ते में रेल के पुल पर कुछ अंग्रेज़ घोड़ों पर सवार खड़े थे। साधारण लोग पुल के पार जाना चाहते थे और यह अंग्रेज़ रोकते थे। कुछ लोग ज़िद करके पार चले गये। अंग्रेज़ों ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। मेरा लड़का भी इस गिरोह में था। वह अंग्रेज़ों से यह कह रहा था कि हम किसी बुरी नियत से नहीं आये हमारा इरादा शरारत का नहीं है। हम केवल डिप्टी कमिश्नर से यह प्रार्थना करने के लिये जाना चातहते हैं कि हमारे शहरवाले स्वतन्त्र कर दिये जावें वे सर्वथा निरपराध हैं। आप गोली न चलवाइये। लोगोंको शान्तिसे समझा बुझाकर वापिस भेज दीजिये। लेकिन भला अंग्रेज कब सुनते थे? उन्होंने फायर बोल दिया। मेरा लड़का जो कि समीप ही खड़ा था पहला निशाना बना। सीनेमेंसे गोली पार हो गई और वह धरतीपर गिर गया। फड़फड़ाकर आनकी आनमें ठण्डा हो गया। कहते हैं कि मरते समय उसने यह कहा कि शोक मुझ निरापराध को बिना कारण मौत के घाट उतारा गया है। मेरा कुछ भी कसूर न था। हमलोग किसी बुरे इरादे से नहीं आये थे। परन्तु सरकार हिंदुस्तानी जानको कब दृष्टि में लाती है? इसने यह भी कहा कि मेरी मां को जाकर कह देना कि तुम्हारा लड़का बलिदान हो गया है। देशपर बलिदान हो गया है इस लिये शोक न करना। भारतवर्ष में शहीद होने की रीति कोई नई नहीं। लोग इस की लाश उठा लाये और उसे एक मन्दिर के अंदर रक्खा। मैं घर में बैठी अपने बेटे की वापसी की प्रतीक्षा में थी। मैं इसकी राह तक रही थी कि दूर से मैं ने एक गिरोह को आते देखा। मैं ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पूछा कि क्या है ? इन में से एक ने कहा कि माई क्या सुनायें, तुम्हारा इकलौता लड़का एक अंग्रेज़ की गोली का शिकार हो गया। जीवितों की श्रेणी में से निकालकर मुरदोंकी श्रेणीमें सम्मिलित कर दिया गया। मुझ बेकस का सहारा छीन लिया गया। मुझ गरीब-की टेक तोड़ दी गयी। मेरी आंखों की ज्योति लोप हो गयी। मैं गश खाकर गिर पड़ी। उफ़! यह समय जब आंखोंके सामने आता है आपसे आप मुँहसे चीख़ निकल पड़ती है। मुझे होश में लाया गया। मैं तो बावरी हो गयी। हाय, मेरी गोद उजड़ गई। मेरा इक-लौता लड़का मौतके घाट उतार दिया गया। मेरी सारी आशाओं-पर पानी फिर गया। मेरे सारे हवाई किले भग्न हो गये। मैं किस सोच में थी और भागवान को क्या स्वीकार है। मैं इस प्रतीक्षा में थी कि मेरे दिन अब बदल गये हैं, अब मुझे लोगों का भिखारी न होना पड़ेगा। मेरा बच्चा कमायेगा और मैं आराम से अपना समय भगवद्भजन में लगाऊंगी। परन्तु भगवान की लीला का पार कौन पा सकता है? "हमरे मन कछु और है विधना का कछु और" मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। मैं उनके साथ उस दिशा को रवाना हो गई जहाँ मेरे पुत्र की लाश थी। उसे देखते ही मैं बेहाल हो गई और मेरे जी में आया कि अपने कलेजे में छुरी भोंक कर अपनी जान दे डालूं। लेकिन ईश्वर के भय ने मेरा हाथ पकड़ लिया। जितने दुख तुम्हारे भाग्य में लिखे हैं उतने भुगत कर ही तुम को यहां से कूच करना होगा। जल्दी न करो। अभी जियो और कुछ दिन और जियो ताकि तुम्हारी विपत्तियों का प्याला भरपूर हो। सामान्य रस्मों को अदा करने के बाद उसे हम श्मशान को ले गये। मैंने अपने हाथ से इस का दाह कर्म किया। क्या कहूँ उस समय मेरी क्या दशा थी। मक्खन, मलाई, मिश्री से पाला हुआ बच्चा, इतनी कठिनाइयों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जवान किया हुआ पुत्र, मेरी सारी आशाओं का केन्द्र, मेरी सारी याचनाओं का खजाना; उफ़, इस को मैं स्वयं अपने हाथ से जला कर भस्म करूं ? यह संसार इस प्रकार की क्रीड़ाओं का समुदाय है। यदि कहीं उसे कांटा भी चुभ जाता तो मेरी जान निकल जाती। यदि कहीं इस का बदन फीका होता तो मैं साथ ही जान दे देती। गरमियों में सारी सारी रात जाग कर इस को पङ्खा झलती थीं। सरदियों में आप दुख सह कर इसको आराम पहुंचाती थी। अपने पेट पर पत्थर बांध कर इसके लिये उत्तम उत्तम खाने प्रस्तुत करती थी। आज इस शोभा-पुञ्ज को अपने हाथ से जलाकर भस्म कर दिया। रूपवान नौजवान को आग की भेंट कर दिया। कलेजे पर पत्थर रखकर घर वापस आई। घर काटने को दौड़ता था। जिस भी चीज़ को देखती उससे डर जाती, भय खाती। चित्त सदा चिन्ताग्रस्त रहने लगा। कोई वस्तु न भाती थी। बैठी २ अपने नौजवान बच्चे को पुकारा करती। खाना पीना लगभग बन्द हो गया। रो रोकर आंखें खो दीं। लाख ढूंढ़ा, करोड़ जतन किये, मिन्नतें मांगीं, प्रार्थनायें कीं लेकिन भला कभी मुसाफिर (यात्री) भी लौटा है। जब एक सराय कूच कर गया तो अब सराय में फिर न आयेगा। मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया, भूख प्यास लुप्त, नींद एक दम नष्ट। एक लकड़ी के तख्ते और मुझ में भेद न रहा। सारा दिन और सारी रात रोना, चीखना, आहें भरना मेरी आदत हो गई।

आसपास के लोगों ने बहुत हौसला दिया। परन्तु सब व्यर्थ। एक क्षण भी मुझे शोक से अवकाश न मिलता था। उधर शरीर की यह दशा और इधर यह सवाल मौजूद कि पेट के लिये क्या किया जायेगा ? यदि परिश्रम न हो सकेगा तो खाऊंगी कहां से ? बस, इन्हीं विचारों में निमग्न रहती और चारपाई पर पड़े पड़े अपने साथ बातें करती रहती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं इसी अवस्था में थी कि मेरे भाग्य जागे, चींटी के घर नारायण आये। जिनके नामोच्चारण से जिह्वा पवित्र हो जावे ऐसे श्रीमान् पण्डित मदनमोहन मालवीयजी मेरी कुटिया पर पधारे। मैंने उन्हें आगे कभी नहीं देखा था। परन्तु इनका तेजस्वी चेहरा, उनकी पवित्र आकृति मेरे हृदय पर प्रभाव कर गई। माथे पर तिलक क्या सुन्दर प्रतीत होता था। गले में दुपट्टा इनके पुराने ज़माने के हिन्दुओं के लिये श्रद्धा का प्रमाण दे रहा था। मैं उठ बैठी। मालवीय जी ने मेरे पुत्र की मृत्यु पर शोक प्रगट किया। मालवीय जी की आंखों में आंसू आ गये। मुझ से मेरे पुत्र का हाल पूछते रहे, तसवीर मांगी; लेकिन शोक कि मेरे दिल के शीशे के सिवाय और कहीं उसकी तसवीर मौजूद न थी। सहायक सामने देखकर मैं भी दिल खोल कर रोई। जब यह सब कुछ हो चुका तो मालवीयजी ने मुझे उपदेश किया :—

"हे देवी! अब रोने से प्राप्ति क्या है? जो होना था हो चुका, तुम्हारा इकलौता लड़का गोली का शिकार बना दिया गया। निरपराध बालक इस तरह निष्कारण मार डाला गया। मैं भी सन्तान वाला हूँ। मैं समझ सकता हूँ कि इस तरह एक ही पुत्र के मारे जाने का तुम्हें कितना दारुण सन्ताप है। परन्तु फिर भी मैं तुम से प्रार्थना करूंगा कि अब तुम शोक करना छोड़ दो। इसमें लाभ कुछ नहीं। अपना स्वास्थ्य बिगाड़ चुकी हो और अधिक बिगड़ जाने पर क्या करोगी? और सब से बड़ी बात तो यह है कि तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये कि तुम्हारा पुत्र एक वीर की मौत मरा है। इस संसार में मरना है ही। अमीर हो या ग़रीब। प्रत्येक को इस आग में से गुज़रना अवश्य है। इन्फ्लूएन्ज़ा से साठ लाख आदमी मर गये हैं तो फिर मौत से क्या डरना। धन्य हैं वे पुरुष जो देश और जाति के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिये प्राण देते हैं। देवि! धीरज धरो; हौसला करो। भगवान का धन्यवाद करो। तुम क्या जानती हो कि तुम्हारे बेटे का निर्दोष रक्त क्या क्या उत्तम परिणाम देश और जाति के पक्ष में पैदा करेगा। उस मां की गोद तो हरी हो गई जिसका पुत्र जाति के काम आया। वह मां तो धन्य है जिसकी सन्तान देश पर न्योछावर हुई। घबराओ नहीं, एक पुत्र गंवाकर तुमने कई पुत्र प्राप्त कर लिये हैं।"

पण्डितनी की मनोहर वाणी सुनकर मेरा चित्त स्थिर हो गया। मेरी व्याकुलता कम हो गई। मेरे दिल को शान्ति आ गई। मैंने पण्डितजी के चरणों को छुआ और अत्यन्त नम्रता से निवेदन किया कि आप के प्रेम भरे शब्दोंने मेरे चित्त को शांत कर दिया है। अब मैं चिन्ता न करूंगी। इसमें तो संदेह नहीं कि मैं सांसारिक दृष्टि से बरबाद हो गई पर यदि मेरे पुत्र की मृत्यु देश और जाति के लिये रसायन का काम देगी और देश की दशा उत्तम बनाने का साधन बनेगी तो इससे उत्तम और क्या उद्देश्य मेरे पुत्र के जीवन का हो सकता है। पण्डितजी जब जाने के लिये तय्यार हुए तो मैंने रोककर कहा कि मेरे पास कुछ रुपये हैं जो मैंने समय कुसमय के लिये रखे थे। मेरा इनमें बहुत मोह था परन्तु अब आप की मनोहर वाणी से मेरे चित्त की अवस्था बदल गई है। वे रुपये मैं आप की भेंट करती हूँ, आप जिस जातीय काम में चाहें लगायें। मैं उठी और एक रूमाल में बांधकर जो कुछ मेरे पास था मैंने पण्डितजी के चरणों-में भेंट किया। मेरा दिल ही बदल गया। मेरी दशा ही पलट गई। मैंने नया जन्म धारण किया। इसके बाद जो कोई भी मेरे पास शोक प्रकाशन के लिये आती मैं इससे नाराज़ हो जाती। मैं भी इसको समझाती कि मेरा पुत्र बलिदान हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया है ! आत्मबलिदान करनेवालों की मृत्युपर रोया नहीं करते प्रत्युत् खुश हुआ करते हैं। शहीदों का पवित्र खून ही दुनियां के अन्दर जातियों को ज़ीवित रख सकता है। यह ही वह पवित्र भोजन है कि जिसके बिना जातीयता का पौधा पुष्टि पा ही नहीं सकता। यह ही वह सहारा है जिसके आश्रयपर जातीयता का भवन खड़ा है। यह ही एक आधार है जिसपर स्वराज्य का शोभाशाली भवन बांधना है।

तब से मेरे चित्त में एक हिम्मत पैदा हो गई थी। मैंने अपने पेट के लिये फिर अपने धन्धे को शुरू कर दिया। अब अधिक परिश्रम तो न हो सकता था पर फिर भी काम काज करना आवश्यक था और अपनी हिम्मत के अनुसार मैं कुछ न कुछ करती ही रही।

काम से वापिस आते समय वर्षा और सरदी के कारण निमोनिया हो गया। और अब जो अवस्था है वह आप के सम्मुख है। मैं एक बार फिर अति प्रेम से आप का धन्यवाद करती हूँ और आपने जो मेरी सेवा की है इसके लिये चिरकृतज्ञ हूँ। आपकी ओर से तो कोई त्रुटि नहीं रही। लेकिन मुझे अब जीवित रहने की आशा नहीं है और न मेरा अब जी चाहता है। मुझे मरने का अब कोई डर नहीं। मैं अब किस के लिये जिऊं ? मेरा दिल मौत से बिलकुल नहीं घबराता। मैं अति प्रसन्नता से मौत से आलिंगन करना चाहती हूं। मैं एक अत्यन्त सुख की मौत मर रही हूँ। जीवन तो बड़ी कठिनता से गुज़रा और ज़िन्दगी में कष्ट भी बहुत सहे, एक घड़ी भी आराम मुझ अभागिनी को प्राप्त न हुआ परन्तु मैं सन्तोष से मर रही हूं। क्योंकि मैं जानती हूँ कि मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर चली हूं। लोग सौ देंगे, हज़ार देंगे, लाख देंगे, परन्तु मैं अपना बहुमूल्य लाल जाति के दरबार में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भेंट कर चुकी हूं। इससे अच्छा पदार्थ मेरे पास नहीं है। मैं आशा करती हूँ कि देश और जाति मेरे इस संप्रदान की प्रतिष्ठा करेगी।

"मेरे पास कुछ रुपये मेरी मेहनत मज़दूरी की कमाई के जमा हैं वह आप के अस्पताल की भेंट हैं। इन्हें अंगीकार करें, और किसी ग़रीब, बेकस मुफ़्लसी बेबस स्त्री की सहायता में खर्च करें।"

यह कहा, और एक लम्बी सांस खींची। तुरन्त आंखें बदल लीं। नाड़ी बन्द हो गई। डाक्टरोंने स्वयं सेवकों को इशारा किया कि इनके लिये आवश्यक प्रबन्ध करें। आवश्यक क्रिया भी किया जानेका प्रबन्ध किया गया। जिसके बाद देवीजी की लाश को श्मशान में पहुंचा दिया गया और वैदिक रीति अनुसार संस्कार कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"निरपराधीका खून"

लाहौर का जेल भी एक दर्शनीय स्थान है। पृथ्वीतलपर नरक देखना हो तो आप यहां इसका नमूना देख पायेंगे। इस अद्भुतालय के वर्णन को किसी अवसर के लिये मुल्तवी करके हम अपनी कथा का प्रारम्भ करते हैं।

इस जेल की एक तङ्ग अन्धकारमय कोठरी में जिसके बाहर दो मज़बूत ताले लगे हुए हैं जमीनपर बिछी हुई एक चटाईपर एक रूपवान नौजवान लगभग नङ्गा बदन लेटा हुआ है। भयङ्कर गरमी है। प्रथम तो यों ही वायुका नाम नहीं, और फिर इस कोठरी में तो वायुको प्रवेश करने की आज्ञा ही नहीं। मच्छर भी खूब सता रहे हैं। आधे २ घण्टे के बाद ईश्वरीय फौजदार मनुष्य के शरीर में पशु-हिंसक पशुओं से बढ़कर क्रूर, कैदियों की पड़ताल करते हैं। यह कोठरी जिसमें हमारा नौजवान लेटा हुआ है उन लोगों के लिये नियत है जिन्हें फांसीपर लटकाये जाने का हुक्म होता है।

रामलाल को नींद कहां, एक तो भयंकर गरमी, दूसरे कच्चे धागे से लटकती हुई तलवार सिरपर, तीसरे हर घड़ी का जगाया जाना, तालों का शोर अर्थात नींद को तो अन्तिम प्रणाम करके ही लोग ऐसी कोठरियों में रह सकते हैं। रामलाल मार्शलला का कैदी है। इसपर क़तल का अपराध लगाया गया है, और इसकी सज़ाके लिये सूलीपर खींचे जाने की आज्ञा मिली है। जमीन पर लेटा हुआ सोच ही रहा है कि यकायक जेल का दारोगा आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहुंचा और उसने आकर यह खबर दी कि तुम्हारी दया की प्रार्थना वायसरायने अस्वीकार कर दी है, और तुम कल फांसी पर चढ़ाये जाओगे।

रामलाल को एक गहरा धक्का लगा। यह तो उसे विश्वास था कि न्याय आजकल एक दुर्लभ वस्तु है। परन्तु उसे यह ख्याल न था कि पुलिस को बनावटी शहादतों का इतना विश्वास योग्य समझा जावेगा कि जान तक ले ली जायेगी। रामलाल के चेहरे पर कई रङ्ग आते थे। कभी तो उसे क्रोध आता था कि इस अन्याय का बदला कौन लेगा। कभी उसे भगवान के न्याय पर आश्चर्य पैदा होता था। कभी उसे अपनी निर्दोषता याद करके खुशी पैदा होती थी। किस तरह के विरुद्ध ख्यालात इसके दिन में वर्तमान थे।

रामलाल अति सुन्दर नौजवान है। सुडौल शरीर है। बड़ी सुन्दर आंखें, विशाल ललाट अत्यन्त चित्ताकर्षक छवि है। अंग्रेज़ी पढ़ा हुआ है। पोलिटिकल विषयों में मनोरञ्जन किया करता था। पुलिस ने कांटा निकालने की इच्छा से दो चार गवाह बनाकर कतल के अपराध में चालान कर दिया। उन दिनों की अदालतों में तो विशेषतया पुलिस और उनके गवाहों के बयान को ब्रह्मवाक्य से कम विश्वास न किया जाता था। तुरन्त फांसी की सज़ा हो गई। सर माईकेल ओडवायर के पास निवेदनपत्र गया। उनमें दया होती, तो इतनी आफत ही क्यों आती? दया तो देवताओं का गुण है, उनमें तो न्याय भी न था। प्रार्थना रद्द कर दी गई। नियमानुसार वायसराय के पास निवेदनपत्र गया, वहां से भी जैसा कि उधर वर्णन आ गया है रद्द हो गया। रामलाल की यह सर्वथा इच्छा न थी कि दया की प्रार्थना की जाय। रामलाल यही कहता था कि जो न्याय नहीं कर सकते, जो झूठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और सच में भेद नहीं करना चाहते, जो इस तरह निःसंकोच आयुभर की कैद, सम्पत्ति की जब्ती, फांसी की सजा ऐसी निर्दय निस्सार और मिथ्या सिरसे पांवतक झूठी गवाही देने से घृणा नहीं करते वे दया क्या करेंगे ? बस, हो चुका जो होना था। परन्तु रिवाज के तौरपर क्योंकि सब की प्रार्थनायें जाती हैं इस लिये इसकी प्रार्थना भी दी गई और इसका यही परिणाम हुआ कि दण्ड वैसे का वैसा ही रहा।

आज सारे जेल में सन्नाटा है। कोई कैदी बाहर दिखाई नहीं देता। जिस दिन किसी को फांसी देना होता है उस दिन सब कैदी कोठरियों में बन्द किये जाते हैं और उनको बाहर निकलने की आज्ञा नहीं मिलती।

प्रातःकाल ही रामलाल की कोठरी के आगे जेल के अफसर पहुंच गये। रामलाल ने स्नान किया। अपने भगवान का स्मरण किया। उस वेश को जो फांसी दिये जाने वालों को पहनाया जाता है। अत्यन्त प्रसन्नता से पहना। कहां है वे लोग जो यह कहते हैं कि भारतवासी जान को बड़ा प्यारा ख्याल करते हैं। उन्हें निमन्त्रण है कि वे आवें और इस समय रामलाल को देखें। शादी के लिये तय्यारी के समय जो अवस्था एक नौजवान की होती है वही इस समय रामलाल की है। न ठण्ढी सांस है, न आह है, न रंज है, न शोक है, न होंठ पर शिकायत है। चेहरे पर तेज है, चित्त में शान्ति और सन्तोष है। ऐसा मालूम होता है कि अत्यन्य मौन नदी की तरह विचार भी एक स्थान से और एक ओर लग गये हैं। जेल के नौकरों ने इसकी दोनों भुजाएँ उलटी बांध लीं और बधस्थल की ओर ले चले। किस शीघ्रता-से रामलाल का पग उठता है। मजनूं के पैरों में भी लैला से मिलने जाते समय इसकी तुलना में क्या तेजी होगी ? यों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जा रहा है कि मानों किसी प्रेमी को प्यारे को आलिङ्गन करने का अवसर मिला है। झटपट सूली पर चढ़ गया। मुंह पर टोपी डाले जाने से पहले मजिस्ट्रेट ने कहा कि कुछ चाहते हो? हां, एक दो मिनट के लिये कुछ कहना चाहता हूं।

आज्ञा मिल गई, वहीं खड़े खड़े रामलाल ने अत्यन्त तेजस्वी ढङ्ग से यह वक्तृता दी—"परमात्मा जानता है कि मैं अपराध से जिसके बदले में मैं एक मिनट के बाद परलोक यात्रियों में गिना जाऊँगा, सर्वथा निर्दोष हूँ। मैं उस समय वहां सर्वथा उपस्थित न था। मुझ पर यह अपराध सर्वथा झूठा थोंपा गया है। परन्तु मुझे इससे क्या मतलब? मैं अपनी जान अपने देश के लिये दे रहा हूँ। मेरा केवल एक अपराध है और वह यह कि मैं अपने देश को प्यार करता रहा हूँ। बस, इस अपराध का दण्ड यह है जो मुझे आज मिल रहा है। परन्तु मैं इसे दण्ड ख्याल नहीं करता। मैं इसे अपने लिये अभिमान और सम्मान समझता हूं कि परमेश्वर ने मेरे शरीर को इस योग्य ख्याल किया है, कि इसे जाति के काम में प्रयुक्त करे। मेरी एक अंतिम प्रार्थना है वह यह कि मेरे सारे हिन्दुस्तानी भाइयों को मेरा यह संदेश पहुंचा दिया जावे कि "गुलामी की जिन्दगी से मौत बदरजहा बहतर है। रोज रोज के तिरस्कार के मुकाबिले से इस तरह सूली पर खिंच जाना हजार गुना अधिक प्रिय है। इसलिये पूरा जोर लगाओ और देश के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करो। महात्मा गांधी जी तथा पण्डित मालवीय जी और अन्य देश-नेताओं के चरणों में मेरा प्रणाम पहुंचा देना और इतना निवेदन कर देना कि मुझ से निपराधों तथा निर्दोषों का खून व्यर्थ न जावे। जातीयता और आजादी के पौधे को खुराक पहुंचाने के लिये मैं अपना खून दे रहा हूं। सबों सलाम, सब को सलाम,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुनाहों की माफी चाहता हूँ। एक बार ज़ोर से बोलो "म० गान्धी की जय" बन्देमातरम्।"

आज्ञा हुई टोपी चढ़ा दो। स्वर्गलोक में जीवात्मा उड़ गई। एक मिनट के अंदर इतना बड़ा शरीर खाक से कम स्थिति का कर दिया गया। वहां उपस्थित पुरुषों में से कोई न था जिसकी आंखों में पानी न आ गया हो। हालां कि रोज रोज लोगों को फांसी चढ़ते देखकर उनके दिल पत्थर हो जाते हैं लेकिन रामलाल की भाषण शैली, शकल सूरत, निर्दोषता और देश के लिये प्यार ने पत्थर को भी मोम कर दिया। सब रो दिये नियमानुकूल लाश एक घण्टा तक लटकती रही। बाद में बाहर ले जाकर लकड़ियों में रख उसे जला कर भस्म कर दिया गया। अन्त को यही परिणाम है जिसका सामना हर एक को करना पड़ेगा। लाख अतलस पहिने, लाख किमखाब, लाख मखमल का शौकीन हो, रेशम के सिवाय जिसके शरीर को कोई वस्तु भाती न हो, गदेलों में जो बैठना जानता हो, उसे पूछो कि कितनी भारी लकड़ी के कुन्दे इस पर रख दिये जाते हैं। फूल के बोझ से जिसका शरीर लचक जाता हो आज उसकी हालत देखो। मनुष्य भी कितना भूला हुआ है! किसी को यह दिन याद नहीं!

जेलखाने के बाहर इन दिनों विचित्र दशा है। पर्देदार, शरीफ, प्रतिष्ठित महिलायें और धनाढ्य देवियां सारा दिन जेलखाने के आगे डेरा डाले पड़ी रहती हैं। बड़े बड़े आदमी काम काज छोड़ कर प्रातःकाल से संध्या समय तक वहीं उपस्थित रहते हैं। इन दिनों तो जेलखाना एक तीर्थस्थान बना हुआ है।

कोई तो मुलाकात के लिये आये हैं। मुलाकात मंजूर भी हो चुकी है लेकिन सारा दिन गुजर जाने पर आशा सफल नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होती। कल आओ। मुलाकात के लिये आये हैं वापिस किस तरह जायें। चलो रात यहीं बितावें। प्रातःकाल फिर भाग्य परीक्षा करेंगे। कोई मुख्तारनामे पर दस्तखत करवाने के लिये आये हैं, कोई कपड़े देने के लिये आये हैं और कोई बेचारे तो केवल स्नेह की जंजीर से खिचे हुए आये हैं। उन्हें मालूम है कि मुलाकात न हो सकेगी। उन्हें यह भी मालूम है कि इनके सम्बन्धी जिन्हें देखने के लिये आये हैं न आ सकेंगे। लेकिन फिर भी कोई वस्तु है कि जो उन्हें रोज जेलखाने ले जाती है। ममता भी क्या वस्तु है। दो छोटे छोटे बच्चे रोज जेलखाने पहुंच जाते हैं। लोहे के बड़े दरवाजे के साथ लटके रहते हैं। कभी कभी इनको जेल के कर्मचारी झिड़क भी देते हैं परन्तु क्या करें मजबूर हैं। पिता को एक बार देख पाने की अभिलाषा में वह सारा दिन विना खाये पिये गुजार देते हैं।

उन्हीं मुलाकातियों में एक गरीब नौजवान औरत एक छोटा बच्चा गोद में लिये वहां फिर रही है। आते जाते आदमियों से पूछती है कि रामलाल की क्या खबर है? उसकी फांसी मुलतवी हुई कि नहीं? क्या मैं उससे मुलाकात कर सकती हूँ? इस बेचारी को क्या पता कि जिससे वह मिलना चाहती है वह तो इस समय राख हो चुका है। कोई कैदी इतना हौसला नहीं कर सकता कि उसे यह हृदय-विदारक समाचार दे। कोई तो यह कह देता है कि वह रामलाल को जानता ही नहीं और कोई कहता है कि माई, ठहरो अभी मुलाकात हो जायेगी। दो घण्टे इधर उधर दौड़ती रही, परन्तु कुछ पता नहीं चला। अन्त में तङ्ग आ गई तो दारोगा से पूछा कि रामलाल की क्या खबर है? फटे पुराने कपड़े, हीन दशा, पवित्र सूरत, चेहरे पर चिन्ता और शोक प्रकट, विपत्ति की दशा में इस पर जब दारोगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की नजर पड़ी दिल भर आया। क्या किया जाय ? इसे किस तरह बता दूँ कि जिस वस्तु की तलाश में यह भटक रही है वह तो अब इसके हाथ न आ सकेगी ? अन्त में विवश हो उसने इस देवी को यह बताया कि रामलाल को आज फांसी पर लटका दिया गया है। यह सुनते ही वह देवी धरती पर गिर पड़ी और मूच्छित हो गई। दारोगा ने अपने अपने दूसरे साथियों की सहायता से इसको होश में लाने की कोशिश की। डाक्टर भी आ पहुंचा। इससे मुँह पर ठण्ढा पानी छिड़का गया। दिल की ताकत के लिये डाक्टर ने पिचकारी के द्वारा बांह में दवाई भी दी। चन्द मिनट तो कोई प्रभाव दिखाई न पड़ा। परन्तु कुछ देर की मेहनत के बाद थोड़ा थोड़ा होश हुआ। अधिक प्रयत्न करने पर उसे पूरा होश आया और वह उठ कर बैठ गई। चकित थी कि उसे क्या हो गया ? इधर उधर दृष्टि डाली, एक भीड़ इकट्ठी हो गई थी। बड़ी व्याकुल थी। परन्तु इतने आदमियों में इस तरह घिरे हुए देखकर इसने अपनी तबीयत को सम्भालने की कोशिश की। और थोड़ी देर की कोशिश के बाद वह पूरे तौर पर संभल गई। लोगों ने सवालों की भरमार कर दी। तुम कौन हो ? क्या रामलाल तुम्हारा रिश्तेदार था ? तुम कहां से आई हो ? आदि आदि। एक के बाद दूसरे ने प्रश्न करने शुरू किये।

देवी ने कहा कि यदि आप मेरी दुःखभरी कहानी सुनना चाहते हैं तो चुपचाप हो कर सुनिये। मैं अपनी रामकहानी सुनाने में कोई हर्ज नहीं समझती। मैं और रामलाल भाई बहिन थे। यह मेरा बड़ा भाई था। हम दोनों अभी छोटी ही आयु के थे कि हमारे सिरपर से माता पिता का हाथ उठ गया। थोड़ी बहुत पूञ्जी हमारे गुजारे के लिये बाकी थी। हमारे एक मामा बड़े नेकदिल, और बड़े कृपालु थे। इन की दयादृष्टि के नीचे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हम ने वृद्धि की। मेरा भाई इन्ट्रेन्स तक पढ़ गया और इस ने एक प्राइवेट नौकरी स्वीकार कर ली। मेरी शादी हो गई। दिन अच्छी तरह से गुजरते थे लेकिन दैवको हमारा आराम से जीना पसन्द न आया।

मामा जी जिन का हमको बड़ा सहारा था दो ही दिन बीमार रहकर स्वर्ग सिधारे। रो धो कर हम चुप हो गये। दिल को किसी न किसी तरह शान्ति आ गई। मेरे विवाह से एक वर्ष के अन्दर मेरे पतिदेवता भी इस संसार से नाराज हो कर दूसरे लोक में चले गये। मेरी जिह्वा से यह शोभा नहीं देता कि मैं वर्णन करूं कि मुझ को कितना दुःख हुआ। हिन्दू नारी के लिये इससे अधिक प्राणघातक घटना और क्या हो सकती है? मैं इस समय गर्भवती थी। भाई ने समझाया कि अब रोने धोने से क्या प्राप्त होगा। भगवान की माया का पार किसी ने नहीं पाया। तुम्हारी अवस्था इस समय नाजुक है। सन्तोष करो, हौसला करो। जो तुम्हें इस बात की चिन्ता है कि तुम्हारे खाने-पीने का प्रबन्ध क्या होगा सो मैं यह प्रण करता हूँ कि मैं आयु भर तुम्हारी सहायता करूंगा। और इस ख्याल से कि कहीं मेरी शादी कर लेने पर मेरी धर्मपत्नी का सलूक तुम्हारे साथ अच्छा न हो मैं यह भी प्रण करता हूँ कि मैं शादी नहीं करूंगा। आह! कितना भारी आत्मत्याग! कितना शानदार स्वार्थ-त्याग! बहिन के लिये इतना भारी आत्म बलिदान! मेरे घर लड़का पैदा हुआ, दिन अच्छी तरह गुजर गये। घर का काम काज सब मेरे सुपुर्द था। जो कुछ भाई कमाता था इस में से कुछ खर्च करते थे और कुछ जमा करते जाते थे। बड़ी अच्छी तरह समय निकलता गया। मेरे भाई को धर्म के साथ बहुत प्यार था। जहाँ कहीं भी धर्मोपदेश हो वहाँ वह अवश्य पहुंचते। कभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी योग्यता के अनुसार लेक्चर भी दिया करते थे। देशीय विषयों में आनन्द लिया करते थे। मैं स्त्री जाति कभी कभी डर जाया करती थी तो मुझे हौसला दिया करते थे कि बहिन, मैं कोई बुरा काम तो कर नहीं रहा हूँ। देश और जाति के दुखों को शासकों तक पहुंचाना तो कोई जुर्म नहीं। यदि सरकार को हमारे कष्टों का पता न लगे तो कष्ट दूर कैसे हों। इतने में वहाँ एक दुखदायक घटना घटी।

"एक सबइन्सपेक्टरने हदसे ज्यादा बलात्कार प्रारम्भ किया। किसी की मानप्रतिष्ठा सुरक्षित न रही; लोग तंग हो गये, हर एक दुखी दिखाई देता था। मेरे भाई ने कुछ और नेताओं से मिल कर एक सोसाइटी बनाई जिस ने अपने ऊपर यह भार लिया कि वे इस अफ़सर की क़लई खूब खोलें। डिप्टी कमिश्नर आदि को तार भेजे गये। सरकार के कान तक जूं न रेंगी। सारी प्रार्थनाऐं रद्दी की टोकरी में फेंक दी गई और गवर्नमेंट ने अपने कानों में रूई रख ली ताकि कोई शिकायत सुन न पड़े। सबइन्सपेक्टर साहब का मिजाज़ और भी तेज़ होता गया। अत्याचार और बलात्कार का दौरदौरा आगे से भी अधिक बढ़ गया और इसपर अधिकता यह हो गई कि मेरे भाई और अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध सबइन्सपेक्टर साहब विविध प्रकार के षड्-यन्त्रों में लग गये। सबइन्सपेक्टर साहब इस खोजमें रहने लगे कि किसी तरह अवसर हाथ लगे तो मेरे भाई की गरदन मरोड़ डालें या इसे किसी ऐसी बला में फंसायें कि छठी का दूध याद आ जावे। थानेदार इस उधेड़बुन में था कि इन्हीं दिनों में शोक-जनक घटना हो गई। उस समय तो पुलिस ने कोई प्रबन्ध न किया परंतु बाद में जिस जिस के विरुद्ध चाहा झूठे गवाह खड़े किये और इनका चालान कर दिया। मेरा भाई तो थानेदार की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आंखों में कांटा था ही तुरंत उसका नाम अभियुक्तों की सूची में शामिल कर दिया। उच्च अफ़सरों को लाख बार समझाया गया कि यह केवल शत्रुता के कारण है पर उन दिनों में कौन सुनता था कि अपराधी है या निरपराधी। इस की पड़ताल की आवश्यकता नहीं। इतने आदमी दरकार हैं उपस्थित होने चाहियें। भारतवासियों को दण्ड देना है एक न सही दूसरा सही। पुलिस वालों की तो चांदी है, जिसे चाहे पकड़ लें, जिसे चाहें मुट्ठी गरम किये जाने पर छोड़ दें। मेरे भाई को पकड़ लिया। मैं अबला हैरान कि अब क्या करूं। पुरुष कोई संबंधी नहीं। मैं स्त्री जाति करूं तो क्या करूं? बहुतेरे आदमियों के पास गई, मिन्नत खुशामद की, पर किसी ने न सुनी। अपने व्याख्यानों में पूरा ज़ोर मारने वालों ने भी अत्यन्त मनमुटाव से काम लिया। मेरी सहायता के लिये कोई तय्यार न हुआ।

मेरे भाई को लाहौर ले आये, मैं भी साथ २ आई, भाई से मुलाक़ात हुई। भाई ने तसल्ली दी और कहा कि बहिन मुझे मौत से ज़रा डर नहीं। यह एक ऐसा दरवाज़ा है जिस में से प्रत्येक को आवश्यक तौर पर गुज़रना पड़ता है। फिर इस से डरना परले दर्जे की मूर्खता है। मुझे इस बात की चिन्ता होती है कि तुम क्या करोगी परन्तु यह चिन्ता भी व्यर्थ है। जो भगवान पत्थर के कीड़े को भोजन पहुंचाता है, जो भगवान बच्चे के लिये मां की छाती में दूध पैदा करने का सामर्थ्य रखता है, वह तुम्हारी सहायता करेगा। न घबराओ, मैं निर्दोष हूं यह खूब जानती हो। क्योंकि जिस समय मेरा भीड़ में उपस्थित होना वर्णन किया जाता है उस समय तो घर लेटा हुआ था और मेरे पेट में शूल का दर्द था। थानेदार को शत्रुता निकालने और बदला लेने का अच्छा अवसर मिल गया है। जाओ, घर जाकर आराम करो और चिन्ता और शोक को दूर करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर मेरा दिल इन तसल्लियों से कब खुश हो सकता था ? मैंने यह फ़ैसला किया कि कोई योग्य वकील किया जाय। संभव है कि मेरा भाई छूट जाय। मेरे पास ५००) रुपये नक़द थे और कुछ छोटे छोटे आभूषण थे जिनको बेचकर ५००) रुपये और हो गये। मैंने सोचा कि सुयोग्य वकीलों में से किसी को अपने भाई के लिये कर लूं। मैं अपरिचित, लाहौर तो मैंने कभी देखा भी न था। फिर वकीलों का तो मुझे पता ही क्या था ? एक दो परिचित आदमियों की सहायता से मैंने सुयोग्य वकीलों की सेवा में उपस्थित हो कर सब वृत्तान्त कहा। सब ने बिलकुल निषेध किया। मुक़दमा लेने में मजबूरी प्रगट की। गवर्नमेंट की हमपर भी दृष्टि है, कहीं हम को भी पकड़ न ले। इस लिये हम यह जानते हुए भी कि तुम्हारा भाई निर्दोष है और यह समझते हुए भी कि तुम्हारे पास तुम्हारे भाई के छुटकारे के लिये पर्याप्त प्रमाण हैं, क़ानून सम्बन्धी सहायता नहीं दे सकते। हमें अपनी जान का ख़तरा है। मैं निराश हो गई। जाति के रक्षक और सरदार भीड़ पड़ने पर विपत्ति आने पर यों आंखें फेर लेंगे यह बात मेरे गुमान से सर्वथा बाहर थी।

परन्तु मैं यह निर्णय कर चुकी थी कि वकील अवश्य करना है। मैंने एक दूसरे दर्जे के वकील को कहा। इस ने ५०००) पांच हज़ार मेहनताना मांगा। मैंने इसे अपनी सारी अवस्था पूरी पूरी कह सुनाई। इसने कहा कि हम क्या करें यही समय तो हमारे कमाने का है। बड़े वकील डरे हुए हैं और लोगों को इस समय वकीलों की आवश्यकता बहुत है। इसलिये ऐसे समय यदि भारी मेहनताना न लिया जाये तो फिर कब ऐसा सुनहरा अवसर हाथ लगेगा। बड़ी अनुनय-विनय के बाद उन्हें १०००) पर राज़ी किया और जो कुछ मेरे पास था मैंने उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हवाले कर कर दिया। मुकद्दमे की अवस्था तो बतानी व्यर्थ है। वकील को वहां पूछता ही कौन था? वे किस गिनती में थे? हमारे सफ़ाई के गवाह तो धमका कर निकाल दिये गये। इनकी गवाही लिखी ही नहीं और जो कहीं उनकी ज़बान से मारे भय के कोई ऐसा वाक्य निकल गया जो मेरे भाई के विरुद्ध था तो उसे तुरंत दरज कर लिया। सरकारी झूठे गवाहों ने दिल खोल कर झूठ बोला और मेरे भाई के विरुद्ध खूब विष उगला। मेरा वह रुपया नष्ट हो गया। मैं सर्वथा असहाय हो गई। भाई को फांसी की सज़ा मिल गई। पर जब तक सांस तब तक आस। लोग यही कहते थे कि घबड़ाओ नहीं। यद्यपि यहां से फांसी की सज़ा मिली है परन्तु यह सज़ा रहेगी नहीं। मैं इसी आशा में जीती थी और अपने दिल को शान्ति देती थी। पर हाय! शोक कि मेरी वह आशा भी आज नष्ट हो गई! मेरा भाई मुझ से अलग कर दिया गया। शोक, कि मैं उसे अन्तिम समय देख भी न सकी! मैं अब घर के बर्तन बेचकर यहां तक आई हूँ। मेरी दशा का कौन अनुमान कर सकता है? भगवान के अतिरिक्त और कौन मेरा रक्षक है? हां, इतना तो कहो कि मेरे भाई ने मरते समय कोई संदेश छोड़ा है या नहीं। कर्मचारियों ने कहा—"देवि! खुश हो तुम्हारा भाई एक बहादुर की मौत मरा है। वह सच्चे अर्थों में शहीद हुआ है। फांसी लगने के समय उसके चेहरे पर तेज था, शोभा थी। इसके पांव कांपे नहीं। उसके हाथ नहीं फूले, उसकी आंख में आंसू नहीं आया। अत्यन्त धैर्य और सन्तोष के साथ वह सूली पर चढ़ गया। मरते समय वह एक संदेश दे गया है कि भारतवासियों को चाहिये कि जाति और देश को स्वतन्त्र कराने में सिर तोड़ प्रयत्न करें। तुम्हारे भाई ने यह भी कहा कि मेरा खून व्यर्थ न जाये। इससे जातीय पौधे को भोजन मिलना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवी के चेहरे पर एक झलक दिखाई दी—"मुझे ऐसे भाई की बहिन होने का अभिमान है। जीते जी भी उसने देश और जाति की सेवा की। मरते समय भी उसने इस कर्त्तव्य को अति सुन्दरता से निभाया। मैं भी अब प्रण करती हूँ कि मैं स्त्रियों में जाकर जाति और देश के लिये प्यार पैदा करूंगी और इस नन्हें बच्चे को इस प्रकार की शिक्षा दूंगी कि जिससे देश प्रेमी बन सके। इसे देश के लिये मजनूं बनाऊंगी। इसके दिमाग में वे भाव पैदा करूंगी कि यह देश के स्वतन्त्र कराने में पूरा प्रयत्न करे। क्या हुआ निर्दोष भाई जुदा हो गया! उसकी आत्मा हमारे साथ हैं। भीख मागूंगी, किसी की चाकरी करके पेट भरूंगी; परंतु अपने भाई की अन्तिम आज्ञा को फूल चढ़ाऊंगी। स्वयं जाति पर न्यौछावर हूंगी और अपने बेटे को बलिदान दूंगी। स्वतन्त्रता और स्वराज्य का झण्डा कंधे पर रख के सारे भारत के नर नारी को उनके कर्त्तव्य से सूचित करूंगी और देश के अन्दर नई लहर पैदा करूंगी। परमेश्वर बल दे और सहायता करे यही मेरी प्रार्थना है।

मैं अपने भाई तथा बहिनों से प्रार्थना करती हूँ कि यह पुस्तक सब पढ़ें. यह बहुत ही सुन्दर है। इसमें बहुत ही अच्छी कहानियां लिखी हैं। इन कहानियों से बहुत ही शिक्षा मिलती है। कि जहाँ तक हो सके वहाँ तक यह पुस्तक पढ़ें। यही मेरी प्रार्थना है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"मां, क्या हम डाकू हैं ?"

विमला अपने मकान के बाहर अपनी सहेलियों के साथ खेल कूद रही है। अजान आयु है। सांसारिक झंझटों की चिन्ताओं से स्वतन्त्र है। ईटें पास रखकर घर बनाने की खेल में लड़कियां लीन हैं। शहर में मार्शल ला जारी है। पत्ते तक का हिलना सरकार ने बन्द किया है। कोई किसी से बात करने का इच्छुक नहीं। सब लोग दुबक कर घरों में बैठे हैं। भय का राज्य सर्वत्र है। बात भी सच है क्योंकि इस प्रकार की अन्धेरगर्दी कि कोई भी व्यक्ति सुरक्षित नहीं। जहां कन्धे से कन्धा भिड़ता था, जहां इतनी अधिक भीड़ होती थी कि कठिनता से मार्ग मिलता था। वहां आज इतना सुनसान है कि जंगल और शहर में कुछ अधिक अन्तर नहीं दिखाई देता। बाहर कोई निकला कि बस पुलिस वालों ने शिकार बना झट इसे घटना का उत्तरदाता ठाना या इसे किसी दूसरे अभियोग में अभियुक्त बना चालान कर दिया। रिश्वतखोरी का बाजार गर्म है। सफ़ेद लट्ठे का पाजामा पहने कोई दिखाई पड़ गया या किसी के सिर पर नई मलमल की पगड़ी दीख पड़ी कि बस पुलिस वालों के लिये वही अवस्था हो गई मानों बिल्ली को चूहा मिल गया। अर्थात् न्याय को तो उन दिनों अन्तिम नमस्कार हो चुका था।

(२)

शहर में भय का राज्य है, सब कोई घबरा रहा है। परंतु बेचारे निरपराध बच्चों को इन बातों से क्या मतलब। विमला आयु में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यद्यपि अभी छोटी है पर है बहुत होशियार। बात को ख़ूब स्मरण रखती है साधारण लड़कियों की तरह आलसी नहीं, देखने की शक्ति बहुत बढ़ी हुई है। इसलिये यद्यपि प्रत्यक्ष में खेल कूद में लगी हुई है पर इसके चेहरे पर किसी कदर खेद के चिह्न हैं। अभी थोड़े ही दिन हुये कि पुलिस वाले इसके पिता को पकड़ कर ले गये हैं। इसे लाख सान्त्वनाएं दी जाती हैं कि वह बम्बई गये हैं, वे तुम्हारे लिये खिलौने ख़रीदने गये हैं परन्तु इसके दिल पर गहरा प्रभाव है। वह जानती है कि सरकार इसके पिता को पकड़ कर ले गई है। दिल ही दिल में वह सरकार को गालियां देती है जिसने उसके प्यारे पिता को उससे अलग कर दिया है। लड़कियों में जब बैठती है तो इनको सारी कहानी सुनाती है। बिमला अपने ध्यान में लीन थी कि यकायक चौंक उठी। धड़ाधड़ पैरों का शब्द इसके कानों में पड़ा। इसने जो आंख उठाकर देखा तो अपने सामने पुलिस वालों की पंक्ति खड़ी पाई।

बन्दूकों पर संगीनें चढ़ाये हुए पुलिस वालों ने घर के चारों ओर डेरा डाल दिया। इनका सरदार एक सबइन्सपेक्टर और एक अंग्रेज अफ़सर रिवाल्वर हाथ में लिये हुए साथ था। बिमला बेचारी भयभीत हो गई। घबरा गई। पास की लड़कियां तो ऐसी चकित होकर भागों कि क्षण भर में बिमला के सिवाय और कोई लड़की वहां दिखलाई न पड़ी। बिमला घबराई हुई मां के पास गई और मां से कहा कि देखो तो सही क्या हो रहा है। खाकी वर्दी वालों ने हमारे घर को घेर लिया है। चप्पा २ पर पुलिस वाला खड़ा है। हथियार बारूद सब साथ है। अफ़सर भी पिस्तौल लिये उपस्थित हैं। यह क्या बात है? बिमला की मां दुखों के कारण कुछ निर्बल हो गई थी और प्रायः चारपाई पर पड़ी रहा करती थी। अपने विचारों के गोरखधन्धे में कुछ उलझी सी रहती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थी, साधारणतया उपराम सी दिखाई देती थी। बेटी की यह बात सुन कर होशियार हो गई और खिड़की में खड़ी होकर उसने सारा दृश्य अपनी आंखों से देखा।

सारे घर का घेरा है। मार्ग सब बन्द हैं। ऐसा प्रतीत होता था मानों सरकार अपने सारे सामर्थ्य से कोई क़िला जीतना चाहती है।

(३)

विमला ने कहा, "मां ये कौन हैं ? और हमारे घर इनका क्या काम है ? यह हमसे क्या चाहते हैं ?"

मां – बेटी ! मालूम होता है कि या तो ये किसी को पकड़ने आये हैं या मकान की तलाशी लेना चाहते हैं।

बेटी—मां अब किस को पकड़ेंगे। प्यारे पिता जी को तो ले गये। उनको तो हमसे पृथक् किया हमारे दादा ही हमें दिलासा दिया करते थे। इनके कारण हम कुछ २ अपना दुख भूल चले थे कि इनको भी सरकार ने पकड़ लिया। अब इस घर में कोई पुरुष तो है ही नहीं फिर किसे बन्दी करेंगे। प्यारी मां ! क्या ही अच्छा हो यदि मुझे पकड़ कर ले जायें। मैं अपने पिता जी के पास तो पहुंच जाऊंगी। अपने बड़े पिता जी से कहानियां सुनूंगी। मेरा भी मन उनके बिना उचाट है। मैं उन्हीं के पास जाना चाहती हूं। क्या मैं कहूँ इस अंग्रेज़ अफ़सरको जो सब हथियारों के होते हुए भी डरके मारे घबरा रहा है मुझे पकड़ ले चलो।

मां—बेटी, तुमको नहीं पकड़ सकते, तुम निर्दोष हो, तुमने क्या अपराध किया है। तुमको ये पकड़ नहीं सकते।

बेटी—मां, क्या यह सरकार निरपराधों को नहीं पकड़ती ? क्या यह निर्दोषों को क़ैद में नहीं डालती ? मां, यह तुम कैसे कहती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो, भला कहो तो पिता जी का क्या अपराध था ? बस यही न कि रामनवमी पर सबील लगवाई थी और एक दो उत्सवों का प्रबंध किया था। कौनसा डाका मारा था, किसकी चोरी की थी, किसका कुछ बिगाड़ा था ? अच्छा, उनका तो अपराध था ही क्योंकि सरकार के बलात्कारपर समालोचना किया करते थे पर भला बूढ़े बाबा जी को क्यों पकड़ कर ले गये। सारा दिन भगवद्‌भजन में लीन, झगड़े झमेलों से पृथक् न किसीके लेन में न किसी के देने में। सदा मस्त। बेलाग घर में आनन्द लिया करते थे। भला इनको क्यों हथकड़ी पहना कर जेल में डाल दिया। हां, मैं अब सब समझी। इनका कसूर यह है कि वे पिता जी के पिता हैं। बस, यदि एक इस अपराधपर ये पुलिस वाले किसी को पकड़ सकते हैं तो मैं भी अपराधिनी हूँ। अर्थात् यह कि पिता जी की पुत्री हूँ। मुझे भी तो पिताजी बड़ा प्यार किया करते थे। फिर मुझे क्यों नहीं पकते ?

लड़की की भोलीभाली बातों से मां को और चोट लगी। मांकी आंखों में आंसू उमड़ आये। आंचल से आंखों को साफ किया और विमला को बस यह कह कर चुप कर दिया कि अच्छा जाओ देखा जायगा। अब मुझे इन पुलिस वालों से पता तो लगाने दो कि आखिर बात क्या है।

(४)

मार्शला के दिनों में परदा किसी का क्या बचा था। जिनकी पवित्रतम सूरत पर सूर्य भी दृष्टि डालने में संकोच करता था उन बेचारियों को नंगे मुंह सैकड़ों और हज़ारों के सामने आना पड़ता था। विमला की मां ने भी बिना किसी संकोच के हिन्दुस्तानी पुलिस अफ़सर से सवाल किया कि कहिये कैसे पधारे हैं ? अब मेरी पूंजी क्या शेष रह गई है ? पति आपके हवाले, श्वसुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आपके हवाले, पुरुष की जाति तो अब घर में रही ही नहीं। आपके डरके मारे बन्धुबान्धव मित्रादि कानों पर हाथ धरते हैं। जिन पर लाखों उपकार थे वे आज सूरत देखना पसंद नहीं करते। कहो तो सही अब और अधिक क्या कष्ट है जो आप पहुंचाना चाहते हैं ? शोक कि सरकार की ईर्षा की आग अभी तक ठण्डी नहीं हुई। इस आगको और न जाने क्या भेंट चाहिये। बोलो, शीघ्र बोलो, अब और क्या दरकार है।

पुलिस इन्सपेक्टर यों ही ईश्वर से बराबरी का दावा करते हैं और फिर इन दिनों तो क्या कहना ! इन्द्रके सिंहासन से भी ऊंचा इनका दिमाग पहुंचा हुआ था। मनुष्य तो इन्हें मनुष्य दिखाई देते ही न थे। विशेषता यह थी कि स्त्री जाति का तिरस्कार तो अब इनका प्रति दिन का काम था विमला की मां, की यह बात सुनकर झुंझलाते हुए उसने होठों को यों खोला।

क्या है ? कैसा शोर मचाया है ? हमको इससे क्या मतलब कि तुम्हारे पति पकड़े गये या तुम्हारे श्वसुर बन्दी कर लिये गये ? हम तो अपनी कृतज्ञतापर डटे हुए हैं। हम नहीं जानते कि तुम क्या बक रही हो ? तुरन्त दरवाज़ा खोलो हम अन्दर दाखिल होना चाहते हैं। क्या तुम नहीं जानती कि हम कौन हैं ?

देवी—यह धमकियां किसी और को दीजियेगा। आपकी दिलेरी और हौसले का क्या कहना ? एक साधारण घरकी तलाशी लेने आप इतने तय्यार होकर आये हैं कि मानों किसी बड़े भारी काम को पूरा करना हो। जिस घर में पुरुष तो कहां रहा कोई लड़का भी नहीं, इसके घेरने के लिये आपको इतनी सेना लानी पड़ी। फिर आपकी यह हालत है कि अबला नारी के साथ आप का हाथ पिस्तौल पर रहता है। फिर भी मारे डर के आप यों कांप रहे हैं कि जैसे कोई कम्परोगी हो। मैं तो आपकी गीदड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भभकियों से बिलकुल डरती ही नहीं। मेरा क्या बिगाड़ लोगे? क़ैद में डाल दोगे, सज़ा दे दोगे। फिर होगा क्या ? जहाँ पतिराज गये हैं वहाँ पहुंच जाऊंगी। यों भी तो जीना धर्म नहीं। वे धूलि पर लोटें, वे गर्मियों के दिनों में एक बूंद पानी तक के लिये लाचार हों, वे जानवरों से भी ख़राब खाना खायें, और मैं घर में रहूं यह उचित नहीं। ज़बान अपनी संभालकर प्रयोग कीजिए। मुझे कोई ऐसी वैसी स्त्री ख्याल न कीजियेगा। जो कहीं आपको यह ख्याल हो कि और स्त्रियों की तरह डरा धमका कर, किसी का आँचल खींचकर और किसी के कपड़े उतरवा कर आप मुझे अधीन कर सकेंगे तो यह आपकी भूल है। जान दे दूंगी; जान पर खेल जाऊंगी, परन्तु क्या मजाल कोई मेरी ओर उंगली भी उठा सके। मैं जानती हूँ कि आप लोगों का दिमाग़ फिर गया है और इसलिये आप भी बेलगाम हो गये हैं। परन्तु यह याद रखिये कि मेरे साथ बरताव में जो कहीं आपने सभ्यता को ज़रा भी हाथ से दिया तो मुझ से कोई बुरा न होगा।

इन्सपेक्टर देवी की यह वीरता का वार्तालाप सुनकर चकितसा हुआ। इसने अंग्रेज़ अफ़सर के साथ कुछ सलाह की और देवी को ज़ोर से फिर हुक्म दिया कि दरवाजा खोलो।

देवी ने कहा कि दरवाज़ा खोलने में कोई शंका नहीं। परन्तु क्योंकि पुरुष जाति में से अन्दर कोई नहीं इसलिये जबतक आप किसी विश्वासपात्र तथा प्रतिष्ठित आदमी को साथ नहीं लावें मैं कदापि आपको अपने मकान के अन्दर प्रवेश करने की आज्ञा नही दे सकती। आपका क्या भरोसा है? आप स्वयं ही कोई वस्तु अन्दर रखकर यों ही इसी के आधार पर और कोई झूठा मुक़दमा खड़ा कर दें। झूठे मुकदमे तय्यार करना तो आपका रोज़ का काम है। और इन दिनों तो आप इस शुभकार्य में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विशेष अभ्यास पैदा कर चुके हैं। मैं कदापि आप को दाखिल न होने दूंगी जब तक कोई प्रतिष्ठित आदमी आप के साथ न हो। आपको ख्याल होगा कि आप बल से दाखिल हो जायेंगे। आप यह तो क्या इससे भी ज्यादा अत्याचार करने के अभ्यासी हैं, किन्तु मैंने भी यह ठानी है कि सिर दे दूंगी पर आप को इस तरह अन्दर दाखिल न होने दूंगी। मेरी लाश पर से आप गुज़र जायं तो गुज़र जायं परन्तु एक भी सांस जब तक सीने के अन्दर है आपको अन्दर दाखिल होने देना मेरे लिये लज्जा की बात है।

देवी के इस हौसले को देख कर इन्सपेक्टर साहब घबराये। और दो पुलिसमैनों को दो तीन प्रतिष्ठित आदमियों को बुलाने भेज दिया।

इतने में विमला जो पास खड़ी हुई सब बातें सुन रही थी इन्सपेक्टर से यों बोली—

"आप हमारे मकान पर किस लिये आये हैं? अब आप किसको गिरफ्तार करेंगे? हमारे घर में जो आदमी थे उन्हें हमने आप की भेंट कर दिया। अब तो मेरी मां है या मैं हूं। मुझे ले चलो मैं भी जेलखाने की सैर करना चाहती हूं। यह क्या जीवन है कि मेरे पिता तो गिरफ्तार हों, मेरे बाबा भी कठिनता में फंसे हों, और मैं यहां खेलूं। चलो मुझे भी वहां ले चलो। तुम्हारा इसमें क्या हरज है? तुम्हारे कर्मों में एक और की वृद्धि हो जायेगी। तुम्हारे पापों में एक और बढ़ जायेगा न शंका करो, न संकोच करो। मुझे गिरफ्तार कर लो और ले चलो मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मैं सर्वथा उदास न हूंगी, सर्वथा नहीं रोऊंगी।"

इन्सपेक्टर—"हमको हुक्म नहीं कि हम तुम को गिरफ्तार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करें। तुमने सरकार का कुछ भी अपराध नहीं किया। हम निरपराधों को गिरफ्तार नहीं कर सकते।"

विमला—"ओहो! ऐसी ही सरकार आई कि निरपराधों को गिरफतार नहीं करती! मेरे देखते २ सैकड़ों निरपराधों को तो आपने जेल में डाल दिया है। किस २ का वर्णन करूं मेरी बहिन सावित्री कह रही थी कि उसके पिता को बीमारी के बिस्तरे पर से उठा कर ले गये हैं। उसको कुछ पता भी नहीं कि क्या हुआ, और क्या हो रहा है। पुलिस ने उससे रुपये मांगे, उसने निषेध किया; बस, इसको भी पकड़ लिया। और उस दूसरे मुहल्ले में शान्ति के पिता को भी तो आप लोगों ने व्यर्थ पकड़ लिया है? फिर मेरे लिये कोई दूसरा क़ानून क्यों बरता जाता है? मेरा निश्चय है कि मेरे पिता और बाबा सर्वथा निरपराध हैं। उनसे अधिक निर्दोषी और कोई नहीं हो सकता। अच्छा यदि मुझे गिरफ्तार नहीं करना है तो फिर आप इतनी तैयारियां करके आये क्यों?"

इन्सपेक्टर--तुम्हारे घर की तलाशी ली जायेगी।

विमला--तलाशी, तलाशी क्यों? क्या हम कोई डाकू हैं या क्या हम कोई चोर हैं? आप क्या कह रहे हैं? तलाशी तो ली जाती है बदमाशों की, चोरों की, राहज़नों की। हमारी तलाशी! हमारे पिता तो बड़े प्रतिष्ठित आदमी हैं। जो जाति और देश की सेवा करते हैं उनके घरकी तलाशी! यह भी खूब न्याय है कि जो लोग सचमुच देश के लिये मर मिटने वाले हैं उनको विद्रोही समझ कर उनके साथ चोरों और अपराधियों का सा सलूक किया जाता है। हमारी तलाशी से आपको क्या मिलेगा?

इन्सपेक्टर शायद जवाब कुछ देता या विमला की मधुर निष्पाप वक्तृता से प्रभावित हो जाता इसका फ़ैसला हो जाने के पहले ही दो तीन आदमी साक्षी के लिये आ खड़े हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६

विमला की मां ने द्वार खोल दिया और उन आदमियों को कहा कि वे सरकारी आदमियों की कार्यवाही के गवाह रहें।

द्वार खुलते ही पुलिस के लोग अन्दर दाखिल हो गये। विमला तथा विमला की माँ घबराकर एक छोटे से कमरे में चली गईं। पुलिस वालों ने तलाशी शुरू की। सन्दूक़ पर सन्दूक़ खोलना शुरू किया। विमला की मां के बहुमूल्य वस्त्र पटक पटक कर सत्यानाश कर दिए गए। विमला के पिता के आवश्यक निजू कागज़ इधर उधर बखेर दिए गये। बहुत निर्दयता से तलाशी ली गई। बेचारी विमला के खिलौनों को पृथ्वी पर मार मार तोड़ डाला। किसी सन्दूक का ताला बचा न रहा। जो सामने आया तोड़ फोड़ कर साफ़ किया अर्थात् दो घंटे की लूटमार रही। देहली में ग़दर के दिनों में ऐसी क्या लूट हुई होगी, जो मार्शलला के दिनों में हुई थी। खैर! पुलिस वालों के मतलब का कागज़ प्राप्त नहीं हुआ। न तो कहीं से रूसी नोट निकले और न कहीं से वोल्शेविकों का कोई लेख मिला, न अमीर अफ़ग़ानिस्तान का कोई लेख मिला, न कोई और कागज़ मिला जिससे पुलिस के दिमाग़ की आविष्कृत कहानियों को पुष्टि मिलती। वहां धरा क्या था? भारत वासी तो इस प्रकार की बेहूदा बातों पर विश्वास ही नहीं करते, न इनका रूसियों से सम्बन्ध, न अफ़ग़ान से दोस्ती। उन्होंने तो अब यह मंत्र सीख लिया है कि हिन्दुस्तानियों का भला हिन्दुस्तानियों के अपने हाथ में है।

७

असफल और निराश पुलिस वाले चले गए। विमला ने जब देखा कि वे उसकी चीज़ें बरबाद कर गए हैं, उसके खिलौने तोड़ गए हैं, तो विवश रो पड़ी और मां की टांगों में लिपट कर शिकायत करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मां ने बेटी को प्यार दिया और कहा---मेरी प्यारी विमला! शोक न करो, चिन्ता न करो। सोचो तो सही कि इस समय क्या अवस्था हमपर गुज़र रही है तुमको खुश होना चाहिए कि सब कुछ हमपर इसलिए जारी रखा गया कि तुम्हारे पिता देश की सेवा किया करते थे। हमने कोई अपराध नहीं किया, परमेश्वर परीक्षा ले रहा है, न घबराओ। तुम्हारे पिता जब लौटकर आवेंगे तो तुमको इससे बहुत अच्छे अच्छे खिलौने ले देंगे। मेरे आभूषण भी तो ले गए हैं। थोड़ा बहुत रुपया जो हमारे पास था वह भी तो साफ़ कर गए हैं फिर तुम खिलौनों के लिए क्यों रोती हो ? मेरी अच्छी बेटी, न रोवो। धन्यवाद करो और सौ बार धन्यवाद करो कि तुम ऐसे बाप की बेटी हो जो अपने देश के लिए जेल में है जिसके कारण तुम पर और हमपर इतनी विपत्ति टूटी है। परमेश्वर सदा हमारी ओर से उदासीन नहीं रह सकता। वह दिन समीप है जब ये विपत्तियां अपना रंग लावेंगी और हमारी आह में वह शक्ति पैदा होगी कि संसार चकित होगा। विमला को हौसला आ गया और मां बेटी अपनी बिखरी चीजों को इकट्ठा करने में लग गयीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खिलाफ़त का वली

(५)

अमृतसर के लिए शाह साहब का जीवन सौभाग्य है। आप एक नौजवान पक्के धार्मिक मुसलमान हैं। दिलमें धर्म, जाति और देश के लिये प्रेम रखते हैं। यद्यपि राजनीति में भाग लेते हुए अधिक समय नहीं गुजरा है किन्तु परिश्रम और धैर्य से आपने पर्याप्त प्रभाव पैदा कर लिया है। कुरानशरीफ़ के विषय बहुत अच्छी तरह से मनन करते हैं। प्रसन्नता एक विशेष गुण है। बड़े बड़े समुदायों को अपनी मधुरवाणी से प्रभावित कर लेते हैं, हजारों आदमी बुत बने बैठे रहते हैं जब वे कुरानशरीफ़ की आयतें अति शुद्धता और स्पष्टता से पढ़ते हैं, विचित्र रङ्ग पैदा कर देते हैं। बात बड़ी खरी खरी कहते हैं। लिहाज़ किसी का नहीं। साफ़ सुनाते हैं। ख़िलाफ़त के सिद्धांत के विषय में प्रबल वक्तृताएं देते हैं और इस शहर में व्याख्यान और लेख का काम अत्यन्त ज़ोर से पूरा कर रहे हैं। काम करने में अथक हैं। घण्टों व्याख्यान करवा लो, लगातार प्रातः और सायं 'वाज़' करवा लो, क्या मज़ाल है कि घबरा जायं। कायरता और सुस्ती तो निकट नहीं आती। हर समय तैयार, बड़ी सरगर्मी और मानसिक एकाग्रता से खिलाफत और स्वराज्य के विषय में लोगों के अन्दर ठीक विचार पैदा करते हैं और साधारण प्रजा को गहरी निद्रा से जगाने में पूरा प्रयत्न करते हैं। मार्शलला के दिनों में जब अंग्रेज़ी सरकार के अत्याचार की पालिसी ने सब के दिलों पर भय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पैदा कर दिया था उस समय में भी आप अपने घर से बाहर निकले और सुन्दर आवाज़ को बुलन्द किया। निर्भय होकर आप मैदान में उतर आए और बड़े साहस और हौसले से गवर्नमेंट की अधिक-ताओं पर कड़ी आलोचना शुरू की। अमृतसर में आप की सर्व-प्रियता की तो यह दशा थी कि आप यदि किसी समारोह में न पधारें तो जल्सा फीका कह दिया जाता था और जब आप जल्से की जगह जाते तो 'अल्लाहो अकबर' और 'बन्दे मातरम्' के सुन्दर जयकारों से आप का स्वागत किया जाता। जहां कहीं भी आप अपना प्रभावशाली भाषण करते हज़ारों लोग दयामत में जमा हो जाते। आप के बोलने का ढंग अत्यन्त ही सुग्राह्य है। बीच बीच में कुरानमजीद की आयतें तथा उपयुक्त 'शेर' तो सोने में सुहागे का काम देते हैं। बच्चा बच्चा आप को जानता है और आप के साथ प्यार करता है। अपनी सरलता और अपने जाति और देशहित से आपने हरएक को मोहित कर लिया है। जिधर से आप निकल जाते हैं लोग नमस्कार करते और अत्यन्त प्रेम से स्वागत करते हैं। शाह साहब का जीवन अत्यन्त ही आवश्यक और सम्मान योग्य है। आपने केवल अमृतसर को ही कुछ नहीं बनाया प्रत्युत सारे भारत में आप प्रचार के लिए चक्कर लगाते रहे हैं। कभी हिज़रू में, कभी बदायूं में, कभी बन्नू में, कभी कल-कत्ते में; कभी रावलपिंडी में, कभी लखनऊ में। कई कई दिन लगा-तार रेल का सफ़र ही करते रहते हैं। पंजाब में तो शायद ही कोई स्थान हो जहां आप न पधारे हों। लुधियाना, हुशियारपुर, जाल-न्धर आदि बड़े बड़े शहरों में तो कई कई बार आप का चक्कर लग चुका है। गांवतक आप से लाभान्वित हुए हैं। अमृतसर से दूसरे दर्जे पर आप की दृष्टि में गुजरात है जिसको आपने अपना दूसरा घर बनाया है। वहां आपने बहुत शानदार काम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया है। जातीयता और धर्म का झण्डा ऊंचा किया है। आप ही के कारण वहां एक जातीय संस्था बड़े भारी ढंगपर चल रही है। आस पास के गांव में तो आप ऐसे प्रिय हुए हैं कि सदा बाहर से निमंत्रण आते ही रहते हैं। चन्दा जमा करने में विशेष अभ्यास है। क्षणमात्र में ही लोगों की जेबें खाली कर लेते हैं। जातीय फण्डों के लिये रुपया प्राप्त करने का जितना इन्हे ढंग आता है शायद ही और किसी को आता हो। यही कारण है कि गुजरात के विद्यालय के लिये खूब रुपया लाते हैं और उसका गुज़ारा अच्छी तरह चलता रहता है। खिलाफ़त तथा देश के लिये आप की जान हर समय उपस्थित है। सोते जागते, उठते बैठते बस यही आप की धुन है और इसी नशे में आप सदा निमग्न रहते हैं।

(२)

खैरउद्दीन की मसजिद में जुमे की निमाज़ के लिये आज साधारण से अधिक भीड़ है। कठोर गर्मी के होते हुए भी लोग बहुत आ रहे हैं। सब आङ्गन, बरामदे, कोठे की छतें, अर्थात जितना भी स्थान है सब मनुष्यों से परिपूर्ण है। तिल धरने की जगह नहीं। सब स्थान खचाखच भरा है। जो कभी भी मसजिद में उपस्थित नहीं हुए वे भी आज आये हैं। धूप का समय है। तेज़ गर्मी है। कष्ट बहुत है परन्तु चाव इतना है कि एक दूसरे से आगे होने का प्रयत्न करता है। आज मशहूर है कि शाह साहब का वाज़ होगा। बस, ऐसी खबर अमृतसर में फैली कि लोग सौ काम छोड़कर भी उपस्थित हो गये। शाह साहब ने कुरान-शरीफ़ की तलावत फरमाई। इस हार्दिक श्रद्धा से आप एक एक शब्द को दोहराते हैं कि प्रत्येक के दिल में असर होता जाता है, प्रत्येक व्यक्ति मौन है। सब का ध्यान मौलाना के शब्दों में गड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुआ है। मौलवी साहबने कुरानशरीफ़ की एक आयत की व्याख्या शुरू की। लगातार डेढ़ घण्टा मौलाना साहब वाज़ फ़रमाते रहे। व्याख्या का ढंग आप का इस प्रकार का हृदय-विदारक है कि श्रोताओं में से कोई न होगा जिसके नेत्रों में जल न भर आया हो। वर्णन में यह तो शक्ति है कि रिपोर्ट करने के लिये आये हुए मुसलमान भी प्रभावित होने से बच नहीं सकते। पीछे जाकर भले ही वे रिपोर्ट तय्यार करके झूठी सच्ची गवाहियां तक बनाने में त्रुटि न रखें परन्तु इस समय तो मौलाना की सरल वक्तृता अपना प्रभाव दिखाये बिना नहीं रहती। जिस समय मौलाना ने वर्त्तमान खलीफे की भयंकर करुणा दुर्दशा का चित्र खींचा, उनकी बेबसी का फ़ोटो सब के सामने खींच कर दिखाया, कुस्तुन्तुनिया की दुर्दशा उदारता से वर्णन की, और देशीय मुसलमानों के सामने इनके धर्म्म के पैग़म्बर उत्तराधिकारी के प्रभाव का नाश होना बड़े उपयुक्त शब्दों में वर्णन किया, कुछ तो ऐसे प्रभावित हुए कि स्पष्ट ऊंची ऊंची चीखें मार मारकर रोने लगे। एक विचित्र रङ्ग बँध गया। मसजिद का मकान, अल्लाह का घर, और जुमे की नमाज़, और फिर मौलाना का वाज़ और वह भी बहुत काल के बाद, और फिर खिलाफ़त के विषय का हृदय-विदारक वर्णन, बस एक विचित्र रंग था। इस दृश्य को लेखनी से लिख सकना कोई सुगम बात नहीं। बस, इतना कह देना पर्याप्त होगा कि सारे श्रोताओं में एक बिजली सी पैदा हो गई थी और कम से कम इस घड़ी तो प्रत्येक मनुष्य का दिल यही चाहता था कि वह सब सांसारिक कार्य को छोड़कर खिलाफ़त की सहायता के लिये कटिबद्ध हो जाये। अमृतसर के मुसलमानों के धार्मिक भाव को देखकर जिस समय मौलाना ने अपील की अपने आराम में मस्त मनुष्यों को इतना जोश आया कि वह ख्याल करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगे कि तबतक आराम हराम है जबतक हज़रत ख़लीफ़ा वास्तव में साधिकार ख़लीफा नहीं बन जाते। इस मार्ग पर चलना बड़ा कठिन है। पग पग पर रोक है। मार्ग कण्टकाकीर्ण है पांव ज़ख़्मी होनेका डर है, प्राणातक संशयमें है। किन्तु धर्म के आगे प्रणों की रक्षा की क्या स्थिति है। भारतवासी चिरकाल की पराधीनता के कारण अभी बहुत आत्मबलिदान के लिये उद्यत नहीं हैं परन्तु फिर भी इस सचाई से किसे निषेध हो सकता है कि अनुभव शक्ति पैदा हो रही है और आगे की अपेक्षा लोग अधिक अधिक अपने धर्म के लिये बलिदान होना सीख रहे हैं। वाज़ समाप्त हो गया। मौलाना साहब बैठ गये। अल्लाह अकबर के शब्दों से सारी मसजिद गूंज उठी। लोगों ने अपने मानसिक भावों को प्रकट किया। हर कोने से शाह साहब को मुबारकबाद मिली। प्रत्येक की जिह्वा पर था कि कितनी उत्तम व्याख्या की है, कैसी अनुपम वक्तृता है, शब्दयोजना तथा कबित्व और उपमायें कैसी अद्वितीय हैं। बस, वक्तृता वही जो घर कर जाये और इसी लिये तो मौलाना साहब ने आज दिलों को अधीन कर लिया है। कोई कहता था कि यह कौनसी नई बात है, मौलाना की भाषणशैली सदाही चित्ताकर्षक तथा मनोरञ्जक होती है। अभिप्राय यह कि सब ही सन्तुष्ट दिखाई पड़ते थे। ख़लीफ़ा शरीफ़ के पक्ष में प्रार्थना की गई। अनुनय विनय से अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की गई कि वह हज़रत ख़लीफ़ा के पूर्व अधिकारों को फिर प्रदान करावे और इसलाम की शान को ऊंचा कर दे।

३

प्रातःकाल के चार बजे हैं। अभी अन्धेरा है, प्रकाश ज़रा ज़रा दिखाई पड़ता है। प्रातःकाल उठकर नहर पर जाने वाले या दरवार साहब नहाने वाले इस समय कहीं कहीं बाज़ारों में दिखाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पड़ते हैं। यह पवित्र समय पापियों का नहीं। पापी अपने अन्धे पापों को समाप्त कर चुके हैं। सूरज की पवित्र रोशनी के आगे इनमें खड़े रहने का सामर्थ्य नहीं। भगवान के प्यारे अपने बहुमूल्य स्वप्न को अन्तिम नमस्कार करके उसके ध्यान में लीन हुए हैं और अपने अपने विश्वास के अनुसार भगवान के स्मरण या अल्लाह की सेवा में लग गए हैं इस लिए ऐसे समय बाज़ारों में कोई भीड़भाड़ नहीं है। कोई इक्का दुक्का आदमी या कोई बूढ़ी माई इस समय दिखाई पड़ती है परन्तु आज कुछ साधारण से अधिक शोभा दिखाई देती है न मालूम क्या कारण है, चौक में पुलिसमैन कहीं घोड़ों पर और कहीं पैदल चक्कर लगा रहे हैं। रास्ते बन्द हैं गाड़ी, टांगा या मोटर वाला तलाशी दिये बिना गुज़र नहीं सकता। शहर से जितनी सड़कें बाहर जाती हैं उन पर संगीन का पहरा है। क्या मजाल है कि कोई शहर से बाहर निकल जाय। बरदी पहने सशस्त्र सिपाही खूब जोश से चक्कर लगा रहे हैं। सैर जाने वालों ने देखा और आश्चर्य किया कि यह आज क्या मामला है? कई तो अपनी धुन में ऐसे मस्त चले आ रहे हैं कि उन्हें ख्याल तक नहीं कि आज यह क्या है लेकिन कई जो सूक्ष्मदर्शी हैं वे ख़्याल करते हैं कि आज ज़रूर दाल में कुछ काला है। यह सेना बिना कारण नहीं हो सकती। इसमें कुछ रहस्य है। एकने कहा साहब ! रहस्य क्या है, किसी को गिरफ्तार करना होगा। "प्रातःकाल ४ बजे गिरफ्तारी का कौनसा समय है?" यह दूसरे ने प्रश्न किया। किसी ने कहा "साहब ! इन पुलिस-वालों का क्या पता है? हौसले से तो ये गिरफ्तार नहीं करते। बस ! इसी तरह किसी को कोठी पर बुलाकर चुपचाप पकड़ लेते हैं, किसी को आधी रात उसके घर से जगा मंगवाते हैं। अगर प्रातःकाल ४ बजे पकड़ने आ गए हैं तो आश्चर्य ही क्या है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी ने कहा कहीं मार्शलला न लग जाय? अभी तो पिछले घाव ही नहीं भरे यह अब कोई नई विपत्ति आने वाली है। किसी ने कहा अजी साहब! लगा लेने दो, मार्शलला लगा लेने दो। हम भी अब कायरों की तरह इस अपमान को न सहेंगे जो आगे हम सह चुके हैं। इस बार कोई भी अफ़सर हमको पेटके बल न चला सकेगा। कोई लाख डराये, धमकाये, कैद में डाले या जान से मार डाले अब की हम भी इस तरह की बुरी दुर्गति बनवाने के लिये तैयार नहीं हैं।" इस तरह की बातें करते लोग अपने अपने काम में मस्त चले जाते थे और पुलिसमैन बराबर अपने कर्तव्य पालन में लगे हुए थे। इन के ढंग से ऐसा मालूम देता था कि वे किसी को गिरफ्तार करना चाहते हैं और उन्हें यह डर है कि इष्ट व्यक्ति कहीं दौड़ न जाय और यह गिरफ्तारी भी चुपचाप हो और किसी को पता भी न चले। बस, पुलिस वाले तो अपने अपने घेर में चक्कर लगा रहे हैं कि यकायक खबर पहुंच गयी। कि काम हो गया, असामी गिरफ्तार हो गया, भयकी बात व्यर्थ ही सिद्ध हुई, किसीने झूठी उंगली तक न उठाई, किसी ने निषेध नहीं किया, किसी ने ज़रा उज्र नहीं किया। जान हथेलीपर लिए निकले हुए पोलिटिकिल या धार्मिक दीवाने भला इन गिरफ्तारियों से डरते हैं? क्या कभी इन जंजीरों से भयभीत होते हैं? उनका तो विश्वास ही यही है कि बिना रुकावट और बिना बल और बिना शिकायत के अपने आपको सरकार के हवाले कर देना। क़ैदी या दण्ड से क्या डरना? ईमान की राहपर चलनेका तो अनिवार्य परिणाम यही है फिर इससे क्या भय खाना।

पुलिस वाले तो अपनी कार्यवाही दिखाने के लिए व्यर्थ ही इतनी प्रबल तैयारियां करते हैं। उन्हें क्या मालूम है कि पोलि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

टिकल सेवक तो इस शरीर से प्रसन्नता से तने हुए इस प्रतिष्ठा की प्रतीक्षा में रहते हैं।

४

शाह साहब अपनी भगिनी के घर उनके पुत्र की शादी के उत्सव पर अमृतसर आए हुए थे कि लोगों के लगातार आग्रह पर आपने जुम्मा मसजिद में 'वाज़' फरमाया अन्यथा इनका अमृतसर में इस बार का पधारना केवल निजू काम के लिये ही था। शाह साहब इस लिए इस बार अपनी बहिन के मकान पर ही विराजमान हुए हैं। यह आज जो प्रबल पहरा है उस कूचेके चारों तरफ बहुत अधिक है जहां शाह साहब ठहरे हैं। शाह साहब प्रातःकाल उठकर आवश्यक कर्मों से निवृत्त होकर कभी बैठे हैं कि नीचे से किसी ने शाह साहब को आवाज दी। शाह साहब जरा चौकन्ने हुए, प्रातःकाल ४ बजे इन्हें कौन बुला रहा है? शाह साहब ने जवाब दिया, भाई कौन है? जवाब आया कि आप जरा नीचे आइये। आप के साथ एक आवश्यक काम है। शाह साहब को ख्याल हो गया कि यह वही बुलावा है जिस की उन्हें देर से प्रतीक्षा थी। यह बुलावा साधारण है। शाह साहब ने अपनी बहिन को सलाम किया और कहा कि बिदा लो, अब मैं जाता हूं और जल्दी वापिस नहीं आ सकूंगा। हाजिर तो हुआ था कि शादी की खुशी में सम्मिलित होता लेकिन इससे उत्तम खुशी के लिए निमन्त्रण आ गया है इसलिए लाचार वहां जाना जरूरी है। आप शोक न कीजिएगा ज़रा भी चिन्ता वा यत्न न कीजिएगा। जिस रास्ते पर मैं चला हूँ उसका यह पहला फल है। चित्त को अत्यन्त स्थिर रखें और हौसले को हाथ से न जाने दें। अल्लाह का मार्ग, रसूल के आदेश और खलीफेकी सहायताके लिए यदि विपत्तियों का पहाड़ भी टूटे तो धन्यवाद के साथ स्वी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कार करना हर एक मुसलमान का प्रथम कर्त्तव्य है। बच्चों को जब जागेंगे मेरी तरफ़ से प्यार कह देना। 'सलाम!' यह कहा और अत्यन्त शान्ति से नीचे उतर आये। शाह साहब की इस समय की आकृति देखने योग्य थी। तनपर एक कुरता और एक तहबन्द-सिर नङ्गा, चित्त में शांति, चेहरे पर शोभा; एक अत्यन्त सुन्दर रङ्ग चढ़ा था। आने वाले व्यक्ति के साथ भेंट की, पुलिस वालों के साथ आप की जान पहिचान तो थी ही क्योंकि इनके पीछे नमाज पढ़ने वालों में प्रायः पुलिस वाले ही हुआ करते थे। शाह साहब ने देखते ही फर्माया कि आ गये आप, देर से आप की प्रतीक्षा लग रही थी लोगों में विविध प्रकार की किंवदन्तियां फैल रही थीं कि मैं अब तक क्यों गिरफ्तार नहीं हुआ। धन्य-वाद है उस जगत् के रक्षक का कि वह घड़ी आ पहुंची जिसकी मुझे चिरकाल से प्रतीक्षा थी। सबइन्सपेक्टर ने कहा कि आप फ़िक्र न कीजिए मैं तो केवल आप को कोतवाल के पास ले चलने के लिये आया हूं, गिरफ्तारी का क्या सवाल? साहब ने कहा कि इन व्यर्थ की बातों से क्या लाभ? यह आप उन्हें सुनाएँ जो आप के हथकण्डों से अपरिचित हों या उन्हें डराइये जो गिरफ्तारी से घबड़ाते हों। जो भाव एक नवयुवती वधू के दिल में शृंगार करते हुए पैदा होते हैं उनसे कई गुना ज्यादा जोश के भाव इस समय मेरे दिल से अन्दर उठ रहे हैं। मैं तो इस घड़ी पर न्योछावर हुआ जाता हूँ। मैं अल्लाह का हजार बार धन्यवाद करता हूँ कि मेरी सेवा स्वीकार हुई। इसलाम के मार्ग में जो उचित बलिदान मैंने किया उसको मेरे अल्लाह ने स्वीकार किया, इससे उत्तम और क्या सुख हो सकता है? चलिए, जहां भी चाहें ले चलिए। भगवान की छत्रछाया के नीचे उसकी पवित्र गोद में अर्थात् जहां कहीं भी हो मुझे किसी का डर नहीं। मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किसी प्रकार का भय नहीं। जिसने परीक्षा में डाला है उसी के हाथों में मेरी लाज है। भगवान मेरी सहायता आप करेगा। उसी के सहारे पर मैंने अपनी उम्र की किश्ती इस दरिया में डाल दी है। वह स्वयं कर्णधार बनकर इसको किनारे लगाएगा। वही इसको सब आपत्तियों से सुरक्षित रखेगा और उसकी उपस्थिति में मुझे अणुमात्र भी सन्देह नहीं, भय नहीं।

५

शाह साहब के दोनों हाथों को लोहे की जञ्जीरों में बांध लिया गया और आन की आन में पुलिस के एक दस्ते की रक्षा में कोतवाली पहुंचा दिये गये। एक तङ्ग और अंधेरी कोठरी में शाह साहब को बन्द कर दिया गया। कोठरी की दशा वर्णन करना एक दुष्कर कर्म है। चोर, डाकू, रहज़न, बदमाश लोगों के लिए बनाई गई कोठरियां आज शाह साहब सी पवित्र व्यक्तियों से पूजित होती हैं। ईश्वर की माया है कि जिन कोठरियों मे समाज के अधम दर्जे के आदमी बन्द किये जाया करते थे उन्हीं कोठरियों में आज देश और जाति पर मर मिटने वालों को बन्द किया जाता है। उसी जगह मूत्र, पुरीष, उसी जगह सोना, इसी जगह अपने रचने वाले की सेवा में उपस्थित होना, उसी जगह खाना, क्या सादा जीवन है! क्या सुखदायक मकान है! न कोई साज़ न सामान है। जमीन पर लेटो और याद करो कि अन्त में एक दिन हर एक को जमीनपर लेटना है। शाह साहब जब कोठरी के अन्दर दाखिल हुए तो दुर्गन्ध से दिमाग फटने लगा, लेकिन सुनता कौन है? पुलिस वालों का दिमाग आकाश पर चढ़ा हुआ है और फिर शाह साहब के साथ तो इन्हें विशेष प्रेम है। शाह साहब अपनी वक्तृताओं में इन्हें विशेष सम्बोधन किया करते थे और इन्हें बताया करते थे कि केवल संसार भोगी न बनो कुछ अन्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया। दृढ़ता और साहस तो शाह साहब के अन्दर पहले से ही बहुत था। परन्तु खुदा के इस सन्देश ने शाह साहब के साहस में बहुत बड़ी वृद्धि कर दी। शाह साहब को इस प्रकार अनुभव हुआ मानों किसी ने बिजली की शक्ति अन्दर भर दी है। शाह साहब का चेहरा ज्यादा खिल गया, उन्होंने अपने भगवान का इस सन्देश के लिए धन्यवाद किया।

शाह साहब कुरान शरीफ पढ़ रहे हैं। रसूल की आज्ञाओं को सोच रहे हैं कि दिन छिप गया। सारे शहर में यह समाचार बिजली की तरह फैल गया—"शाह साहब गिरफ्तार हो गये, शाह साहब को पकड़ लिया" जितने मुंह उतनी बातें। किसी ने यह उड़ा दिया कि रात ही रात शाह-साहब को देश-निर्वासित कर दिया है। किसी ने यह कहा कि लाहौर गये हैं। किसी ने कहा कि गिरफ्तार भी नहीं हुए, योंही लोगों की गप्प है। परन्तु शाह साहब के लिये लोगों के दिल में सच्चा प्यार वर्त्तमान था। लोग भारी समुदाय में कोतवाली पहुंच गये। शाह साहब अन्दर कोठरी में बन्द हैं जहां मनुष्य का गुजर नहीं। इस लिये शाह साहब को इसका ज्ञान नहीं कि बाहर क्या हो रहा है। लोगों ने साधारणतया अल्लाहो अकबर, वन्दे मातरम् के जयकार मनाये। इससे पुलिस वाले ज़रा घबड़ाये, पर दांत पीस कर रह गये। भारतवासियों के वन्देमातरम् के जयकार से और मुसलमानों के अल्लाहोअकबर के शब्द से घृणा यह एक विचित्र बात है। अस्तु इतने में शाह साहब के साथ मिलकर काम करने वाले भी पहुंच गये! उन्होंने लोगों को समझाया कि इस प्रकार इकट्ठा होने से कुछ लाभ नहीं है। हमारा प्रथम कर्त्तव्य यह है कि हम आज्ञाओं को मानें और अपनी ओर से अणुमात्र भी ज़्यादती न करें। शांति और नियम का पालन हम पर आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। समझाने से लोग मान गये, और अपने २ घरों को वापिस चले गये। पुलिस के अफसर की आज्ञा प्राप्त करके कुछ वृद्ध पुरुष शाह साहब से मिलने के लिये गये। जाते ही देखा कि अत्यन्त गन्दी सड़ी कोठरी में जमीन पर शाह साहब बैठे हैं। गरमी की ऋतु और फिर अन्धेरी और बन्द कोठरी में धरती पर दुर्गन्ध में पड़े रहने का आनन्द वही लोग जान सकते हैं जिनको इसका अनुभव हुआ है। शाह साहब प्रेमियों को देखते ही खड़े हो गये और वह दृश्य भी क्या विचित्र था। लोह शृङ्खलाओं में से हाथ फैलाकर प्रत्येक ने शाह साहब से हाथ मिलाया। उनके बन्दी होने पर बधाई दी। यद्यपि सब अवस्थायें उदासीन करने वाली थीं परन्तु मौलाना साहब के चेहरेपर तेज था, शोभा थी, चित्त सर्वथा शांत और प्रसन्न था; शोक नाम को न था। गिरफ्तारी की सारी कथा अपनी पवित्र वाणी से उन्होंने सुनाई। उनके छोटे भाईने, जो इस प्रकार की विपत्ति से वास्तव में घबड़ा गये थे, शाह साहब से पूछा कि क्या जमानत दाखिल कर दी जाय। शाह साहबने उत्तर दिया कि कदापि नहीं। इस गवर्नमेंट के साथ मिलकर काम करना एक असम्भव बात है। हमारे मत की यह अप्रतिष्ठा करते हैं। हमारे खलीफे को उन्होंने पदभ्रष्टकर दिया है। सच कहनेवालों को ये कैद करते जाते हैं, या उनके होठोंपर ताले लगाये जाते हैं। फिर किस प्रकार सम्भव है कि ये न्याय करेंगे? कैद तो मुझे होना ही है। यह मुकदमा आदि तो एक बनावटी बात है। फैसला तो गिरफ्तारी से पहले हो जाता है यदि जमानत पर अब छूट भी गये तो क्या लाभ, फिर इसी प्रकार की कोठरी को अपना घर बनाना होगा। बस, मुझे इसका शीघ्र से शीघ्र निवासी बन जाने दो, इस प्रकार से रहने के ढंग का मुझे अभ्यासी बन जाने दो ताकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिन दिन इस प्रकार के कष्ट की सम्भावना बनी रहे। वह मेरा शत्रु होगा जो मेरी जमानत दाखिल करेगा। मैं जातिका एक तुच्छ सेवक हूँ। परन्तु अपने धर्म के अनुसार मैं असहयोगी हूँ। इसलिये अपने नेताओं की आज्ञा के विरुद्ध किंचिन्मात्र भी कार्य न करूंगा। एक दूसरे सम्बन्धी ने प्रश्न किया कि क्या कोई कानूनी सलाह-कार नियत किया जाय। मुकदमे की पैरवी की जाय? इसपर शाह साहबने ज़ोर से अट्टहास किया और फ़रमाया कि शोक भारतवासी अभीतक यह ख्याल किये बैठे हैं कि अंग्रेज़ी अदालतों में न्याय होता है। भाई न्याय कहां? और फिर पोलिटिकल मुकदमों में न्याय! स्वयं ही अभियोग चलाने वाले, स्वयं साक्षी, स्वयं ही न्याय करनेवाले, तो फिर न्याय कहाँ का! मेरा तो निश्चय है कि लाख वकील हों, लाख गवाह हों; लाख सफाई पेश की जाय, यहां तो जो पहिले निर्णय हो चुका है वही होगा। वकील करना, सफाई पेश करना, इन सरकारी न्यायालयों का सम्मान बढ़ाना है। इनसे न्याय की आशा करना अपने आप को धोखा देना है। मेरी यह निश्चित सम्मति है कि मेरा निश्चय इन हाकिमों और इन अदालतों से सर्वथा उठ गया है। मैं इन्हें न्याय करने के योग्य ही नहीं समझता। ऐसे अभियोगों में तो न्याय की आशा अपनी मूर्खता का प्रमाण है। इसलिये मैं बड़े बल से इस बात की प्रार्थना करता हूँ कि न तो मेरी जमानत दाख़िल की जाये, न मेरे लिये कोई वकील नियत किया जाये, न मेरे लिये कोई सफाई के गवाह पेश किये जायं। बस, मुझे मेरे कर्ता के अधीन कीजिये और शांति और धन्यवाद से जो कुछ उसकी ओर से फल मिले स्वीकार कीजिये। दिल को चिन्तित न कीजिये देश और धर्म की सेवा कोई बालकपन का खेल नहीं। सिर बलिदान करने की यदि सामर्थ न हो तो इस ओर मुंह न करे। दृढ़ चारित्र्य,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सत्यप्रियता, आत्मबलिदान का पाठ यदि स्मरण न हो तो इस पाठशाला में न आये। रही मेरी दशा। मैं तो एक गरीब बेकस विद्यार्थी हूँ। मैं अभी अनुभव शून्य और लोकव्यवहार-अनभिज्ञ हूं। मैं अभी कुछ नहीं कह सकता कि मेरे साथ क्या क्या गुजरेगा। परन्तु मैं आप लोगों को निश्चय दिलाता हूं कि कुरान शरीफ की आज्ञाओं पर आचरण करते हुए यदि मैं रूई की तरह उड़ा दिया जाऊं, यदि मुझे कोल्हू में डाल कर मेरा तेल निकाल लिया जावे तो मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझूंगा, उफ तक अपनी जिह्वा पर न लाऊंगा, मेरी ओर से आप निश्चय रखें कि मैं किसी भी कष्ट, विपत्ति या दुख से डरकर अपने धर्म को नहीं बिगाड़ूंगा।

६

श्रोताओं के दिलोंपर शाह साहब के इन शब्दोंने कितना प्रभाव किया इसका अनुमान लगाना कठिन है। पर इतना कहना तो सर्वथा उचित होगा कि इस समय सब के दिल अत्यन्त प्रसन्न हुए। जो जाति शाह साहब सा व्यक्ति पैदा कर सकती है उसका भविष्य बुरा नहीं हो सकता। जिस ख़िलाफ़त की सहायता में इस तरह के धर्मपरायण व्यक्ति अपने प्राण बलिदान कर सकते हैं, वह ख़िलाफत अवश्य अपने लुप्त बल को प्राप्त कर लेगी। शाह साहब को सबने एक बार फिर हार्दिक बधाई दी और सब ने परमात्मा के सम्मुख अत्यन्त नम्रता से प्रार्थना की कि वह शाह साहब को धैर्य्य दें, साहस दें, सन्तोष दें, और बल दें कि वे इस परीक्षा में पूरे उतर सकें।

ज्यों ज्यों दिन बढ़ता गया सारे शहर में समाचार अधिक फैलता गया। और लोग शाह साहब के दर्शनों के लिये अधिक से अधिक पहुंचने लगे। पुलिस वालों ने तुरन्त मोटर मँगा शाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साहब को सवार कर अमृतसर जेल में भेज दिया। स्वयं बड़े बड़े अफ़सर साथ थे। पोलिटिकल अपराध में गिरफ़्तार होना और क़ैद होना कोई साधारण बात तो नहीं है? बड़ी शान और शौकत से यह सब कार्यवाही होती है। नियत वेश से सुसज्जित सिपाही सेवा में उपस्थित होते हैं। बड़े बड़े अफ़सर साथ होते हैं। नियत स्थान पर पहुंचने से पूर्व ही सूचना पहुंच जाती है और एक शानदार स्वागत की तय्यारियां हो जाती हैं। शाह साहब को जेल में एक एकान्त कोठरी में बन्द कर दिया गया। ईश्वर की माया है। कभी मसजिद में इमाम हैं और कभी चोर डाकू की तरह केवल अपने धर्म और विश्वास के लिये एकाकी, एक तंग और अन्धेरी कोठरी में क़ैद हैं। अभी कल तो यह शान थी कि सैकड़ों लोग दर्शनों से तृप्त होते थे, भिन्न भिन्न प्रकार के जटिल प्रश्नों और व्यवस्थाओं पर बात चीत होती थी और आज केवल अपना आप हैं। कोई बात नहीं कर सकता। किन्तु क्या हुआ, आदमिओं का साथ तो छूट गया। मित्र प्यारे तो अवश्य दूर हो गये। शिष्य तथा भक्त भी सेवा में उपस्थित नहीं हो सकते। परन्तु ईश्वर की पवित्र शक्ति तो बाल बाल में वर्त्तमान है। इस पवित्र शक्ति से कितना लाभ पहुंचता है और ऐसी आपत्ति की घड़ी में कितना धैर्य्य तथा शान्ति मिलती है, इसका स्वाद केवल वही लोग बता सकते हैं जो परमात्मा के प्यारे हैं। संसारवाले ईश्वर के प्रेम का स्वाद क्या जानें। यह वही जाने कि जो इसमें लीन हो गया हो।

७

ज़िला की कचहरी में आज पुलिस की बड़ी दिखावट है। बड़ी बड़ी लाठियां लिये हुए पुलिस के सिपाही अदालत के मैदान में चप्पा चप्पापर खड़े हैं। कई तो बन्दूक़ पर संगीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चढ़ाये तय्यार खड़े हैं ! कई सबइन्सपेक्टर तथा इन्सपेक्टर देशी तथा अंग्रेज़ रिवाल्वर आदि से सुसज्जित तय्यार हैं। आज क्या मामला है ? भीड़ भी आज असाधारण है। आज शाह साहब का मुक़द्दमा पेश होने वाला है। पंजाब के कई ज़िलों के भी लोग शाह साहब के दर्शन तथा उनके मुक़द्दमे की कार्यवाही सुनने के लिये आये हैं। पर्याप्त भीड़ है। अभी अदालत के अफ़सर नहीं पहुंचे। वह अपना आराम देखें कि समय पालन पर ध्यान दें। पुलिस वाले लोग भी बड़े चालाक होते हैं। सब लोग एक ओर ताकते ही रह गये कि पुलिस ने मौलाना साहब को एक बन्द गाड़ी में दूसरे मार्ग से लाकर एक कमरे में बिठा दिया। लोग निराश हो गये। एक मिनट के लिये दर्शन भी न कर सके। पुलिस का पहरा बड़ा प्रबल है। अदालत के कमरे से पर्याप्त दूर तक जनता में से किसी को आने की आज्ञा नहीं। क्या विचित्र दृश्य है ! एक साधारण पुरुष से—जिसके पास फ़ौज नहीं, हथियार नहीं, जिसका धर्म दूसरे को कष्ट देने के प्रतिकूल है—सरकार को इतना भय है कि उसके मुक़द्दमे के लिये इतनी तय्यारियां करनी पड़ती हैं। विशेष विशेष व्यक्तियों को अदालत के कमरे में प्रवेश करने की आज्ञा मिल गई। अदालत के कमरे में पर्य्याप्त भीड़ हो गई। कुछ ही मिनट गुज़रने के बाद शाह साहब पुलिस की अधीनता में अदालत के सम्मुख पेश किये गये। मुक़द्दमा शुरू हो गया। अदालत ने शाह साहब से सवाल किया, आपका वकील ? मेरा वकील मेरा खुदा, मेरा रसूल है जिनकी आज्ञानुसार मैं आज इस कटहरे में खड़ा हूँ। कोई मनुष्य मेरी क्या वकालत करेगा ? और सच तो यह है कि कोई मनुष्य मेरा क्या न्याय करेगा ? मैंने सब बचने के उपायों को छोड़ दिया है। जिस प्रकार आपका जी चाहे करें। अदालत ने कहा, चलो छुट्टी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुई। अभियोक्ता के गवाह शुरू हुए। सब से पहले रस्मी गवाहियां शुरू हुईं। फिर अवसर के गवाह पेश हुए। अभियोक्ता के गवाहों की गवाही सुनकर सच्चे भारतीय तो मारे लज्जा के सिर झुकाये हुए थे। हिन्दुस्तानी कितना गिर गये हैं! पापी पेट ने इन्हें कितना तुच्छ बना दिया है! जाते हैं ख़ुदा के मकान में नमाज़ अदा करने और अल्लाह के सम्मुख अपने पापों का प्रायश्चित्त करने और काम करते हैं चुग़लख़ोरी का और फिर व: भी सिर से पैर तक झूठ। एक सिरे से दूसरे सिरे तक असत्य।

शाह साहब का चेहरा सुप्रसन्न है। जब अपने विरुद्ध निराधार गवाही सुनते हैं तो मुस्करा कर यह कहते हैं कि अभी हिन्दुस्तान में बहुत प्रयत्न से काम करने की आवश्यकता है। मुसलिम का मान क्यों कम न हो, मुसलमानों की हृदय विदारता के सामान क्यों पैदा न हों, जब अभी तक इस जन्म के मुसलमान अपने आपको मोमिन कहलाने वाले उपस्थित हैं, जो ख़ुदा के घर में केवल इस लिये जाते हैं कि झूठ बोलें और दो चार चांदी की ठीकरियों के बदले में धर्म जैसी बहुमूल्य वस्तु को निःसंकोच बेच दें। सारे के सारे मुसलमान गवाह लंबी लंबी दाढ़ीवाले, हाथ में माला और माथे पर मसजिदों के कारण महराब के निशान रखने वाले किस तरह बनावटी गवाही दे गये; यह देखकर कलेजा मुंह को आता है। ख़ूब मिसल तय्यार हो गई, जी भरकर पुलिस ने शाह साहब पर दोष लगा दिये। कोई जिरह नहीं, कोई सवाल नहीं; उनके झूठ सच की यहां पड़ताल नहीं हुई। इन अदालतों से जब झूठ सच का विचार ही उठ गया तो क्यों कोई सिर खपाई करे। गवाहों पर जिरह करके कौन उनको झूठ बतलायें? ये लोग जो धर्म-बिक्री के कार्य्य में इतने चतुर हैं, शोक कितने अंधकार में हैं! हिसाब के दिन क्या मुंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिखायेंगे ! जिन निरपराधों के गलेमें इन लोगों की झूठी गवाहियों-से फंदा पड़ता है; वे जब क़ायामत (महाप्रलय) के दिन उनका आंचल पकड़ेंगे, फिर उस समय कौनसी सरकार, कौनसी पुलिस, कौनसी उपाधियां, कौनसी जागीर इनकी वकालत कर सकेंगी ? इस चार दिन के जीवन के सुख पर आत्मा को न भूलो। याद रखो कि यही जीवन ही अन्तिम जीवन नहीं है। तुम्हारी नमाज़, तुम्हारे रोज़े, तुम्हारा दान-पुण्य; तुम्हारा हज, सब व्यर्थ है यदि तुम इस तरह झूठ बोलते हो और निर्दोष आदमियों को निष्कारण विपत्तियों में फंसाते हो।

मुक़द्दमा समाप्त हो गया। जो कुछ कि मौलाना साहब ने कभी स्वप्न में भी न सोचा था वह उनके सिर थोप दिया गया। संसार भरकी अनाप शनाप बातें उनके सिर मढ़ दी गई। अदालतने सवाल किया कि क्या कोई बयान देना है। शाह साहब ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया कि बयान देने से क्या लाभ ? कौन सुनेगा ? जब पहले ही सब बातों का निर्णय हो चुका है तो मेरा बयान क्या परिवर्तन कर सकेगा। मेरा केवल यह बयान है, कि अपने पवित्र रसूल की आज्ञा में उसका एक नम्र जीव होने की अवस्था में मैं अपने लिये एक आवश्यक कर्त्तव्य समझता हूँ कि मैं कुरान शरीफ़ की आज्ञाओं का पालन करूं। और ऐसा करने में चाहे लाख विपदाओं का सामना करना पड़े, उफ़ तक न करूं। मैंने मसजिद में क़ुरान शरीफ़ की एक आयत की व्याख्या की थी उसी आयत को मैं पढ़ देता हूं। यदि ईश्वर के घर में बैठ कर कुरान शरीफ़ पढ़ना और पवित्र वाणी लोगों को सुनाना और उसके अर्थों को मुसलमानों तक पहुंचाना अपराध है तो मैं अपराधी हूँ। और ऐसा अपराधी मैं हज़ार बार बनना चाहता हूँ। खुदा की आज्ञानुकूलता यदि मनुष्य की दृष्टि में अपराध है तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं उत्तरदाता नहीं, खुदा के सामने मैं और किसी को हाकिम नहीं मानता। जी खोल कर दण्ड दीजिये। यह जीबन भी कोई जीवन है! अपने देश में परदेशी और परदेश में जानवरों से भी बुरे! न खाने को दाना और न पहने को कपड़ा प्राप्त! भारतवासियों से बढ़कर कष्ट किसे होगा? इस प्रकार के तिरस्कृत जीवन से तो मृत्यु कई गुना अच्छी है। कैद का मुझे ज़रा भी डर नहीं। वहां चित्त को शान्ति मिलेगी। स्वतन्त्र रह कर यदि देश और धर्म के लिये कुछ न किया तो लज्जा का कारण है। किन्तु जब पराश्रित ही हो गये तो फिर तो कोई उत्तरदायित्व भी न रहा।

खिलाफ़त का विषय भारतीय मुसलमानों की जान है। भारतीय मुसलमानों के दिल कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकते जब तक उनके रसूल के उत्तराधिकारी की स्थिति फिर से वैसी नहीं हो जाती। हमें क्या पता था कि इंगलैंड के मन्त्री वचन तोड़ मरोड़ देंगे। हमने तो इङ्गलैंड की शान के लिये एक ही कलमा बोलने वाले मोमिनों पर गोलियों की बर्षा बरसा दी। क्या उसका फल है कि कुस्तुन्तुनिया अपने पद से गिरा दिया जाये और हमारा खलीफ़ा प्राण की रक्षा के लिये आश्रय ढूंढ़ता फिरे। स्वराज्य तथा खिलाफ़त के लिये प्राण तक उपस्थित हैं। और जब तक यह जिह्वा स्वतन्त्र रहे और यह शरीर अपने कर्त्तव्य पालन में स्वाधीन रहे तब तक यह असंभव है कि मैं इस हलचल से हट सकूं। मेरा बयान कुछ भी नहीं। मैं यह भी नहीं कहना चाहता कि अभियोक्ता के गवाह बनावटी हैं। मैं यह भी कहना उचित नहीं समझता कि कई तो उन में से मेरी वक्तृता का एक अक्षर भी नहीं समझ सकते, किन्तु इस समय तोते की तरह सब कहानी दुहरा गये हैं। मुझे इससे भी कुछ अभिप्राय नहीं कि इनकी सांसारिक स्थिति क्या है। संभव है कि इनमें से कई शायद वहां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपस्थित भी न हों। परन्तु इससे कुछ विवाद नहीं। जो कुछ उन्होंने कहा है उसे अक्षर अक्षर विश्वास कर लीजिये और हुक्म दे डालिये। मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि कोई लाख दुःख पहुंचाये, एक बार नहीं सौबार क़ैदखाने में डाल दे, चप्पा चप्पा शरीर की खाल नोच डाले, फांसी पर लटका दे, जायदाद सब ज़ब्त कर ले, आंखों के सामने बच्चों को नेज़े से छेद डाले, क्या मजाल है कि दिल पर तनिक भी प्रभाव हो सके। यह वह नशा ही नहीं है जिसे तुर्शी (खटाई) उतार दे। यहां तो सच्चा अनुराग था। जब तक सांस चलता है बस यही हमारा तराना, यही हमारा रक्षामन्त्र यही हमारी दुहाई है, अर्थात जो कुछ है, बस ख़िलाफ़त और स्वराज्य है।

६

मजिस्ट्रेट ने पुलिस को इशारा किया कि शाह साहब को ले जाओ। दो चार दिन में हुक्म सुना दिया जायेगा। शाह साहब ज्योंही बरामदे में गये लोगों ने अल्लाहो अकबर तथा बन्देमातरम् के जयकारों से अन्तरिक्ष को गुंजा दिया। देशके लिये विपत्तियां झेलने वालों के साथ साधारण लोगों को कितना प्यार है, इसका परिमाण जानना हो तो इस प्रकार के किसी दृश्य को देख लो। लोगों के अन्दर कितना दिली जोश तथा सच्चा प्यार है उसका अनुमान इस बात से थोड़ा बहुत लग सकता है कि शाह साहब के दर्शन पाने की इच्छा से एक दूसरे से आगे बढ़ा जाता है। हर एक का हाथ शाह साहब को सलाम के लिये उठता है। शाह साहब ने अत्यन्त प्रसन्नता से लोगों के सलाम का जवाब दिया और उन्हें आदेश दिया। इस शान्ति में ज़रा भी विघ्न न हो। यदि मैं क़ैद हो जाऊं जो एक निर्णीत बात है, तो क्रोध के भावों को उत्पन्न न होने दो। धर्म और देश के लिये क़ैद होने पर प्रसन्नता प्रगट होनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाहिये। चिन्ता और क्रोध का क्या काम है मेरा निश्चय है कि "हमारी मुक्ति जेल के दरवाजे में से गुज़रे बिना असंभव है।" उन कोठरियों में जहां बदमाश रहा करते थे जब देशभक्त अपना निवास शुरू करेंगे और जेलखानों को जाति के सेवक भर डालेंगे तो उस समय भारत की कठिनता और मुसलमानों के कष्टों का एकबार ही अन्त हो जायेगा। लो सलाम। न मालूम कबतक यह वियोग रहे। मेरे लिये मङ्गल प्रार्थना करना। मुझ अयोग्यको भूलना नहीं। यदि जीवित रहा तो आकर चरण-चुम्बन करूंगा। नहीं तो जो वहीं बुलावा आगया तो मेरे लिये मंगल कामना करना। मैं आपका तुच्छ सेवक हूँ। और मैंने अपनी योग्यता के अनुसार भली बुरी सेवा की है। सरकार ने तो इसे स्वीकार कर लिया है आशा है, आप भी स्वीकार करेंगे। मेरी एक अन्तिम प्रार्थना है कि काम बन्द न हो आन्दोलन निर्बल न होने पाये। अमृतसर के सिर पर यह बड़ी ज़िम्मेदारी है। और अमृतसर के लोगों को तब तक आराम से अलग रहना चाहिये जबतक हमें इस शान्त युद्ध में विजय प्राप्त न हो। लो ईश्वर रक्षक है। सलाम।"

लोग उदास हो कर घरों को लौटे। क्या हो सकता है? एक प्रबल शक्ति के आगे किसी की क्या पेश है, किसी का क्या ज़ोर चलता है। लाख लोग निश्चय रखें कि शाह साहब सर्वथा निर-पराध है जब समय के अधिकारियों का भाव भिन्न है तो फिर उपाय क्या है? परन्तु लोग इस बात से बहुत खुश हैं कि शाह साहब ने असहयोग पर पूर्ण रीति से स्थित हो कर अमृतसर की लाज रख ली है।

शाह साहब को तीन बरस कैद का हुक्म सुना दिया गया है। उस में से तीन महीने एकान्त कारावास है। कितनी कठोर सज़ा है। शाह साहब ने कौनसा चरित्र संबन्धी दोष किया है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिस की यह सज़ा होनी चाहिये कि वह तीन महीने एकान्त में काटें। शाह साहब तो इस से सर्वथा मुक्त हो चुके हैं। एकान्त वास में उन्हें अधिक अवसर मिलेगा कि वे अपने कर्त्ता के सम्मुख उपस्थित रहें और उस से प्रार्थना करें कि वह भारतवासियों को कठिनता दूर करे। परन्तु गवर्नमेंट के न्याय पर तो एक और काला दाग़ लग जाता है। और हमारे लिए तो बस केवल एक वस्तु आवश्यक है कि हम सन्तोष से उन सब विपत्तियों को सहें और भगवान से याचना करें कि वह हमें हौसला दें, साहस दें कि हम कभी बदला लेना न सोचें, हम किसी के जान और माल पर कभी हाथ तो क्या दृष्टि भी न डालें और उस के बताए हुए सीधे मार्ग पर चलें।

शाह साहब के पूज्य पिता एक वृद्ध पुरुष हैं। नौजवान बेटे के बिछोह से आप को बहुत कष्ट हुआ है। हज़रत याकूब और हज़रत यूसुफ़ का किस्सा दोहराया गया है परन्तु शाह साहब के पिता एक महान् पुरुष हैं। शिकायत का नाम नहीं। अल्लाह पर इन्हें इतना भरोसा है कि वह यह ख्याल करते हैं कि जो कुछ अल्लाह करता है जीवों की भलाई के लिए करता है। क्या हुआ यदि उस समय अज्ञान के कारण मनुष्य भला बुरा न पहिचान सके परन्तु खुदा की तरफ़ से जो होता है सदा ठीक ही होता है। शाह साहब के घर वाले लोगों की सहायता के लिए पब्लिक ने कुछ धन भेंट किया परन्तु उन खुदा के बन्दों ने साफ़ निषेध कर दिया।

शाह साहब की इस वीरता की घटना से तथा शाह साहब के घर वालों के अनुकरणीय साहस से पंजाब में नया जीवन पैदा हो गया। परमात्मा करे कि इस में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नरकेसरी और वीरपत्नी

कटरा जयमल सिंह में एक मकान की ऊपर की छत पर एक प्रतिष्ठित महिला चारपाई पर लेटी एक पुस्तक का अध्ययन कर रही है। यद्यपि प्रत्यक्ष देवी की आंखें पुस्तक पर लगी हैं परन्तु चेहरे से प्रगट होता है कि किसी गहरी सोच में लीन है। चेहरा पीला है, आंखों के चारों ओर रेखायें बन गई हैं। शरीर बड़ा दुर्बल हो गया है। विचित्र उलझन में फंसी है। शरीर गिरा जा रहा है। दिल बैठता जाता है। विचारों के गोरखधन्धे से छुटकारे की कोई सूरत दिखाई नहीं देती। दिल की अवस्था आंखें प्रगट कर रही हैं। कई रात से लगातार तारे गिनने में मग्न रहने से चेहरा मन्द पड़ा ही है। इस उधेड़ बुन में ही थी कि यकायक मकान के नीचे शोर सुनाई दिया। भगवान, यह क्या बला आई। माशंलला के दिनों में ज़रा सा भी खटका किसी के मकान के नीचे हुआ कि उस ने ख्याल किया कि सिपाही आये। देवी ने साहस करके झरोखे से मुंह बाहर निकाल कर जो देखा तो दंग रह गई। समीप था कि मूर्च्छित हो कर धरती पर गिर पड़ती। चिन्ताओं से अर्धमृत तो थी ही, जब उसने यह देखा कि पुलिस तथा फ़ौज के सिपाही वर्दियां सजाये हुए उस के घर को घेरा डाल रहे हैं, भांप गई, कि वह आपत्ति जिस की ओर से खटका लगा हुआ था, अन्त को आ उपस्थित हुई। गोरे सिपाही, अंग्रेज़ अफ़सर बन्दूकें, तोपें, भला इस देवी ने कब देखी थीं। यह दृश्य देखते ही अवाक् हो गई। अत्यन्त घबरा गई। पसीना २ हो गई। परन्तु उस ने अपने दिल को समझाया। यदि दुःख और आपत्तिके समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धैर्य्य और साहस से काम न लिया तो दुनियां क्या कहेगी। आखिर दुःख मनुष्य के ही लिये हैं। कुछ परवा नहीं, इस शरीर की स्थिति भी क्या है? वही जान है जिसे आन की आन में पतंग दीपककी ज्वालापर न्यौछावर कर देता है। वही जान है जो हक़ीकत ने एक पलभर में अपने धर्म के लिये वार दी है। क्या मेरी जान उस जान से अधिक प्यारी है जो पद्मिनी की थी जो अपने सतीत्व के लिये जलकर राख हो गई? नहीं, घबराने की कोई आवश्यकता नहीं, जो कुछ भी आयेगा देखा जायेगा।

सिपाहियों ने द्वार तोड़ डाला है। उन दिनों भला न्याय का राज्य था? उन दिनों के कार्य तो बड़ी बड़ी कुव्यवस्थाओं को मात करते हैं। विचित्र दशा थी। किसी पर सन्देह भी हुआ कि बस उसे धूल में मिला देने के लिये ज़रा भी देर नहीं। अफ़सरों की बला से चाहे कोई निर्दोष है, क़ानून की पकड़ में नहीं आ सकता, उसका घर बार उजाड़ देना एक साधारण सा काम था।

सिपाही बड़े बलसे ऊपर चढ़ आये। संगीन चढ़ाये। खूनी आकृति, खूनी वेश अत्यन्त भयंकर बने हुए वह उस कमरे में ज़बरदस्ती प्रविष्ट हो गये जहां वह देवी वर्त्तमान थी। एक सिपाही ने अत्यन्त तिरस्कार के ढंग से पूछा कि तुम्हारा पति कहां है।

देवी—तुम कौन हो और क्यों इस तरह एक स्त्री के कमरे में बिना आज्ञा के आ गये हो?

सिपाही--हम सरकार के विश्वासपात्र, क्रीतदास और प्राण तक बलिदान कर देने वाले सिपाही, और हम तुम्हारे पति को पकड़ने आये हैं। बिना आज्ञा के तुम ने खूब कहा। वह दिन गये कि जब हम इन नियमों का पालन किया करते थे। अब हम इस बात की परवाह ही क्या करते हैं? हम इन बन्धनों से अब स्वतंत्र हैं, जो जी चाहे करें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवी--परन्तु एक स्त्री के कमरे में उसकी आज्ञा के बिना प्रवेश करना किस प्रकार उचित कहा जा सकता है ?

सिपाही--हम उचित अनुचित के विवाद से अब मुक्त हैं। हमें अब इन बातों की सर्वथा परवाह नहीं। बोलो, शीघ्र बोलो; तुम्हारा पति कहां है। हम उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं।

देवी--मेरे पति का ऐसा क्या अपराध है कि जो आप उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं ? सारा संसार साक्षी है कि उसने कभी कोई अपराध ही नहीं किया, तो फिर उसे गिरफ्तार करना क्या अर्थ रखता है ?

सिपाही--तुम्हारे पति ने विद्रोह किया है। वह विद्रोही है, सम्राट का शत्रु है, उसने उम्राट के विरुद्ध युद्ध आरंभ किया है।

देवी--ज़रा ज़बान संभाल कर बोलो। यदि एक शब्द भी मेरे सामने मेरे पति महाराजके विरुद्ध कहा, तो मुझसे अधिक कोई बुरा न होगा। निश्चय जानो मैं अपने पतिकी निन्दा नहीं सुन सकती। उस ने सरकार का कभी अपराध नहीं किया वह चोर डाकू बिल्कुल नहीं।

सिपाही--लंगर खोल खोलकर लोगों को रोटियां खिलाता है। शहर में पहरा दिलाता है। बहुत सा प्रबन्ध कराता है। क्या यह विद्रोह नहीं ? गरीबों की सहायता करता है, क्या यह सम्राट के विरुद्ध युद्ध नहीं ? रौलेट एक्ट के बिरुद्ध हलचल करता है, क्या यह सम्राट के विरुद्धाचरण नहीं है ?

देवी--क्या समय अब ऐसा आगया है कि हड़ताल के दिनों में लंगरख़ाने खोल कर बेघरों को रोटी खिलाना विद्रोहाचरण समझा जाता है और लूट मार से शहर को सुरक्षित रखने का प्रबंध करना सम्राट से युद्ध है ? हे आकाश ! देखते क्या हो, टूट पड़ो ? हे वसुन्धरे ! अब और क्या प्रतीक्षा है, फट जाओ !

सिपाही--अधिक तकरार न करो, शीघ्र पता दो कि तुम्हारा पति कहां है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवी—मैं नहीं बता सकती कि वे कहां हैं।

सिपाही—क्या तुम्हें पता नहीं कि वे कहां हैं या तुम बताना नहीं चाहती कि वे कहां हैं ?

देवी—मैं अपनी जिह्वा नोच डालना अधिक पसंद करूंगी, परंतु इसको अपने पति का पता बताने के लिये कभी प्रयुक्त न करूंगी। मेरा पूर्ण विश्वास है कि मेरा पति सर्वथा निर्दोष और निरपराध है। परंतु मैं जानती हूं कि उसे तुम्हारे सपुर्द करना एक निर्दोष भेड़ को निर्दय भेड़ियों का भोजन बनाना है। तुम इस निश्चय को त्याग दो ?

सिपाही—हम तुम्हें अपमानित करेंगे, हम तुम्हारी अप्रतिष्ठा करेंगे। किसी भी कठोरता से हमें संकोच नहीं। हम तुम्हारा घर गोलियों से उड़ा देंगे तुम्हें हमारा पता नहीं है ?

देवी—जाओ, जाओ। यह धमकियां किसी और को दो। मैं इन गीदड़ भभकियोंसे भयभीत होने वाली नहीं। मुझे तुम क्याअप-मानित करोगे ? जिसका धर्म स्थिर है यह कभी अप्रतिष्ठित नहीं हो सकते। गिरफ्तार करोगे। तंग और अंधेरी कोठरी में बंद करोगे। अजी महाशय अधिक से अधिक फांसी दे डालोगे। इनमें से कोई वस्तु भी मुझे डरा नहीं सकती। मेरे सामने उन देवियों के कार्य वर्त्तमान हैं जिन्हों ने अपनी जान के लिये अपने शरीर के टुकड़े २ करवा डाले। बह सब कुछ मेरी दृष्टि के सम्मुख है जो मेरी बहिनें अपने सतीत्वधर्म के लिये कर गुज़री हैं। फिर मुझे आप डराते क्या हैं ? घर गोलियों से उड़ा दोगे तो क्या होगा ? घर बार, धन दौलत सब धूल ही है, यदि तुम धूल में मिला दोगे तो क्या अनर्थ हो जायगा। बात तो तब है कि जो मेरी आत्मा को दबा सको। तुम मुझे तलवार से टुकड़े २ कर डालो या गोलियों से मेरा सारा शरीर छलनी कर डालो, मैं अपने धर्म को नहीं छोड़ूंगी। मैं कदापि यह पता न दूंगी कि मेरे पति महाराज कहां हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिपाही यह सुनकर आग बबूला हो गया। उन दिनों तो उनके मिज़ाज़ का पारा साधारण दर्जे से योंही चढ़ा रहता था। एक नन्हीं सी स्त्री ने जब यह हौसला दिखाया तो फिर क्या था क्रोध और अनर्थ की सीमा न रही। स्वाधीनता तो मिली हुई थी ही अब क्रोध का भूत भी सवार हो गया। तुरंत स्त्री जाति पर हाथ डाल दिया। उसको धरती पर दे पटका और संगीन उसके मुंह की ओर करके अत्यन्त कठोरता से चिल्ला कर कहा।

बताओ, अब भी बता दो कि हमारी असामी कहाँ है यदि तुम्हें अपने प्राणों की रक्षा की आवश्यकता है तो हठ छोड़ दो। बताओ कि तुम्हारा पति कहां है। तुम्हारे इस हठ का परिणाम अच्छा न होगा। मैं तुम्हें अब भी कहता हूँ कि भलाई बुराई में विवेक करो और हठ का त्याग करो।

इस प्रकार धरती पर पटके जाने के कारण से देवी को कमरे में सख्त चोट लगी। विवश हो आखों से आंसू निकल पड़े। आंचल से झट आंखों को पोंछ कर कर कहा—तुम लाख अपमानित करो, तुम करोड़ दुःख दो, धूल में मिला दो, तुम मेरी लाश को भी घसीट कर अपना दिल प्रसन्न करो, परंतु मैं किसी अवस्था में तुम्हें अपने पति का पता नहीं बता सकती ब्रिटिश गवर्नमेंट को अपने न्याय पर बहुत अभिमान है। अंग्रेज़ जाति स्त्रियों की मानप्रतिष्ठा करने में सुप्रसिद्ध है। परंतु मैंने देख लिया, कि पराजित और अधीन जाति की नारियों के साथ कैसा व्यवहार जारी रखा जाता है। मैं समझ गई कि हमारा कितना मान है। मुझे पता लग गया कि सरकारी न्याय क्या है। किन्तु हे सिपाही! याद रखना, यह जो सलूक आज तुमने मेरे साथ किया है इसका बदला तुम और तुम्हारे स्वामी शीघ्र पायेंगे। तुम यह न समझो कि मैं एक निर्बल, निःसहाय तथा अबल नारी हूँ। मैं इस समय भारत की सारी नारियों की प्रतिनिधि हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जो व्यवहार तुम मेरे साथ कर रहे हो, मेरे भाई इसका स्वाद तुम्हें चखायेंगे। मैं अपने भाइयों को कहूँगी कि जाओ अपनी पगड़ियों को कीचड़ में फेंक दो। जाओ इस सजधज को धूल के सुपुर्द करो और चूड़ियां पहन कर स्त्री बन जाओ। तुम इतराते फिरो और तुम्हारी बहनें अपमानित और लज्जित होती हों। याद करो, जब भरी सभा में द्रौपदी का मान दुर्योधन की आज्ञा से भङ्ग हुआ था। जब उसकी आज्ञा से द्रौपदी के सिर पर से कपड़ा खिसकाया गया था उसका क्या परिणाम हुआ था। अब जब स्त्रियों पर सरकार के कर्मचारी इस तरह हाथ साफ़ करने लगे हैं तो उसका क्या परिणाम होगा इसका अनुमान तुम स्वयं ही लगा सकते हो।

हे भगवन्! कहो कहां पर विराजमान हो। कहीं निकट हो तो देखो एक अबला की क्या हालत हो रही है। एक पर पुरुष ने उसे भूमि पर पटका है, और उसका अपमान कर रहा है। हे भगवन्, क्या तुम्हें दया नहीं आती? क्या तुम्हें क्रोध नहीं आता? तुम्हारा न्याय भी क्या अंग्रेज़ी सरकार के न्याय बदल गया है? धावो, धावो, मेरी लाज बचाओ, भागे चले आओ, शीघ्र आओ, जरा देर न लगाओ। देखो भगवन्! अब और परीक्षा न को। मेरी दुहाई है। संसार के लोगों के कान बंद हैं तुम्हीं सुनों, कब तक तुम हमारी दुखित दीन अवस्था से विमुख हो रहोगे? चरम सीमा हो चुकी।

यह कह ही रही थी कि मूर्च्छित हो गई। एक असहाय स्त्री के लिये यह दृश्य कितना रोमाञ्चकारी है यह कहने की आवश्यकता नहीं। एक कठोर शब्द भी जिसके कानों में कभी न सुना हो, एक पर पुरुष की इस प्रकार अनधिकार चर्चा से जो अपरिचित हो, यकायक ऐसा दृश्य देखना जिसको पड़े, यदि वह मूर्च्छित हो जावे तो उसमें आश्चर्य ही क्या है?

सिपाही को, जिसने उसकी कलाई पकड़ी थी, यह अवस्था देखकर जरा भी दया न आई। उसको धरती पर जोर से पटक दिया। उसका हाथ छोड़ दिया और घर की तलाश शुरू कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दी। यह सन्दूक तोड़, उस बक्स का ताला मरोड़, यह गिरा वह गिरा, तात्पर्य यह कि एक मुहूर्तमात्र में प्रलय का दृश्य बना दिया। भूतों की तरह सारा घर बार छान मारा, जो जो कुछ बरबाद हो सकता था उसे बरबाद किया।

सिपाही इस ढूंढ़ में व्यग्र थे कि घर के स्वामी को जो यह सुनने पर कि किसी पास के कूवे में कुछ लोग भूख से व्याकुल हैं उनके लिये खाना देने गया था यह पता लगा कि उसके घर के इर्द गिर्द पुलिस तथा फौज ने घेरा डाल दिया है। घर रवाना हुआ। मार्ग में कई लोगों ने समझाया कि अवसर है निकल जावो इन अत्याचारियों के चंगुल में न फसो। उन्हें मकान में ऊधम मचाने दो। तुम तुरन्त किसी ओर चले जाओ। किन्तु उस नरकेसरी ने यह कहा कि वाह, खूब सम्मति देते हो। कायर होकर मैदान से भाग निकलूं। धिक्कार है मेरी वीरता को जो इस प्रकार भीरुता का काम करूं। अपने ज्ञान के अनुसार मैंने कोई काम अपराध का नहीं किया है। किन्तु यदि मेरे निरापद कार्य भी सरकार की दृष्टि में खटकते हैं, तो चिन्ता नहीं। मैं स्वयं अपने आप को उनके अधीन किये देता हूँ। यह भी कोई बात है कि मैं वनों में भागा फिरूं। सर्वदा के लिये अपने माथे पर कलंक लगवा लूं। न महाशय, यह कभी नहीं हो सकता। इस जीवन की स्थिति भी क्या है। ऐसे हजार जीवन देश पर बलिदान करने की इच्छा है। भागता हुआ मकान पर पहुंचा। पुलिस वालों तथा फौज वालों ने उसे नहीं पहचाना और उसे उसके घर में जाने से रोका। परन्तु वह मकान पर पहुंच गया। जब वह ऊपर के कमरे में गया तो उसकी आंखों में खून उतर आया। उसकी धर्मपत्नी पृथ्वी पर बेहोश पड़ी है। कपड़े धूल से भरे हैं। हैं, यह क्या! मेरी स्त्री की यह दशा क्यों हुई? किसने की। समझा कि शायद डरकर ऐसी हो गई है। परन्तु जब उसे सब घटना का पता लगा तो उसका सारा खून

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उबल आया। यदि अपराध हुआ भी है तो मैंने किया है। स्त्री जाति पर तुम ने क्यों हाथ उठाया है। इस बेचारी का क्या अपराध है। बड़ा अनर्थ हुआ कि तुमने एक अबला पर यह अत्याचार किया है। यह कदापि उचित न था। यदि मैं इस बात की शपथ न ले चुका होता कि मैं अत्याचारी पर वार न करूंगा जो मैं सत्याग्रही न होता, तो एक मिनट में अपना बदला ले लेता। किन्तु क्या करूं अपनी प्रतिज्ञा से बद्ध हूं। अच्छा, भला हो उसका जिसने इस तरह मेरी धर्मपत्नी को दुख दिया है। दुनिया वालो, शिक्षा लो। यह दुनिया ही केवल नित्य रहने की जगह नहीं है। यह जीवन समाप्त करने के बाद किसी और शक्ति के सम्मुख अपने किये का उत्तर देना होगा। अत्याचार न करो, निर्बलों पर हाथ न उठाओ। इस क्षणिक जीवन के लिये इतना अन्धेर मचा रहे हो। ऐ पेट के लालच में फंसे लोगो! सोचो क्या कर रहे हो। सरकार के नौकर! तुमने अपनी नौकरी के लिये एक स्त्री पर हाथ उठाया है। जाओ हथियार निकाल कर फेंक दो। तुम ऐसे पवित्र व्रत को पालन करने के सर्वथा योग्य नहीं हो। तलवार और शस्त्रों से सज्जित हो तुमने एक निस्सहाय अबला पर वार किया है। वाह कितनी शूरवीरता है, कितनी निर्दयता है, कितना साहस है। जाओ मैं तुम्हें कुछ नहीं कहता। जो कहीं यह घटना मेरे सत्याग्रही बनने से पहिले होती तो चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाती, तुम्हें तो अवश्य तुम्हारे किये का फल चखा देता। परन्तु मैंने तुम्हें क्षमा किया। मेरी प्रार्थना याचना अब दुनियां की अदालत में नहीं। मेरी अनुनय विनय अब दुनियां के शासकों के आगे नहीं। बस उसी सर्वशक्तिमान के सम्मुख मेरी विनीत प्रार्थना है कि वह जिस तरह चाहे मेरे इस असाध्य व्रण के साथ व्यवहार करे।

नरकेसरी जब यह कह रहा था चेहरा उसका तमतमा रहा था। आंखें रक्त वर्ण थीं। सिपाही शस्त्रों सहित होते हुए भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कांप रहे थे। उस शेर की गरज के आगे किसी को दम मारने की सामर्थ्य नहीं। कांपते २ उसके हाथों पर हथकड़ी जकड़ दीं और उसे गिरफ्तार कर लिया। और गाड़ी में बैठाकर किले में ले गये। कितनी शान के साथ गिरफ्तारी की गई। उसका प्रमाण इस बात से मिलता था कि उसकी गाड़ी के आगे पीछे सहस्र गोरे सिपाहियों का पहरा और मैशीनगन साथ थी। यह शेर दिल ही दिल में हंसता था कि वाह यह सरकार भी खूब है, कितनी डरपोक है कि एक मुझ से तुच्छ आदमी को गिरफ्तार करने के लिये इतनी तय्यारियां करके आई है। मेरा तो यह धर्म है कि विघ्न बाधा कभी भी नहीं करना। जो भी दुःख सरकार की ओर से हो, उसे सुख समझना। सरकार यदि विष पिलाये तो उसे अमृत समझ कर पी जाना।

किले में एक कोठरी में बन्द कर दिया गया है। पास एक बाल्टी में आधे भुने शायद कच्चे ही चने पड़े हैं, और एक बाल्टी में पानी पड़ा है। पास ही टट्टी और पास ही पेशाबखाना है। दो दो को साथ २ लोहे की हथकड़ी लगी है। यदि लघुशंकार्थ एक को जाना हो तो दूसरे को साथ जाना पड़ता है, उसे उस दृश्य को अवश्य देखना पड़ता है। वाह क्या निराली शान है। कच्चे चने चबाओ और बाल्टी में से पानी पीओ। यह उपहार है उन लोगों के लिये जो कि देश के लिये प्राण न्योछावर करते हैं। पत्नी को घर बेहोश छोड़ा है। घर बार का सामान उजड़ गया है। और आप लेटे २ चने चबाकर भगवान् को धन्यवाद दे रहे हैं। हे भगवन्, धन्य तेरी महिमा है!

This is wonderful

With love for my beloved

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"अन्धा भिखारी"

खुदाबक्स एक अन्धा भिक्षुक है। समय के थपेड़ों ने उसे इतना असमर्थ बना दिया है कि उदर पालन के लिये भिक्षावृत्ति के अतिरिक्त और कोई साधन इसके पास नहीं है। प्रातः सायं भटक भटक कर अनुनय विनय के बाद कहीं दो चार पैसे या दो एक रूखी सूखी रोटियां उपलब्ध होती हैं जिन्हें अपने दो भोले बच्चों को खिलाता है और जो कुछ उनसे बच जाये उसे खाकर अपना जीवन बिताता है। सच है काल के चक्र ने बड़ों बड़ों को पीसकर धूल कर डाला। वही सिर जो कभी अभिमान से झुकते न थे, आज प्रत्येक के सामने झुक रहे हैं। मखमली बिस्तरों पर विश्राम करने वाले आज खाली धरती तक को तरस रहे हैं। वही लोग जिनके यहां से दर्जनों को उत्तम भोजन मिला करता था आज कुछ टुकड़ों के लिये मारे मारे फिर रहे हैं। जिनकी अलमारियां तरह तरह के वस्त्रों से भरी रहती थीं, आज गन्दे सड़े चीथड़ों की प्रतीक्षा में आंखें लगाये बैठे हैं भाग्य देवी भी विचित्र आचरण करती है। आप ही एकको बड़ा बनाकर फिर आप ही शायद ईर्ष्यालु हो जाती है। आप ही एक अन्धे को शिखर पर चढ़ा देना और फिर आप ही उसे भूमि पर गिरा देना, आप ही एक के सिर को राज्य मुकुट से सुभूषित करना और आप ही उसे मुट्ठी भर चनों तक के लिये तरसाना। यह सब इसी भाग्य के चमत्कार हैं। खुदाबक्स बेचारा भी इस भाग्य की एक भस्म है। इसी काल चक्र के मारे खुदाबक्स की यह अकथनीय दशा, यह दारिद्रय, यह कृपणता, यह हृदय विदारकता, यह विपत्ति, यह विनाश, यह संहार, सब भाग्य की ही कृपा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२

खुदाबक्स अभी कुछ ही साल हुए, एक बड़ा भारी सौदागर था। कार्यधन्धा खूब जोर से चलता था। खूब चहल पहल थी रुपये की झनकार से दुकान और मकान गूंजते रहते थे। भोग विलास, सुखसामग्री, आमोद प्रमोद के सब सामान उपस्थित थे। गाड़ी घोड़े, मोटर, महल सब वस्तुएं प्राप्त थी। धन में लोटता था। जी भरकर मौज का सामान विद्यमान था। सुख चैन के सूरज को जो खूब चमकता था, दुर्भाग्य के घने बादलों ने ढांप लिया भाग्य का पासा उलटा पड़ गया। व्यापार में हानि होनी आरम्भ हो गई। कर्मचारियों ने रुपयों के लिये अपना धर्म बेच दिया। स्थान २ में मूलधन उड़ना शुरू हो गया। सर्वनाश के चिह्न प्रगट हुए। खुदाबक्स बहुत घबड़ा गया। सारा खेल बिगड़ गया। अधोगति जब आरम्भ होती है तो एक बार ही खाई में गिरा देती है। उच्च चोटी पर पहुंचना अत्यन्त कठिन है किन्तु गिर कर गिरते २ संभलना तो यह एक असम्भव बात है। जो भी कोई अधःपतन के रास्ते पर एक बार चल निकला, फिर यह कहना कठिन है कि उसके विनाश का चक्र कहां जाकर समाप्त होगा। खुदाबक्स बेचारे ने अपनी हानि पूरी करने के लिये दूर देश से बहुत बढ़िया माल मंगाया। भूमि, मकान, कोठियां गिरवी रख दी। सोचा कि यह अन्तिम दाव शायद सारी बिगड़ी बना दे। परन्तु युधिष्ठिर के अन्तिम दाव की तरह खुदाबक्स को भी यह दाव बहुत मंहगा पड़ा। जो कुछ पास था, वह कुछ हाथ से निकल गया। राजा से रंक हो गया, अमीर से भिखारी बन गया। ऋणदाताओं ने आकर सब पदार्थों पर अधिकार कर लिया। जो कल इस सारे कारखाने का मालिक था आज शोक भरी दृष्टि से उसको देख रहा है शरीर पर कपड़े ही केवल अपनी सम्पत्ति रह गई। दो निर्दोष बच्चे भी बल से घर के बाहर निकाल दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३

खुदाबक्स आज कंगाल हो गया । असहाय हो गया । लाखों वाला आज एक पाई के लिये पराश्रित हो गया । खुदाबक्स ने सोचा कि कुछ चिंता नहीं । अपने मित्रों से इस समय सहायता लेकर कम से कम जीविका साधन निकाल लूंगा । आह ! इस युग में मित्र कहां ! मित्रता धनसम्पत्ति के साथ है मूल्य ऐश्वर्य के साथ है प्रेम तो सुख और आराम के साथ है । जिस मित्र के पास खुदाबक्स गया, उसी से रूखा उत्तर मिला । उनके वार्तालाप के ढङ्ग से यह पता लगता था कि मानों कभी की जान पहचान ही नहीं । वही लोग जो चापलूसी में निमग्न रहते थे आज सलाम तक तो पूछते नहीं । खुदाबक्स ने अनुनय विनय की । गिड़गिड़ा कर प्रार्थनाएं कीं, परन्तु सब व्यर्थ । मित्र हैं कि कानों में रूई डाले बैठे हैं । कई लोग इतने कृपालु सिद्ध हुए कि उन्हों ने नौकर से भी कहलवाया कि मालिक घर में नहीं हैं । खुदाबक्स एक २ मित्र के द्वार पर गया, एक २ से प्रश्न किया, एक एक की खुशामद की, एक एक को खुशी का समय याद दिलाया, अपनी दुःखित अवस्था की ओर ध्यान खींचा किन्तु उन पाषाण हृदयों में से कोई भी मोम न हुआ । सच है, धन के लोभियों के दिल में दया कहाँ ? आडम्बर वालों के अन्तःकरण में सच्चा प्रेम कहाँ ? जब तक लाभ की आशा थी मित्र यारों का समुदाय जमा रहता था । जब कि खुदाबक्स दरिद्रता के प्रबल पंजे में जकड़ा हुआ है यही लोग आँख तक मिलाने से घबड़ाते हैं । दुनिया का यही ढंग है । विपत्ति के समय कौन किस का साथ देता है ? यहां तो बस यह धर्म है कि जहां तक बन पड़े दूसरे को ग्रास बना लें । अस्तु खुदाबक्स ने द्वार २ फेरी लगाई सब व्यर्थ, सब निरर्थक । किसी ने एक टूटी कौड़ी का सलूक नहीं किया । अन्त में इष्ट मित्र, बन्धुबान्धव आदि सब से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हताश हो कर, खिन्न, दुःखी, निस्तेज, निराश्रय और उदासीन हुआ ईश्वर के भरोसे सड़क के किनारे आकर बैठ गया। जिह्वा शुष्क, मुंह में प्रातःकाल से लेकर सायं काल पर्यन्त एक दाना तक नहीं गया। बच्चे पास बैठे बिलख रहे हैं।

हे संसार की सम्पत्ति पर फूलने वालो! सांसारिक ऐश्वर्य पर अकड़ने वालो! सांसारिक भोग विलास पर न्यौछावर होने वालो! ज़रा अन्दर की आँख खोलो। खुदाबक्स की करुणा-जनक दशा से शिक्षा प्राप्त करो। जिन लोगों का यह विचार है कि बस यह संसार ही सब कुछ है उन्हें इस घटना से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

४

खुदाबक्स अपने दीन दोनों सरल बच्चों समेत सड़क के किनारे पड़ा है। आते जाते लोग उसे देख रहे हैं, परन्तु इतनी सहानुभूति किसीके हृदय में नहीं कि उनसे दो शब्द भी सहानुभूति के लिये कहे। सब अपने २ हाल में मस्त उसके पास से हो कर निकल जाते हैं किसी को ध्यान तक नहीं कि तीन जीवात्मायें मनुष्य शरीर में बिना अन्न पानी तड़प रही हैं। कई तो ऐसे पाषाण हृदय हैं कि पास से गुज़रते हुए दो चार गालियों की वर्षा कर जाते हैं। अभिप्राय यह है कि किसी ने उसकी दशा पर दया न की। किसी को उनकी अवस्था पर करुणा न उपजी। अन्धकार हो गया, दीपक जल चुके हैं, लोग अपना अपना काम समाप्त करके घरों को जा रहे हैं। कोई अपने बच्चों के लिये मिठाई, कोई और कुछ खाने के लिये, किसी के हाथ में फल फूल हैं। अर्थात् प्रत्येक के अन्तःकरण में उमंग है कि सारे दिन के वियोग के बाद वह अपने बच्चों को प्यार करेगा और उन की भोली भाली बातों से चित्त प्रसन्न करेगा। बेचारे खुदाबक्स यह सब कुछ देख रहा है और अन्दर ही अन्दर घुला जा रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। अभी कल की बात है कि वह इस समय अपने मित्रों के साथ लेकर बागों में सैर करता था। ठीक यही समय था कि जब वह अपने मित्रों की मनोरञ्जक बातों से प्रसन्न हुआ करता था। भगवान की माया है कि वही खुदाबक्स आज इतना तुच्छ हो गया है कि लोग उसे पाँव तक से छूना भी गवारा नहीं करते। जिस की प्रत्येक चेष्टा पर पहले साधुवाद होता था और बात बातपर आनन्द के शब्द हुआ करते थे आज उसकी चीखपुकार भी कोई नहीं सुनता। यह अपनी इस धुन में मस्त था, अपनी अवस्थापर चकित था कि यकायक एक सीधे सादे आदमीने उसको कन्धे पर से पकड़ कर हिलाया। यह चौंक पड़ा। कुशल मङ्गल के बाद उस पुरुषने कहा कि खुदाबक्स, यह क्या ! तुम यहां कहां ? यह क्या मामला है ? यह मैं क्या देख रहा हूँ ! महलों के मालिक आज तुम यहां धरती पर लोट रहे हो ? यह आखिरकार बात क्या है ? एक सहायक को देखकर खुदाबक्स का दिल भर आया। आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। अत्यन्त दुःखित स्वर में उसने सारी रामकहानी सुनाई। संसार सज्जन पुरुषों से खाली नहीं है। संसार में अभी सज्जनता की इति-श्री नहीं हुई है। संसार में धर्म, सदाचार, सत्यता का सर्वथा अवसान नहीं हो गया। यह दुःखकथा सुनकर उस पुरुष के दिल में चोट लगी। वह अवाक् रह गया। उसका चित्त उदास हो गया। भगवान की लीला देखकर चकित हो गया। उसके दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि उसे अपने घर भेजना चाहिये और इस विपत्ति और दरिद्र अवस्था में इसकी सहायता करनी चाहिये।

५

रामचन्द्र क्योंकि यही नाम इस पुरुष का है जो खुदाबक्स की सहायता के लिये उद्यत हुआ है, एक तेजाब के कारखाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में नौकर है वेतन बहुत थोड़ा है, कठिनता से निर्वाह चलता है, अत्यन्त सत्यपरायण है। दरिद्रता के होते हुए भी चित्त में इतनी उदारता है कि जहां कहीं और जब कभी भी किसी को सामान्य विपत्ति में फंसा सा पाता है तुरन्त उसकी सहायता को जा पहुंचता है। कई बार ऐसा हुआ है कि आप उपवास करके कितने दरिद्रों को मुफ्त भोजन पहुंचाया है। आप तंग रह कर दूसरों को प्रसन्न करने का यत्न किया है। खुदाबक्स को देखकर उसके दिलमें यह विचार पैदा तो अवश्य हुआ कि वह किस तरह इन तीनों का भार सम्हाल सकेगा परन्तु उनके सद्गुणों और उदार भावोंने तुरन्त उसे साहस दिया कि भगवान आप ही सब प्रबन्ध कर देगा। वह उन्हें घर में ले गया। अत्यन्त शिष्टाचार और आदर सत्कार से स्वागत किया और अपने कपड़े उनके सुपुर्द किये। अपना बिस्तरा उनके हवाले किया। अर्थात सब प्रकार से उन्हें आराम पहुंचाने की यथाशक्ति कोशिश की। खुदाबक्स अत्यन्त कृतज्ञ हुआ। उसे अपने मित्रों के व्यवहार से यह निश्चय हो चुका था कि उसकी सहायता अब कोई न करेगा। परन्तु जब उसे एक ऐसा मित्र मिल गया कि जिसे न वैयक्तिक अभिलाषा थी न अपना स्वार्थ, तो सिर झुकाकर परमात्मा का धन्यवाद किया। खा पीकर सब सो रहे।

६

प्रातःकाल जब आवश्यक कर्त्तव्यों से निवृत हुए तो लाला रामचन्द्रने खुदाबक्स से कहा कि बेकार बैठे रहने से कुछ न बनेगा। गये धन का विचार छोड़ दो। बीते हुए युग की याद से अपने को न तड़पाओ। अब जो सिरपर बनी है उसे धैर्य्य और साहस से सहन करो। मैं तो तुम्हारे व्यय को सहन करने का सामर्थ्य नहीं रखता। मुझे तो बस इतना वेतन मिलता है कि जिसमें कठिनता से गुजर हो। परन्तु मैंने एक उपाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सोचा है कि तुम मेरे साथ चलो और मैं कारखाने के मालिक को तुम्हारी ओर से अनुनय विनय करके तुम्हें नौकर करा दूंगा। कुछ रुपये जो तुम्हें मिल जायंगे उनसे तुम दिन गुजारना। खुदाबक्स ने उसे पर्याप्त जाना और इस काम के लिये तुरन्त उद्यत हो गया। लाला रामचन्द्रने अपने मालिक को कह सुन कर खुदाबक्स को नौकर करा ही दिया। कारखाने के मालिक ने पहिले तो निषेध किया, परन्तु लाला रामचन्द्र का इतना पक्ष मालिक को मानना ही पड़ा। खुदाबक्स अब जो दस बीस रुपये कमाता है उससे अपना पेट भर लेता है। कभी कभी उसका दिल पुरानी बातों की याद से घबड़ा उठता है। कभी २ गत घटनाओं की याद उसके दिलमें शोक उत्पन्न कर देती है। परन्तु अब वह दुःख सहन करने लग गया है। उसकी छाती चोटें सह सहकर ढाल बन गयी है। अब वह दुःख सहने का अभ्यासी हो गया है और अपने नये जीवन से आनन्द अनुभव करने लग गया है। उसका दिल अपने काम में लग सा गया है। अब रूखी सूखी खाकर वह गुजर कर रहा है।

७

यह सच है विपत्ति कभी अकेली नहीं आती। जब उसका पहाड़ टूटता है तो बस एक दमही आ पड़ता है, और क्षणमात्र में पीसकर खाक कर देता है। खुदाबक्स की धन सम्पत्ति छूटी, माल गया, अधिकार नष्ट हुआ, परन्तु फिर भी बेचारा अपना गुजारा कर रहा था कि एक दिन काम करते करते तेजाब के छींटे उसकी दोनों आंखोंपर आ पड़े। तुरन्त अन्धा हो गया। बहुत तड़पा, बहुत हाथ पांव मारे, बहुत रोया, बहुत चीखा, परन्तु सब व्यर्थ। कोई उपाय ठीक न बैठा। कोई डाक्टर उसे अच्छा न कर सका। वह अभी भला चंगा आंखों का मालिक अभी यह पुकारने लगा, "लाला, आंखें बड़ी नियामत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं " बिना आंखों के जीने से मृत्यु कई गुना अच्छी है। परन्तु समय से पहले कहां ? जो दुःख विधाताने लिख दिया है उनके सहे बिना मृत्यु कहां ? मरने पर तो कई तुले बैठे हैं। लाखों दिलों में प्रत्येक मिनट यह अभिलाषा होती है कि मौत आये, पर मौत नहीं आती। बन्धुबांधव, इष्ट मित्र अपने आंखों के सामने दम तोड़ते हैं, विविध प्रकार के दुःख भी आते हैं, परन्तु यह अभिलाषा पूरी होने में नहीं आती कि मनुष्य इस संसार से गुजर जाये। खुदाबक्स के लिये विपत्ति के बदले यदि भगवान मृत्यु भेज देता, तो खुदाबक्स किसी कदर खुशी से उसे स्वीकार कर लेता। परन्तु भगवान किसी के कहने के अनुसार काम नहीं करता।

खुदाबक्स अन्धा हो गया, सारा संसार उसके लिये शून्य हो गया और वह सारे संसार के लिए शून्य हो गया। सारा ससार उसकी आंखों में नष्ट हो गया। अब क्या करे ? आंखों जैसी अमूल्य वस्तु से भी वियुक्त हुआ। कारखाने के मालिकने नौकरी से जवाब दे दिया। रामचन्द्र के पास रुपया नहीं कि वह इसके सारे खर्च का बोझ सँभाल सके। खुदाबक्स के पास अब कोई और निर्वाह करने का उपाय नहीं है सिवाय इसके कि वह भिक्षावृत्ति करे, झोली लेकर भीख मांगे और अपना निर्वाह करे। प्रातःसे शामतक मारा मारा फिरता है तब कहीं २४ ग्रास प्राप्त करता है।

८

अमृतसर में मार्शलला का ज़ोर है या यों कहिए कि अमृतसर में क़ानून आदि सब तोड़ दिए गए हैं और न्याय के नियमों को देश निकाला दे दिया गया है। अमृतसर अब अंधेर नगरी बना हुआ है। जो भी कानून अब प्रचलित किया गया है वह सभ्यता के नियमों के विपरीत है। रात को बाहर न निकलो, हरएक अंग्रेज़ को सलाम करो, छाता मत लगाओ, गाड़ी सरकार के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हवाले कर दो, लाठी अपने पास न रखो। अभिप्राय यह कि खूब बलात्कार और अत्याचार हो रहा है। खुदाबक्स बहुत विवश हो गया है। भीख कहां से मांगे ? दुकानों पर काम ही नहीं। लोग तो मारे डर के घरों से बाहर नहीं निकलते। गलियों और कूचों में शून्यताका राज्य है। शून्यताका दृश्य यदि देखना हो तो बस इन दिनों की अमृतसर की अवस्था का फ़ोटो देख लो। लाख पुकारो, लाख यत्न करो वहां कोई पेश ही नहीं चलती। आज्ञा चाहे कितना ही अत्याचार युक्त हो, कितना ही न्याय से विरुद्ध क्यों न हो, मानो या जेल की हवा खाओ, या बेत से पीटे जाओ। विचित्र अवस्था थी। खुदाबक्स दिल ही दिल में कुढ़ता था कि हे ईश्वर ! क्या किया जाय ? भगवान सबका भरण पोषण करते हैं। अन्त में बहुत दौड़ धूप के पीछे कुछ न कुछ टुकड़े इसको मिल ही जाते थे।

एक दिन प्रातःकाल खुदाबक्स प्रतिदिन के नियमानुसार लाठीको टेकता हुआ भीख मांगने के लिए निकला। अभी दो चार ही कदम घर से चला था कि यकायक उसको गोरे सिपहियों ने पकड़ लिया। हैं ! यह क्या मामला है ? खुदाबक्स चकितसा रह गया। मेरा क्या अपराध है ? गोरों ने तत्काल गोलियों की बौछार शुरू कर दी और कहा—"वेल ! देखो ! तुम इस जगह से पेट के बल चलो।"

खुदाबक्स—पेट के बल चलूं ? क्या मैं कोई कीड़ा मकोड़ा हूं ? मैं भिखारी ही सही किन्तु हूं तो आदमी, और एक सज्जन आदमी। मैं भला पेट के बल क्यों चलूं ? मुझे छोड़ो, मेरे साथ मज़ाक न करो। मैं एक दुखिया अंधा भिखारी हूं। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो, वृथा छेड़छाड़ न करो।

गोरा सिपाही—बकबक मत करो। हम नहीं जानता कि तुम क्या बक रहा है ? तुमको अगर इस रास्तेपर चलना है तो पेटके बल चलो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खुदाबक्स—मैं अन्धा भिखारी भला पेटके बल किस प्रकार चल सकता हूं। पेटके बल चलना तो मेरे लिए असम्भव है। कहीं चोट लग जायगी तो चलने फिरने से भी रह जाऊंगा छोड़ो, तंग न करो कुछ खुदा का भय भी करो। यदि शक्ति मिली है तो उसका उचित उपयोग करो। साधारण ग़रीबों को न सताओ।

गोरा—हम तुम्हारो बक़वाद नहीं सुनना चाहता। हम किसी से नहीं डरता। हम खुदाकी परवाह क्यों करें ? हम खुद खुदा हैं।

इतने में एक स्त्री आई जिसे उस रास्ते से जाना था। गोरे ने उसको भी रोका और कहा कि पेट के बल चलो। मगर वह स्त्री कुछ ऐसी घबराई कि धड़ाम से गिर पड़ी।

खुदाबक्स ने जब उसकी चीख सुनी और उसके गिरने की आवाज़ उसके कानों तक पहुंची तो वह बहुत घबड़ाया। उसने गोरे सिपाही से कहा कि क्या यही न्याय है कि औरतों और अपाहिजों को इस तरह दिक़ किया जाय, उनको इस तरह हैरान किया जाय ?

गोरे सिपाही ने यह सुनते ही खुदाबक्स को ठोकर लगाई जिसके कारण से अन्धा पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसकी लाठी उसके हाथ से छूट गई सब गोरे सिपाहियों ने इसके चारों ओर घेरा डाल दिया और अपनी भाषा में उसे गालियां देनी शुरू कर दीं। अश्लील उपहास और छिछोरी बातों से उसकी ख़ूब सेवा की। अन्धा पेट के बल चलने में विवश था, उसे ठोकरों से चलाया गया। सारे रास्ते उसे बूटकी ठोकरें मारते रहे। वह रोता रहा, चीखता रहा, पुकारता रहा उसने हाथ जोड़े, उसने अनुनय विनय की लेकिन भला कौन सुनता है ? उसके शरीर में से से इन ठोकरों के कारण ख़ून चलने लगा। वह लगभग अधमुआ हो गया तो उन गोरों ने उसे छोड़ा।

कुछ करुणहृदय आदमी उसे दूसरे मार्ग से उसके घर छोड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आए। अब खुदाबक्स चारपाई पर पड़ा है ज़ख्मों के कारण बड़े कष्ट में है। शरीर का एक एक अंग निर्बल हो गया है। दिन रात रोना और शोक करना अब उसके भाग्यों में है। आसपास के पड़ोसी यदि कभी कुछ दे जाते हैं तो खा लेता है अन्यथा घण्टों उपवास से ही चित्त बहला लेता है।

दिलही दिल में यह ज़रूर कहता है कि "देख ली सभ्यता इन अंग्रेज़ शासकों की! देख ली इनकी दयालुता! देख लिया इनका न्याय! देख लिया इनका हिन्दुस्तानियों के साथ व्यवहार! वाहरे दैव! तूने क्या क्या नहीं दिखाया! जिसकी कभी आशा न थी वह भी तेरी कृपा से देख लिया। अब तो निश्चय हो गया है कि पराये कभी अपने नहीं हो सकते। मैं जब समृद्ध था तो कितना रुपया इन अंग्रेज़ों के लिए व्यय किया करता था! कितने त्याग मैंने इनके लिये किए हैं! कितने दुःख इनके कारण अपने भाइयों को पहुंचाये हैं! दिन रात इन्हीं के गीत गाता रहता था। दिन रात इन्हीं की प्रसन्नता में निमग्न रहता था। मैं इन्हें 'मित्र' समझा करता था। मैं कितनी भूल में था! कितना मूर्ख था! कितने उलटे रास्ते पर था! मैंने यद्यपि सब कुछ गँवा दिया परन्तु मैं प्रसन्न हूं कि मैंने इस सचाई को अपने निजी अनुभव से प्राप्त किया है कि अंग्रेज़ हिन्दुस्तानी के साथ समानता का व्यवहार कदापि नहीं कर सकते।

इनका हम को पेट के बल चलाना इस बात का प्रमाण है कि हम इनकी दृष्टि में मनुष्य नहीं हैं। अच्छा! इसका परिणाम निश्चय ही हिन्दुस्तानियों के पक्ष में अच्छा होगा। यह अपमान, यह हृदय विदारक व्यवहार भारत वासियों को होश में लाने के लिए उपयोगी साधन सिद्ध होंगे। यह सब कुछ देखकर अब यह असम्भव है कि भारतवासी अपनी दशा को उत्तम बनाने का प्रयत्न न करें। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मैं तो क्या हर एक सच्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भारतवासी इस अपमान से अपने भविष्य को उत्तम बनाने का पूरा प्रयत्न करेगा। ऐ मेरे पवित्र खुदा! सहायता कर और भारतवासियों की कठिनता दूर कर। अब इससे अधिक और क्या दुर्गति हो सकती है कि हम भारतवासियों को पेट के बल चलने की आज्ञा दी जाती है और हमको ठोकरें मार मारकर पेट के बल चलाया जाता है।

यदि हम भारतवासियों को इन ठोकरों के बाद भी होश न आया तो बस! भारतीयों के भाग्य का फ़ैसला प्रत्यक्ष ही है।

खुदाबक्स की इस प्रकार के विचारों में ज़रा आंख लग गई। क्या देखता है कि एक पवित्र तेजस्वी चेहरा उसके सामने प्रगट है। उसने खुदाबक्स से कहा कि घबड़ाओ नहीं, भारतवासियों के स्वतन्त्र होने के दिन आ गये हैं। अब भारतवर्ष अधिक समय तक दास न रह सकेगा। मार्शलला के दिनों के अत्याचारों ने भारत-वासियों को सावधान कर दिया है और यह जागृति अब अनिवार्य रूप में दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करेगी और भारत अब स्वतन्त्र होगा।

खुदाबक्स के सारे कष्ट इस स्वप्न से दूर हो गये हैं और यद्यपि खुदाबक्स दरिद्र और निस्सहाय है और कठिनता में फंसा हुआ है परन्तु उसके हृदय में यह आशा कि 'भारत अब शीघ्र स्वतन्त्र होगा' एक पवित्र प्रकाशस्तम्भ है जिसके कारण से उसके दुःखों में बहुत कमी हो गई। सच है, दुनियां में कोई विपत्ति भी अच्छे परिणामों के बिना नहीं हैं। गहरे से गहरे बादलों में भी प्रकाश होता है और कोयले की खान में से ही हीरे निकला करते हैं।

A wonderful book

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

A wonderful book belongs to
Kanya Lal Kabu
1st year class
S.P. College Srinagar

"वीर आत्मत्यागी"

रौलेट एक्ट क्या पास हुआ, भारतवर्ष भर में हलचल मच गयी। राजनीति से पृथक् रहनेवाले भी दीर्घनिद्रा से जाग उठे। लोग सोचने लग गये कि राजभक्ति का खूब बदला मिला है। अपने बन्धुबान्धवों के बहुमूल्य खून की खूब प्रतिष्ठा हुई। भारतवासियोंने तो न माल प्यारा जाना, न जीवन की रक्षा की, जो कुछ पास था सब अर्पण कर दिया। बहादुर नवयुवक सम्राट् की शान को स्थिर रखने के लिये कटवा दिये। पानी की तरह उनका खून बहा दिया। किन्तु वाहरी कृतज्ञ सरकार! खूब उपहार दिया, मालामाल कर दिया, जी खुश कर दिया। सब से पहला फल जो श्रीमती सरकार की ओर से वेचारे भारतवासियों को उनके आत्मत्याग और प्राणविसर्जन के बदले में प्राप्त हुआ वह रौलेट ऐक्ट था। लोग भयभीत से हो गये। ऐं, यह क्या? जिस किसी को भी देखो बस इसी ऐक्ट की चर्चा कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति शोकमग्न और दुःखित दिखाई देता है। पञ्जाब राजनैतिक दृष्टि से सर्वथा बेसुध था परन्तु इस भूचालने पञ्जाब को भी चैतन्य कर दिया। पंजाबने भी ज़रा करवट बदली। यहां भी ज़रा जागृति और जीवन के चिह्न दिखाई देने लगे। ओडायर के शासन से तंग तो थे ही उसपर यह एक और प्रबल दण्ड मिला। स्थान स्थानपर विरोध में सभायें की गईं। शोक और अप्रसन्नता प्रगट की गई। लाहौर में इन दिनों विचित्र दशा है। लाहौर जो पोलिटिकल हलचल से बहुत सीमातक किनारा कर चुका था, एक बार फिर जोश दिखाने लगा। एक नन्ही सी चिनगारी जो राख के ढेर में रह गई थी फिर नये सिरे से चमकने लगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और इसने अपनी उष्णता का प्रमाण दिया। मुर्दे हड्डियों में नये सिरे से प्राणसंचारित होने के चिह्न दिखाई पड़ने लगे। शहर निवासियोंने इस हलचल में पर्याप्त भाग लिया। हड़तालें हुईं, जुलूस निकाले गये, जलसे किये गये। तात्पर्य यह कि भारतवर्ष के अन्य शहरों के समान यहां भी मानसिक दुःख के प्रकाश करने में कोई बात उठा न रखी गई। ओडायर साहब के क्रोध की आग भड़क उठी। जिह्वापर ताला लगाकर लोगों को मौन रखने के अभ्यासी, लोहे के पंजे से निर्दोष पंजाबियों के कोमल दिलों को कुचल डालने में प्रवीण, बलात्कार, अत्याचार, हठ, दुराग्रह और निष्करुणा के महागुरु श्रीमान ओडायर साहब तो जीवन के यह चिह्न देखकर आपे से बाहर हो गये। भठियारिनों की तरह कोसना शुरू कर दिया। शिक्षित समाज के शत्रु तो ये आरम्भ से थे ही, अब उन्हें अपना क्रोध निकालने का और अवसर मिल गया। शासक और शासित का भी कभी न्याय संभव है? हमारी इच्छा क़ानून है, हमारी आज्ञा सर्वोपरि है। किस का सामर्थ्य है जो हमारी इच्छा के विरुद्ध कर सके या कह सके या सोच भी सके।

२

महात्मा गांधी को पता लगा कि पञ्जाब में सत्याग्रह का आन्दोलन शुरू हो तो गया है परन्तु ओडायर को यह हलचल एक आंख नहीं भाती और वह इस शांतिमय आन्दोलन को विधिपूर्वक कुचलनेपर उद्यत है। उसने अत्याचार और बलात्कार का दौरदौरा अत्यन्त प्रबलता से शुरू कर दिया है। और यह भी डर है कि पञ्जाबी जो आगे ही दुःखित बैठे हैं शायद इस अत्याचार को सहन न कर सकें और इतनी कठोरता न सह सकें और कहीं लट्ठबाज़ी शुरू न हो जाये। महात्मा गांधी इस बात से अपरिचित न थे कि पञ्जाबी रणक्षेत्र में सब से अधिक काम में आये हैं और पञ्जाबी माताओं ने अपने लाल बलिदान कर दिये हैं पञ्जाबियों पर अधिक कठोरताका निश्चित परिणाम अशान्ति होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महात्मा जी सर्वसाधारण को ठीक मार्ग पर रखने के लिये और उनके क्रोध को अपने अधिकार से बाहर निकल जाने से रोकने के लिये स्वयं चलकर पंजाब पधार रहे थे। महात्मा जी का विचार था कि अपनी पवित्र जिह्वा से कर्मवीर पंजाबियों को सत्याग्रह का उपदेश करें जिस से ऐसा न हो कि कहीं बना बनाया खेल बिगड़ जाय और कहीं ऐसी दशा न पैदा हो जाय कि जिस से चलती गाड़ी की राह में रोड़ा अटक जावे। ऐसे उत्तम उद्देश्य और ऐसे सच्चे भावों से आने वाले महात्मा जी को सरकार के हुक्म से "कोसी" के स्टेशन पर पकड़ लिया गया और उन्हें देहली या पंजाब में प्रवेश करने से मना कर दिया गया। ओडायर साहब की कठोरताओं और बलात्कारों की लंबी ज़ंजीर में यह एक और कड़ी थी। ओडायर साहब के कठोर व्यवहार में यह एक और वृद्धि थी। इस ने घावों को और हरा कर दिया, ज़ख्मों को ज़ख्म गहरा लगा।

३

क्षणमात्र में लाहौर में विचित्र खबर फैल गई। आग की ज्वाला के समान जिधर गई भारतवासियों के कलेजों को जलाती हुई चली गई। लोगों ने सोचा एक तो रौलेट एक्ट के दासता का बन्धन हमारे गले में बलात् डाला जाता है इस पर तुर्रा यह है कि हमारे नेताओं और पथदर्शकों को इस प्रकार अपमानित और लज्जित किया जाता है। सर्वसाधारण के हृदयों में चोट लगी। उन के चित्त उदास हो गये। सारे शहर में हड़ताल हो गई। वाह कैसी पूर्ण हड़ताल है! क्या मजाल है कि कोई हिन्दू मुसलिम या सिख किसी भी सम्प्रदाय का भारतवासी इस शोक में सम्मिलित न हुआ हो। जहां देखो यही चर्चा है कि सरकार ने बहुत बुरा किया कि हमारे नेता को हमारे शहर में आने से रोक दिया। यह पूरी हड़ताल देखकर ओडायर और उनके साथियों के होश उड़े। हम चाहते क्या थे और हो क्या गया। हम तो यही सोचते थे कि लोग इस प्रकार कठोरता से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डर कर मौन हो जायेंगे। अपने जीहुजूरियों को तुरंत स्मरण किया गया। जाओ किसी तरह हड़ताल खुलवाओ। किसी तरह लोगों को समझा दो, उन को तय्यार करो कि दुकानें खोलें। सरकार का प्रभाव इसी बात में है कि हड़ताल तुरन्त समाप्त हो। क्या करें, बेचारे विपदा के मारे रवाना हो गये कि भाग्य लड़ा देखें। इन्हें इस वात का पूर्ण विश्वास था कि वे दिन गये जब लोग उन की प्रतिष्ठा किया करते थे। अब समय ही बदल गया है, तो भी यदि और कुछ नहीं तो वर्त्तमान शासकों को प्रसन्न करने के लिये आप बाज़ार में निकल पड़े। एक दुकान पर पहुंचे, वह ताला लगाकर दुकान के बाहर बैठा हुआ था। आपने उससे कहा कि भाई क्यों अपनी हानि करते हो ? दुकान खोलकर कारोबार क्यों नहीं करते ? था वह ग़रीब और असहाय परन्तु हृदयमें देशके लिये प्यारका भाव रखता था। गांधीका भक्त था। शासकों के अत्याचारों से तंग था। उसने कहा—जाओ अपना काम करो। तुम लोगोंने तो अपने वैयक्तिक स्वार्थ के लिये अपना धर्म वेंच दिया है। चप्पा भर धरती के लिये या बालिश्त भर उपाधिके लिये तुमने तो मातृभूमि की सेवासे मुंह मोड़ लिया है। तुम मां के न हुए तो किसके होगे ? जाओ जाओ, मेरे सामने से चले जाओ मेरा धर्म ख़राब न करो। मैंने तो फ़ैसला किया है कि मैं देशका साथ दूंगा। उपवास व्रत करना पड़े, गोलियों का शिकार होना पड़े, जो कुछ मेरा है वह सब विनष्ट ही क्यों न हो जाये, मैं जीऊंगा तो देशके लिये और मरूंगा तो देशके लिये। सरकार इतना अत्याचार करे और हम शोक प्रकाश भी न करें। जाइये यहां से पधारने की कृपा कीजिये। स्पष्ट कह दो कि साहब, ये लोग अब इन बातोंसे वशमें नहीं आते, न धमकियां डरा सकती हैं, न लालच हमें फिसला सकता है। राय बहादुरों का रंग उड़ गया। सबने सलाह की कि इस कामको छोड़ देना चाहिये। लोग हमारे कहने से तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हड़ताल बन्द करेंगे नहीं, इसलिये हमें क्या लाभ है कि हम अपना अपमान करायें।

४

आज लाहौर की बादशाही मसजिद में असाधारण भीड़ है। सब स्थान खचाखच भरा है। तिल धरने को स्थान नहीं। और सब से विचित्र बात यह है कि मुसलमानों से भिन्न मतवाले लोग भी एक भारी संख्या में सम्मिलित हैं। समय के रंग हैं। कोई दिन था कि मुसलमानों से भिन्न लोग मसजिद में प्रविष्ट न हो सकता था और आज ऐसा है कि मसजिद में अन्य धर्मावलंबी न केवल विद्यमान हैं प्रत्युत कार्यवाही में बड़ी तत्परता से भाग ले रहे हैं। आज लोगों के चेहरों से स्पष्ट प्रगट होता है कि उनके चित्त में शान्ति नहीं है। परन्तु नगर के लोग अब निर्णय करना चाहते हैं कि अब क्या किया जाय। हिन्दू और मुसलमानों का ख़ुदा के घर में इकट्ठा होना इस बात की प्रबल साक्षी है कि ये गंगा और यमुना जो देर से अलग अलग बहकर अपने आपको विनष्ट कर रही थीं आज उनका संगम हो गया है, और हुआ भी कहां, ख़ुदा के घर में, बैतुल्लाह में जहां की हुई प्रतिज्ञा तोड़ना एक अक्षम्य पाप है। प्रभावशाली वक्तृताएं हुईं। लोगों के दिल हिल गए, सर्वत्र मूकता का राज्य छा गया। लोगों को शान्त रहने की प्रेरणा की गई। शान्तिमय असहयोग का कार्य-क्रम बड़ी सरलता और स्पष्टता से लोगों को समझा दिया गया। लोगों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार दृढ़ रहने का वचन दिया। और कुछ आवश्यक बातों के निर्णय के बाद जलसा समाप्त हुआ।

५

लोग मसजिद से वापिस लौट रहे हैं। मनुष्यों का इतना संघट्ट है कि प्रतीत होता है कि मानों कोई समुद्र ही उमड़ पड़ा है। विविध प्रकार की बातें हो रही हैं। कोई तो दुख से हाथ मल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहा है कि हे भगवान् हमारा देश कितना उजाड़ हो गया है। हमारा राज्य, ताज उजड़ गया है और हम द्वार द्वार के भिखारी बन गये हैं। अभिप्राय यह कि लोग अपने विचारों में मग्न अपनी बुद्धि के अनुसार भिन्न भिन्न उपाय सोचते हुए और एक दूसरे के साथ विचारों का परिवर्तन करते हुए चले जा रहे हैं कि हीरामंडी के चौक में पहुंच कर उन्होंने सरकार की पुलिस तथा सेना देखी। लोग समझ गये कि मामला क्या है। यह संघट्ट जो मसजिद से लौट रहा है, न इसके पास कोई हथियार है न लाठी, केवल वाणी के बल पर ही सब ऐंठ रहे हैं। पुलिस वालों ने रोका और दुःशब्दों से इस भीड़ का स्वागत किया। लोगों को तितर बितर होने की आज्ञा दी। अभी बातचीत ही हो रही थी कि यकायक गोली की आवाज़ आई।

लाला ख़ुशीराम एक ख़ूबसूरत युवक है। कालिज में शिक्षा पाता है। हृदय में देश के लिये कष्ट और छाती में जाति के लिये प्यार अनुभव करता है। किस प्रकार स्नेह और साहस से देश लिये बलिदान होने की अभिलाषा है! देशरूपी दीपक की ज्वाला पर पतङ्ग की तरह मर मिटने की कितनी प्रबल इच्छा है! देश विषयक बातों में सम्प्रीति है। अपने देश को उन्नत करने की आकांक्षा है। कितनी प्रसन्नता की बात है कि सैकड़ों बरसों की दासता के बाद भी हमारे नवयुवक अपने देश के लिये जीवन और धन न्यौछावर करने के लिये उद्यत दिखाई देते हैं! अपने सारे भोग विलास को त्याग कर मातृभूमि के लिये आग में कूदने के लिये तय्यार हैं। उन्हें न कोई वस्तु डरा सकती है और न कोई लालच उनके धर्म को बिगाड़ सकता है। ख़ुशीराम भी इसी भीड़ के साथ चले आ रहे हैं। सरकारी समुदाय ने जब अकारण प्रभाव दिखाया तो उन्होंने उनको समझाया कि भाई हम अपनी राह चल रहे हैं तुम्हारी क्या हानि कर रहे हैं। तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो और हमें निष्कारण तंग न करो। हमको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमारी दशापर छोड़ो और हमको व्यर्थ न छेड़ो। परन्तु शासनाधिकार के मद में चूर, रोब दाब के पक्षपाती, न्याय और सभ्यता को कब दृष्टि में लाते है ? एकदम गोली चलने का हुक्म दे दिया। खुशीराम की छाती में एक गोली। लगी। पर बाहरे बहादुर खुशीराम, क्या मजाल कि वह एक इंच भी वहां से सरक जाय। अत्यचारी ने दूसरी गोली चलाई और खुशीराम ने उसे भी खुशी से सहा। सच्चे अनुरागी की तरह जिह्वा पर हायतक लाना उसने अनुचित समझा। दिल ही दिल में सोचा कि यह गोलियां नहीं तमगे हैं जो मातृभूमि की सेवा के बदले में प्राप्त हो रहे हैं, और उसपर प्रसन्नता यह है कि यह उपहार शत्रुकी ओरसे प्राप्त हो रहा है। इसलिये इसका मूल्य और भी अधिकतर है। घातक ने फिर गोली चलाई और खुशीराम ने उसका भी स्वागत किया। आगे होकर उसको पृथ्वी पर गिरने से रोक लिया और हार्दिक मित्रकी तरह उसको भी छातीमें स्थान दिया। अर्थात् न्याय और शान्ति के ठेकेदार सरकार के कर्म्मचारियों के आठ वार एक निहत्थे बेबस आदमी पर हुए। रक्तकी धारा बह निकली। शरीर छलनी हो गया। किन्तु आत्मा की शक्ति में क्या मजाल है कि ज़रासा अन्तर पड़े। साहस से खुशीराम खड़ा रहा। अन्तिम वार हुआ और अन्त में शरीर हार गया। आत्मा ने ऐसे शरीर को अयोग्य समझ कर फेंक दिया और ख़ुशीराम की वीर आत्मा भारतवर्ष की पवित्र भूमि से रवाना हो गई। ख़ुशीराम गिर पड़ा, सारे शरीर में से खून चल रहा है, स्थान स्थान में गोलियों के छिद्र हैं, सांस बन्द हो गया है किन्तु चेहरेपर वही तेज है, चमक दमक है। सच है शहीदों के शरीर अपनी शान मृत्यु के बाद भी नहीं छोड़ते। इतना सौभाग्य कि देश के लिए शरीर काम आए, जाति के लिये यह शरीर उपयुक्त हो-इससे ज्यादा अभिमान की और क्या बात हो सकती है ? ख़ुशीराम का चेहरा इस ख़ुशी से प्रदीप्त है चूंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया है। देश और जाति पर न्योछावर होकर सदा के लिये जीवन प्राप्त कर लिया है। इस प्रकार वीरता से ६ गोलियों को सहन करके अत्याचारियों की जड़ें नंगी कर दी हैं। अंग्रेज़ों के न्याय और शान्ति के ढोल का पोल खोल दिया है। भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराने में अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया है।

७

खुशीराम के पृथ्वी पर गिरते हुए दर्शकों पर एक वज्रपात सा हुआ। सब अवाक् हो गए। इतना बहादुर वीर, इतना साहसी पुरुष, इतने हौसलेवाला व्यक्ति, इतना निर्भय मनुष्य सौ जान से इसपर न्योछावर हो जाइये। लोगोंने तुरन्त अर्थी तय्यार की। आगे आगे शहीद की अर्थी थी और सहस्रों मनुष्य पीछे चले आ रहे हैं। वन्देमातरम् और खुशीराम के जय के जयकारों से आकाश गूंज रहा है। भारतवर्ष के सिर आज अभिमान से ऊंचे हैं। नित्य के अपमान से दुःखी पञ्जाबी आज उचित अभिमान कर सकते हैं। खुशीरामने पंजाबियों की लाज रख ली। खुशीराम ने सिद्ध कर दिया कि राजपूतों का खून अभीतक हमारी नसों में विद्यमान है। सच है, मारना और मरना तो एक सुगम बात है। यह तो मनुष्य का स्वभाव है किन्तु केवल मरना अधिक साहस का प्रमाण है। भयंकर विपत्ति के समय अपनी जान गोलियों के अर्पण करना किसी किसी माई के लाल का काम है। खुशीराम की मृत्युने आज भारतवर्ष को अमृत पिला दिया है। दासता की कड़ी बेड़ियों को काटने में शस्त्र का काम दिया है। बच्चे, बूढ़े; नौजवान हिंदू मुसलमान सबके दिलों के हौसले बढ़ गए हैं। लोगों ने अर्थी को फूलों से लाद दिया। सच्चे अनुरागी की अर्थी की तरह धूम धाम का कोई हिसाब नहीं। क्या मजाल कि किसी भी स्त्री या पुरुष ने सम्मान के लिए सिर न झुकाया हो वा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

...ल न फेंके हों। पग पग पर लोग अर्थी को रोकते और अत्यन्त सम्मान से उसके आगे सिर झुकाते थे। सबकी जिह्वा पर यही था कि खुशीराम ! तूने वह काम किया है जो तुझ से बहादुर से होना ही सम्भव था। तूने दुनियां में वह नाम पैदा किया है कि जो कभी नहीं मिट सकेगा। इस प्रकार की वीरता की मृत्य से तूने अपने देश को जागृत कर दिया है। मरने को कौन नहीं मरता ? ऐसा कौन जीव है जो मृत्यु के पंजे से बच सकता है ? किन्तु बलिदान जाएं तुम पर कि जिसने मरकर देश और जाति को जीवित कर दिया है। तुम्हारी मृत्यु ने मातृभूमि के कष्टों को दूर करने में बहुत सहायता दी है।

८

अर्थी श्मशान भूमि में पहुंच गई है। सहस्रों आदमी साथ हैं। कोई आंख न थी जो आर्द्र न हो। कोई व्यक्ति न था जो शोकातुर न हो। अन्त में प्यारे खुशीराम को लकड़ियों के फ़र्श पर रख दिया गया। भगवान् की माया अपार है वह जिन्हें छाती से लगाते थे और जिन को बिस्तार की एक सलवट दुःखी कर देती थी आज अपने हाथ से उनको लकड़ी के कुन्दों पर रख रहे हैं। जिन कोमल शरीरों के लिये एक फूलका बोझ भी किसी समय असहनीय होता था आज हम अपने हाथों से उन पर भारी लक्कड़ रख रहे हैं। अभी यह काम हो ही रहा था कि दूसरे चीख़ों की आवाज़ कानमें आ पड़ी। एक वृद्धा माई गिरती पड़ती रोती चिल्लाती वहां पहुंची। यह खुशीराम की मां है। किस तरह विक्षिप्त चली आ रही है ! कितनी घबराई हुई है ! कितनी दुःखी है ! शब्दों में यह शक्ति कहां कि वे उस समय के दुःख को वर्णन कर सकें ? भागती हुई अपने प्यारे पुत्र की लाश के पास पहुंची और भाग कर उसको छाती से लगाया और उसको चुम्बन दे देके जब ज़ोर से चीख मारी तो ऐसा पाषाण हृदय कोई न था जो फूट न पड़ा हो। लोग ज़ार ज़ार रोने लगे यह समय भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रलय का समय है। मां का इकलौता पुत्र उससे सदा के लिये विदा हो रहा है। मां का कोष लुट रहा है। मां को सदा के नाश का सामान हो रहा है। लोगों ने मां को धैर्य बंधाया, समझाया बुझाया लेकिन भला किस तरह शान्ति हो सकती है ? मां ने हठ शुरू किया कि मुझे बेटेके साथ ही जला दो। अपने लाल के चले जाने बाद मैं जी कर क्या करूंगी ? मेरी सारी उमर की कमाई जब इस तरह नष्ट भ्रष्ट हो गई तो अब मैं इस संसार में रह कर क्या सुख उठा सकती हूं ? ऐ अन्यायी शासको ! अपनी बन्दूकें ठीक करो, अपनी तलवारें तेज़ करो। मेरा सर तन से पृथक् कर दो। मेरी भी छाती गोलियों से छेद डालो। मेरे लहू को बहाकर अपनी जड़ें और खोखली कर लो। देर क्या है ? आओ,आओ,शीघ्र आओ। जिस तरह मेरे निरपराध बच्चेको मौत के घाट उतारा है मुझे भी देशके लिये शहीद होने का अवसर दो।

मां ने अपने बेटे को एक बार फिर गले से लगाया और कहा कि यद्यपि तुम्हारी इस असमय मृत्यु ने मुझे नष्ट कर दिया है, मुझे कहीं का नहीं छोड़ा, जो पूंजी थी वह तुम्हें विद्या पढ़ाने में व्यय कर दी है, तुम्हीं तुम मेरी सम्पत्ति थे; अब मैं क्या करूंगी ? मुझे माता कहकर कौन पुकारेगा ? मेरे दुःख में अब मेरी कौन सहायता करेगा ? मेरी कठिनाइयों को कौन दूर करेगा ? खुशीराम तुम क्या गए मेरा राज्य, मेरा सुख, मेरा आराम, मेरा आनन्द, मेरी शान्ति सब तुम साथ ले गए। मुझे दाने दाने के लिये मोहताज कर गए। द्वार द्वार की भिखारन बना गए, परन्तु नहीं ? मैं तुम्हारी मृत्यु पर शोक नहीं करूंगी। तुमने तो आज मेरी गोद की लाज रख ली। तुमने तो आज मेरे दूध का मान बढ़ाया। यद्यपि तुम मुझ से विदा हो गए परन्तु सच बात तो यह है कि मैं आज अपने आप को सपूत वाली समझती हूं। संसार में यदि कुछ दिन और जी जाती तो शायद मुझ को सांसारिक सुख तो अवश्य मिलता परन्तु मेरी आत्मा को शांति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

न मिलती। अब तो मैं संसार की दृष्टि में यद्यपि नष्ट हो गई हूं किन्तु मेरी आत्मा को आज शान्ति हो गई है। मैं आज जीवितों में सम्मिलित हो गई हूं। मेरे बच्चे। तुमने आज मेरा नाम प्रगट कर दिया है। तुम ने आज मेरा मान बढ़ा दिया है।

माई जी ने सब उपस्थित सज्जनों को इस प्रकार सम्बोधन किया:—"भाइयो! मैं आज अपने लड़के को आग के लिये अर्पण कर रही हूं। अन्यायी नौकरशाही ने मेरे निर्दोष पुत्र को मौत का ग्रास बना दिया है परन्तु जिस शूरता और वीरता से मेरे बच्चे ने गोलियों को सहा वह इतिहास में एक जीवित घटना रहेगी। किस सन्तोष और साहस से उसने मौत का स्वागत किया है इस के आप सब लोग साक्षी हैं। किस तरह एक एक वार के बाद उसकी शूर वीरता और साहस बढ़ता जाता था यह आप से छिपा नहीं। मेरे बच्चे के लिए शोक न करो। मेरा बच्चा अपना कर्तव्य समाप्त कर गया है। मेरे बच्चे ने लोगों को एक पाठ पढ़ा दिया है, मेरे बच्चे ने लोगों को बता दिया है कि जाति वा देश के लिए लोग इस तरह आत्मत्याग किया करते हैं। यदि आपको भी बच्चे की शानदार मृत्यु घोर निद्रा से जागृत न कर सकी तो जान लीजिए कि आपकी रगों में आपके बड़ों का ख़ून नहीं रहा।"

"इस जलती हुई चिता के सामने प्रण करो कि नौकरशाही के साथ आप कोई सम्बन्ध नहीं रखेंगे। तब तक चैन नहीं लेंगे जब तक कि भारतनिवासियों को स्वराज्य प्राप्त न हो जाय, जब तक निर्दोष आदमियों का रक्त बहाना बन्द न हो जाए। प्यारे भाइयो सोचो और अपने पुराने समय पर ज़रा दृष्टि डालो। तुम कहां के कहां पहुंच गए हो? राजे महराजों की सन्तान आज किस प्रकार विपत्तियों से मारी हुई द्वार द्वार फिर रही है? अपने ही देश में तुम कितने अपमानित किए जा रहे हो? उठो! कमर बांध लो, पक्का कर लो। न गोलियों से डरो, न सोने चांदी के टुकड़ोंके लालचमें आओ अपने धर्मपर दृढ़ हो जाओ। तब तक दम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

न लो जबतक कि अपने देश में स्वराज्य स्थापित न कर लो। इसी में तुम्हारा जीवन सफल है। इसी में तुम्हारा मान है, इसी में तुम्हारी प्रतिष्ठा है। दासता के जीवन से तो मृत्यु ही कई गुना अच्छी है। ख़ुशीराम ने तुम्हें मार्ग दिखा दिया है। स्वयं मर कर इसी में मोक्ष है, इसी से बेड़ा पार है।

खुशीराम की जगह अब मुट्ठी भर राख शेष रह गई है। ऐ आंखें रखने वाले लोगों! देखो अन्त में मनुष्य का यही परिणाम है। बड़े लाड प्यार से पाली हुई, भोग विलास में फंसी हुई काया का अन्तिम यही परिणाम है। ऐ धर्म बेचने वाले लोगो! देखो इस तन की अन्त में क्या अवस्था होती है। खुशीराम की मृत्यु से शिक्षा लो। वे ही मनुष्य जीवित हैं जो धर्म के लिये मर मिटा करते हैं। डरो, अन्त में काल से डरो। अपने शारीरिक सुख के लिये, धन सम्पत्ति के लिये, धर्म जैसी महामूल्य वस्तु को बेचने वालो! अपने हृदय में विचार कर देखो कि तुम किस रास्ते पर चल रहे हो। तुम अन्त में एक मुट्ठीभर राख हो जाओगे। तुम्हारा कोई नाम तक न लेगा। आओ! हम सब इस शहीद की वीरता को अपने हृदय में स्थान दें और धर्म को सब से उच्च कर्तव्य समझते हुए मातृभूमि पर अपनी जान न्योछावर करने के लिये इस समय उद्यत रहें। यही मौत हमको और हमारे भारतवासियों को सदा के लिये स्वतंत्र करा देगी। आज लाहौर और पंजाब की ईंटों से यह शब्द आ रहा है—धन्य है! सौ बार धन्य है!! ख़ुशीराम! जीवित जागृत खुशीराम! खुशीराम की जय! तुम ने इस शूरता वीरता से मर कर सदैव के लिये जीवन प्राप्त कर लिया है और इस तरह अपनी प्यारी जान को अपने प्यारे देश पर बलिदान करके भारत ... ऊंचा कर दिया है। परमेश्वर तुम्हें स्वर्गधाम दे ... हम तुम्हारा अनुकरण कर सकें।

...थ एम.ए., राजपाल ऐंड संज़, अनारकली लाहौर
...पाल, बसन्त प्रिंटिंग प्रेस, गनपत रोड, लाहौर।

SPS
891.433 S 16 CH
15911
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE